नामधारी नितनेम

गुटका हिंदी

उनवीं वार: ३०००
सम्मत २०७३

मिलण दे प्ते:
१ . प्रबम्धक
गुरदुआरा, स्री भैणी साहिब- [illegible]
लुधिआणा(पम्जाब)
२ . सतिजुग,
गुरदुआरा, स्री भैणी साहिब- [illegible]
लुधिआणा(पम्जाब)
३ . सरब्त नामधारी सूबे अते जथेदार साहिबान।

प्रकाशक:
विशव नामधारी सम्गत
स्री भैणी साहिब-पम्जाब

रहितनामा पातशाही १२

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ लिखतुम राम सिंघ, होर सम्बूह खालसा जी भैणी दा, सम्बूह खालसे जी को स्री वाहिगुरु जी का खालसा स्री वाहिगुरु जी की फते बुलाईी प्रमान करनी जी । होरु रहितनामा सम्बूह सम्गत दे वासते लिखिआ भैणी ते । पिछली रात उठके गड़वा लजाइ कर मदाने होइ औणा । दो वारी गड़वा माजना। मदान बसत्र लाहि के जाना, दातन करनी, फेर इशनानु करना । बाणी पड़नी, जे कम्ठ ना होवे ता कम्ठ कर लैणी । सरब माई बीबी सरब बुढे बाले ने । जपु, जापु, दुहा दे हजारे

कम्ठ करने । रहिरास, आरती सोहिला एतनी ता जरूर ही कम्ठ करनी ते सील सम्तोखु सभ ने रखना । भजनु अठे पहर करना गुरु सचे दा । होरु पराई धी भैण आपणी जानणी । पराइआ हकु गुरु जी ने अगे ही लिख छडिआ है "हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ"। जो कोई भजनु पुछ के ना करुगा उस दा मूह दुही जहानी काला होऊगा। होरु जी किसे ने मंदा फिका नहीं बोलणा। खिमा करनी, बोलु कुबोलु सहि जाणा सभ दा। जो कोई मारे कुछु ता भी खिमा करनी, तुसा दा रछक गुरू है हरि बखत । तुसी बहुत आपणी भलाई छपाउण दी करनी हरि बखत । दुवानु लाउुणा, हर दिन सबदु

कीरतनु करना । जे कर जग करना होवे ता चौका देणा । भाडे कोरे लिआउणे । चौके बिच चरन धोइ के बड़ना । अर होम बी करना । पहले चौका देणा होम दी जगा, लकड़ी होम विच पलाह दी पाउणी जाँ बेरी दी पाउणी । फूक नही मारनी, होम दी अग नू पखी नाल झलणा । पम्ज आदमी होम विच पोथीआँ उतो बाणी पढ़नी चउपई , जपु, जापु, चम्डी चरित्र दूसरा, अकाल उसतत १ छेवाँ आदमी २ अहूतीआँ पावे सतवाँ मगरों नाल ही जल दा छिटा देवे थोड़ा थोड़ा । जो कोई मम्दा करमु करे जारी चोरी ता किसे ही थां दुवानु १. 'चम्डी दी वार' तथा उग्रदम्ती ये बाणियां हवन समय पढ़न का हुकम

स्री सतिगुरू हरी सिंघ जी ने दिया था । २. वह भजन भी करे । विच नही बड़न देणा । जेकर जोराबर होवे ताँ सभना ने एहु अरदास करनी जी एहु आदमी एथे आउण जोगा ई ना रहे । होर जी मेरी मत्त बहुत थोड़ी है तुसी आप ही सभ कुछ समझ लैणा जी। होर जी सभने हथ जोड़ने परमेसर अगे जो हे महाराज ! साडा धरमु बणिआ रहे जी । होर कच्छां रखणीआँ, पउचा पा के पउचा लहुणा । होर जी, किसे दा मंदा करम छपाउणा नही किसे ने । होर जी, किसे ने धी भैण दा पैसा नही लैणा, बटा नही करना । सदा गुरु गुरु जपदे रहिणा । सारे बहीर नू एहु हुकम सुणाइ देणा जो पन्दरा सोला बरस ते

घट कोई ना कुड़ी बिआहे । दारू मास नहीं खाणा पीणा । खौफ रखणा गुरू दा हरि दम ।

ੴ सति नामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुर प्रसादि ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥ सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु

नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अम्दरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगम्तरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए

राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥
साचा साहिबु साचु नाइि भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मम्गहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अम्मटत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥
थापिआ न जाइि कीता न होइि ॥ आपे आपि निरम्जनु सोइि ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइिआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइि ॥ गुरमुखि नादम्‍ गुरमुखि वेदम्‍ गुरमुखि रहिआ

समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खम्डा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चम्गा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु

नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अम्दरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवम्तिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइि न सुझई जि तिसु गुणु कोइि करे ॥७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इम्दु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मम्दु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिमटति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिऐ सतु सम्तोखु गिआनु ॥

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अम्धे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

मन्ने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरम्जनु होइ ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मन्नै सगल भवण की सुधि ॥ मन्नै मुहि

चोटा ना खाइि ॥ मन्नै जम कै साथि न जाइि ॥ अैसा नामु निरम्जनु होइि ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइि ॥१३॥

मन्नै मारगि ठाक न पाइि ॥ मन्नै पति सिउ परगटु जाइि ॥ मन्नै मगु न चलै पम्थु ॥ मन्नै धरम सेती सनबम्धु ॥ अैसा नामु निरम्जनु होइि ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइि ॥ १४॥

मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥ मन्नै परवारै साधारु ॥ मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥ मन्नै नानक भवहि न भिख ॥ अैसा नामु निरम्जनु होइि ॥ जे को मम्नि जाणै मनि कोइि ॥१५॥

पम्च परवाण पम्च परधानु ॥ पम्चे पावहि दरगहि मानु ॥ पम्चे सोहहि दरि राजानु ॥ पम्चा का गुरु एकु

धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु
धरमु दइआ का पूतु ॥ सम्तोखु
थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को
बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि
केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु
॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रम्गा के नाव ॥ सभना
लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा
लिखि जाणै कोइि ॥ लेखा लिखिआ
केता होइि ॥ केता ताणु सुआलिहु
रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते
होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण
कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक
वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरम्कार ॥१६॥

असम्ख जप असम्ख भाउ ॥ असम्ख पूजा असम्ख तप ताउ ॥ असम्ख गरम्थ मुखि वेद पाठ ॥ असम्ख जोग मनि रहहि उदास ॥ असम्ख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असम्ख सती असम्ख दातार ॥ असम्ख सूर मुह भख सार ॥ असम्ख मोनि लिव लाइि तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरम्कार ॥१७॥

असम्ख मूरख अम्ध घोर ॥ असम्ख चोर हरामखोर ॥ असम्ख अमर करि जाहि जोर ॥ असम्ख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असम्ख पापी पापु करि जाहि ॥ असम्ख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असम्ख मलेछ मलु भखि

खाहि ॥ असम्ख निम्दक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरम्कार ॥ १८॥

असम्ख नाव असम्ख थाव ॥ अगम्म अगम्म असम्ख लोअ ॥ असम्ख कहहि सिरि भारु होइि ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि सम्जोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू

सदा सलामति निरम्कार ॥१६॥
भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै सम्गि ॥ ओहु धोपै नावै कै रम्गि ॥ पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥
तीरथु तपु दइिआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मम्निआ मनि कीता भाउ ॥ अम्तरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइि ॥ विणु गुण कीते भगति न होइि ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु

सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पम्डती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद

कहनि इकि वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ २२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुन्दि न जाणीअहि ॥ समुन्द साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अम्तु न सिफती कहणि न अम्तु ॥ अम्तु न करणै देणि न अम्तु ॥ अम्तु न वेखणि सुणणि न अम्तु ॥ अम्तु न जापै किआ मनि मम्तु ॥ अम्तु न जापै कीता आकारु ॥ अम्तु न जापै पारावारु ॥ अम्त कारणि केते

बिललाहि ॥ ता के अम्त न पाए जाहि ॥ एहु अम्तु न जाणै कोइि ॥ बहुता कहीअै बहुता होइि ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइि ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइि ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइि ॥ वडा दाता तिलु न तमाइि ॥ केते मम्गहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बम्दि खलासी भाणै होइि ॥ होरु आखि न सकै कोइि ॥

जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भम्डार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि

इिम्द् ॥ आखहि गोपी तै गोविम्द् ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि
दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि
नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि
आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि
उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ॥
ता आखि न सकहि केई केइि ॥
जेवडु भावै तेवडु होइि ॥ नानक जाणै
साचा सोइि ॥ जे को आखै
बोलुविगाड़ु ॥ ता लिखीऔ सिरि
गावारा गावारु ॥२६॥
सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि
सरब समाले ॥ वाजे नाद् अनेक
असम्खा केते वावणहारे ॥ केते राग
परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसम्तरु

गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इम्द इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अम्दरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती सम्तोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पम्डित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइिआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खम्ड मम्डल वरभम्डा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि

से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि

अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥
भुगति गिआनु दइिआ भम्डारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ सम्जोगु विजोगु दुइि कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२६॥
एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इिकु सम्सारी इिकु भम्डारी इिकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥
आसणु लोइि लोइि भम्डार ॥ जो

किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

इकि दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै

सम्सारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइि ॥ नानक उतमु नीचु न कोइि ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रम्ग ॥ तिन के नाम अनेक अन्नत ॥ करमी करमी होइि वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पम्च परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइि ॥ नानक गइिआ जापै जाइि ॥३४॥

धरम खम्ड का एहो धरमु ॥ गिआन खम्ड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसम्तर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रम्ग के

वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इन्द चन्द सूर केते केते मन्डल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुन्द ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिन्द ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अन्तु न अन्तु ॥३५॥

गिआन खन्ड महि गिआनु परचन्डु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनन्दु ॥ सरम खन्ड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

करम खन्ड की बाणी जोरु ॥ तिथै

होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अन्नदु सचा मनि सोइि ॥ सच खम्डि वसै निरम्कारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खम्ड मम्डल वरभम्ड ॥ जे को कथै त अम्त न अम्त ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ

खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अम्मट्तु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चम्गिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥
मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चातृक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै साँति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥ हउ

घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि सम्तु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥१॥८॥

धनासरी महला १

घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभम् गुर प्रसादि ॥ जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु

सेवीऐ अम्रिति छडाए सोइि ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइि ॥२॥ दइिआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ सरबम्र साचा एकु है दूजा नाही कोइि ॥ ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहाँ ॥ दूजा नाही कोइि जिसु आगै पिआरे जाइि कहा ॥१॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचम्उ कोइि ॥ नानकु ता का दासु है बिम्द बिम्द चुख चुख होइि ॥४॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिम्द बिम्द चुख चुख होइि ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥

तिलंग महला १ घरु ३

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ इिहु तनु

माइिआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रम्गाए ॥ मेरै कम्त न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥ ह्मउ कुरबानै जाउ मिहरवाना ह्मउ कुरबानै जाउ ॥ ह्मउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै ह्मउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ काइिआ रम्ङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रम्ङण वाला जे रम्ङै साहिबु ऐसा रम्गु न डीठ ॥२॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कम्तु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥ आपे साजे आपे रम्गे आपे नदरि करेइि ॥ नानक कामणि कम्तै भावै आपे ही रावेइि ॥४॥१॥३॥

तिलंग मः १ ॥

इिआनड़ीए मानड़ा काइि करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रम्गो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कम्मलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ इिआणी बाली किआ करे जा धन कम्त न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अह्मकार की माती माइिआ माहि समाणी ॥ इिनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इिआणी ॥२॥ जाइि पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु

चुकाईऐ ॥ जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कम्त पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसे रम्गि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुम्दरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥

सूही महला १ ॥

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि

दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥ मेरे लाल जीउ तेरा अम्तु न जाणा ॥ तूम् जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूम् आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥ आपे कम्डा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अम्धुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की सम्गति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥६॥

੧ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभम् गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अम्तु न जाणा मेरे साहिब मै अम्धुले किआ चतुराई ॥२॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥ ४॥१॥ बिलावलु महला १ ॥ मनु

मन्दरु तनु वेस कलन्दरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिन्त पराई ॥१॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिन्ता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मन्दिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥ जीअ जन्त सभि सरणि तुम्हारी सरब चिन्त तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चन्गा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जापु ॥

स्री मुख वाक पातिसाही १० ॥

छपै छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥ रूप रम्ग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह ॥ अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोज कहिजै ॥ कोटि इंद्र इंद्राणि साह साहाणि गणिजै ॥ त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेति नेति बन त्रिण कहत ॥ त्व सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति ॥१॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं क्रिपाले ॥ नमसतम्‍ अरूपे ॥ नमसतम्‍ अनूपे ॥२॥ नमसतम्‍ अभेखे ॥ नमसतम्‍

अलेखे ॥ नमसतम अकाए ॥ नमसतम
अजाए ॥३॥ नमसतम अगम्जे ॥
नमसतम अभम्जे ॥ नमसतम अनामे ॥
नमसतम अठामे ॥४॥ नमसतम अकरमं
॥ नमसतम अधरमं ॥ नमसतम अनामं
॥ नमसतम अधामं ॥५॥ नमसतम
अजीते ॥ नमसतम अभीते ॥ नमसतम
अबाहे ॥ नमसतम अढाहे ॥६॥
नमसतम अनीले ॥ नमसतम अनादे ॥
नमसतम अछेदे ॥ नमसतम अगाधे
॥७॥ नमसतम अगम्जे ॥ नमसतम
अभम्जे ॥ नमसतम उदारे ॥ नमसतम
अपारे ॥८॥ नमसतम सु एकै ॥
नमसतम अनेकै ॥ नमसतम अभूते ॥
नमसतम अजूपे ॥९॥ नमसतम न्रिकरमे
॥ नमसतम न्रिभरमे ॥ नमसतम न्रिदेसे
॥ नमसतम न्रिभेसे ॥१०॥ नमसतम

त्रिनामे ॥ नमसतम त्रिकामे ॥ नमसतम
त्रिधाते ॥ नमसतम त्रिघाते ॥११॥
नमसतम त्रिधूते ॥ नमसतम अभूते ॥
नमसतम अलोके ॥ नमसतम असोके
॥१२॥ नमसतम त्रितापे ॥ नमसतम
अथापे ॥ नमसतम त्रिमाने ॥ नमसतम
निधाने ॥१३॥ नमसतम अगाहे ॥
नमसतम अबाहे ॥ नमसतम त्रिबरगे ॥
नमसतम असरगे ॥१४॥ नमसतम
प्रभोगे ॥ नमसतम सु जोगे ॥ नमसतम
अरम्गे ॥ नमसतम अभम्गे ॥१५॥
नमसतम अगम्मे ॥ नमसत्तसतु रम्मे ॥
नमसतम जलास्रे ॥ नमसतम निरास्रे
॥१६॥ नमसतम अजाते ॥ नमसतम
अपाते ॥ नमसतम अमजबे ॥
नमसत्तसतु अजबे ॥१७॥ अदेसम
अदेसे ॥ नमसतम अभेसे ॥ नमसतम

त्रिधामे ॥ नमसतम त्रिबामे ॥१८॥ नमो सरब काले ॥ नमो सरब दिआले ॥ नमो सरब रूपे ॥ नमो सरब भूपे ॥१९॥ नमो सरब खापे ॥ नमो सरब थापे ॥ नमो सरब काले ॥ नमो सरब पाले ॥२०॥ नमसत्तसतु देवै ॥ नमसतम अभेवै ॥ नमसतम अजनमे ॥ नमसतम सु बन मे ॥२१॥ नमो सरब गउने ॥ नमो सरब भउने ॥ नमो सरब रम्गे ॥ नमो सरब भम्गे ॥२२॥ नमो काल काले ॥ नमसत्तसतु दिआले ॥ नमसतम अबरने ॥ नमसतम अमरने ॥२३॥ नमसतम जरारम ॥ नमसतम क्रितारम ॥ नमो सरब धम्धे ॥ नमोसत अबम्धे ॥२४॥ नमसतम न्रिसाके ॥ नमसतम न्रिबाके ॥ नमसतम रहीमे ॥ नमसतम करीमे ॥२५॥ नमसतम

अनम्ते ॥ नमसतम्‍ महम्ते ॥ नमसत्तसतु रागे ॥ नमसतम्‍ सुहागे ॥२६ ॥ नमो सरब सोखं ॥ नमो सरब पोखं ॥ नमो सरब करता ॥ नमो सरब हरता ॥२७॥ नमो जोग जोगे ॥ नमो भोग भोगे ॥ नमो सरब दिआले ॥ नमो सरब पाले ॥२८॥

चाचरी छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू हैं ॥ अभू हैं ॥२९॥ अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥ अनाम हैं ॥ अकाम हैं ॥३०॥ अधे हैं ॥ अभे हैं ॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥३१॥ त्रिमान हैं ॥ निधान हैं ॥ त्रिबरग हैं ॥ असरग हैं ॥३२॥ अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥ अजे हैं ॥ अजादि हैं ॥३३॥ अजनम हैं ॥ अबरन हैं ॥ अभूत हैं ॥ अभरन हैं ॥३४॥ अगम्ज

हैं ॥ अभम्ज हैं ॥ अझूझ हैं ॥ अझंझ हैं ॥३५॥ अमीक हैं ॥ रफ़ीक हैं ॥ अधम्ध हैं ॥ अबम्ध हैं ॥३६॥ न्रिबूझ हैं ॥ असूझ हैं ॥ अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥३७॥ अलाह हैं ॥ अजाह हैं ॥ अनम्त हैं ॥ महम्त हैं ॥३८॥ अलीक हैं ॥ न्रिस्रीक हैं ॥ न्रिलम्भ हैं ॥ असम्भ हैं ॥३९॥ अगम्म हैं ॥ अजम्म हैं ॥ अभूत हैं ॥ अछूत हैं ॥४०॥ अलोक हैं ॥ असोक हैं ॥ अकरम हैं ॥ अभरम हैं ॥४१॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ अबाह हैं ॥ अगाह हैं ॥४२॥ अमान हैं ॥ निधान हैं ॥ अनेक हैं ॥ फिर एक हैं ॥४३॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥
नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥४४॥

नमो काल काले ॥ नमो सरब पाले ॥
नमो सरब गउणे ॥ नमो सरब भउणे
॥४५॥ अनम्गी अनाथे ॥ न्रिसम्गी
प्रमाथे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो मान
माने ॥४६॥ नमो चम्द्र चम्द्रे ॥ नमो
भान भाने ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो
तान ताने ॥४७॥ नमो निरत निरते ॥
नमो नाद नादे ॥ नमो पान पाने ॥
नमो बाद बादे ॥४८॥ अनम्गी अनामे
॥ समसती सरूपे ॥ प्रभम्गी प्रमाथे ॥
समसती बिभूते ॥४९॥ कलम्कम बिना
नेकलम्की सरूपे ॥ नमो राज राजेस्वरम
परम रूपे ॥५०॥ नमो जोग जोगेस्वरम
परम सिधे ॥ नमो राज राजेस्वरम परम
ब्रिधे ॥५१॥ नमो ससत्र पाणे ॥ नमो
असत्र माणे ॥ नमो परम गिआता ॥
नमो लोक माता ॥५२॥ अभेखी

अभरमी अभोगी अभुगते ॥ नमो जोग
जोगेस्वरम परम जुगते ॥५३॥ नमो नित
नाराइणे क्रूर करमे ॥ नमो प्रेत अप्रेत
देवे सु धरमे ॥५४॥ नमो रोग हरता
नमो राग रूपे ॥ नमो साह साहम नमो
भूप भूपे ॥५५॥ नमो दान दाने नमो
मान माने ॥ नमो रोग रोगे नमसतम
सनाने ॥५६॥ नमो मंत्र मंत्रं ॥ नमो
जम्त्र जम्त्रं ॥ नमो इसट इसटे ॥ नमो
तम्त्र तम्त्रं ॥५७॥ सदा सच्चिदानम्द
सरबम प्रणासी ॥ अनूपे अरूपे
समसतुल निवासी ॥५८॥ सदा
सिद्धि दा बुद्धि दा ब्रिद्ध करता ॥
अधो उरध अरधम अघं ओघ हरता
॥५९॥ परम परम परमेस्वरम प्रोछपालम
॥ सदा सरबदा सिद्धि दाता दिआलम
॥६०॥ अछेदी अभेदी अनामं अकामं

॥ समसतोपराजी समसतसतु धामं ॥६१॥

तेरा जोरु ॥ चाचरी छम्द ॥

जले है॰ ॥ थले है॰ ॥ अभीत है॰ ॥ अभे है॰ ॥६२॥ प्रभू है॰ ॥ अजू है॰ ॥ अदेस है॰ ॥ अभेस है॰ ॥६३॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनम्दी सरूपे ॥ नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥६४॥ नमसत्वं त्रिनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे ॥ नमसत्वं अगम्जे ॥ नमसत्वं अभम्जे ॥६५॥ नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥ नमो सरब देसे ॥ नमो सरब भेसे ॥६६॥ नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥ नमो साह साहे ॥ नमो माह माहे ॥६७॥ नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते ॥ नमो रोख

रोखे ॥ नमो सोख सोखे ॥६८॥ नमो सरब रोगे ॥ नमो सरब भोगे ॥ नमो सरब जीतम ॥ नमो सरब भीतम ॥६९॥ नमो सरब गिआनम ॥ नमो परम तानम ॥ नमो सरब मंत्रं ॥ नमो सरब जन्त्रं ॥७०॥ नमो सरब द्रिसम ॥ नमो सरब क्रिसम ॥ नमो सरब रम्गे ॥ त्रिभम्गी अनम्गे ॥७१॥ नमो जीव जीवम ॥ नमो बीज बीजे ॥ अखिज्जे अभिज्जे ॥ समसतम प्रसिज्जे ॥७२॥ क्रिपालम सरूपे ॥ कुकरमं प्रणासी ॥ सदा सरबदा रिधि सिधम निवासी ॥७३॥

चरपट छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

अंम्रित करमे ॥ अंब्रित धरमे ॥ अखल जोगे ॥ अचल भोगे ॥७४॥ अचल राजे ॥ अटल साजे ॥ अखल धरमं ॥ अलख करमं ॥७५॥ सरबम दाता ॥

सरबम गिआता ॥ सरबम भाने ॥ सरबम माने ॥७६॥ सरबम प्राणम ॥ सरबम त्राणम ॥ सरबम भुगता ॥ सरबम जुगता ॥७७॥ सरबम देवम ॥ सरबम भेवम ॥ सरबम काले ॥ सरबम पाले ॥७८॥

रूआल छन्द ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति अजोनि पुरख अपार ॥ सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥ सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल ॥ जत्र तत्र बिराजही अवधूत रूप रसाल ॥७९॥ नाम ठाम न जात जा कर रूप रन्ग न रेख ॥ आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥ देस और न भेस जा कर रूप रेख न राग ॥ जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ

अनुराग ॥८०॥ नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि ॥ सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि ॥ एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥ खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिर एक ॥८१॥ देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब ॥ रूप रम्ग न जाति पाति सु जानई किह जेब ॥ तात मात न जात जा कर जनम मरन बिहीन ॥ चक्र बक्र फिरै चतुर चक मानही पुर तीन ॥८२॥ लोक चउदह के बिखै जग जापही जिह जाप ॥ आदि देव अनादि मूरति थापिओ जिह थापि ॥ परम रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार ॥ सरब बिस्व रचयो सुयम्भव गड़न भम्जनहार ॥८३॥ काल हीन कला

सम्जुगति अकाल पुरख अदेस ॥ धरम धाम सु भरम रहत अभूत अलख अभेस ॥ अंग राग न रम्ग जा कह जाति पाति न नाम ॥ गरब गम्जन दुसट भम्जन मुकति दाइक काम ॥८४॥ आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥ गरब गम्जन सरब भम्जन आदि रूप असूत ॥ अंग हीन अभम्ग अनातम एक पुरख अपार ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ॥८५॥ सरब गम्ता सरब हम्ता सरब ते अनभेख ॥ सरब सासत्र न जानही जिह रूप रम्ग अरू रेख ॥ परम बेद पुराण जा कहि नेति भाखत न्नित ॥ कोटि सिंम्रिति पुरान सासत्र न आवही वहु च्चित॥८६॥

मधुभार छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार॥ आसन अभम्ग ॥ उपमा अनम्ग ॥८७॥ अनभउ प्रकास ॥ निसि दिन अनास ॥ आजानु बाहु ॥ साहान साहु ॥८८॥ राजान राज ॥ भानान भान ॥ देवान देव ॥ उपमा महान ॥८९॥ इंद्रान इंद्र ॥ बालान बाल ॥ रम्कान रम्क ॥ कालान काल ॥९०॥ अनभूत अंग ॥ आभा अभम्ग ॥ गति मिति अपार ॥ गुन गन उदार ॥९१॥ मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै न्रिकाम ॥ अति दुति प्रचम्ड ॥ मिति गति अखंड ॥९२॥ आलिसय करम ॥ आद्रिसय धरम ॥ सरबा भरणाढय ॥ अनडंड बाढय ॥९३॥

चाचरी छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिम्दे ॥ मुकम्दे ॥ उदारे ॥ अपारे

॥९४॥ हरीअं ॥ करीअं ॥ न्रिनामे ॥ अकामे ॥९५॥ भुजम्ग प्रयात छम्द ॥
चत्र चक्र करता ॥ चत्र चक्र हरता ॥ चत्र चक्र दाने ॥ चत्र चक्र जाने ॥९६॥
चत्र चक्र वरती ॥ चत्र चक्र भरती ॥ चत्र चक्र पालै ॥ चत्र चक्र कालै ॥९७॥ चत्र चक्र पासे ॥ चत्र चक्र वासे ॥ चत्र चक्र मानयै ॥ चत्र चक्र दानयै ॥९८॥

चाचरी छम्द ॥

न सत्रै ॥ न मित्रै ॥ न भरमं ॥ न जापु ञ५१ङ भित्रै ॥९९॥ न करमं ॥ न काए ॥ अजनमं ॥ अजाए ॥१००॥ न चित्रै ॥ न मित्रै ॥ परे है · ॥ पवित्रै ॥१०१॥ प्रिथीसै ॥ अदीसै ॥ अदिसै ॥ अक्रिसै ॥१०२॥

भगवती छम्द ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज्ज देसै ॥ कि आभिज्ज भेसै ॥ कि आगम्ज करमै ॥ कि आभम्ज भरमै ॥१०३॥ कि आभिज्ज लोकै ॥ कि आदित सोकै ॥ कि अवधूत बरनै ॥ कि बिभूत्ति करनै ॥१०४॥ कि राजम्‍ प्रभा है · ॥ कि धरमं धुजा है · ॥ कि आसोक बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥१०५॥ कि जगतम्‍ क्रिती है· ॥ कि छत्रं छत्री है· ॥ कि ब्रहमं सरूपै ॥ कि अनभउ अनूपै ॥१०६॥ कि आदि अदेव है· ॥ कि आप अभेव है· ॥ कि चित्रं बिहीनै ॥ कि एकै अधीनै ॥१०७॥ कि रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥ कि पाक बिऐब है· ॥ कि ग़ैबुल ग़ैब है· ॥१०८॥ कि अफ़वुल गुनाह है· ॥ कि साहान साह है· ॥ कि कारन कुनिम्द

है॰ ॥ कि रोज़ी दिहिंद है॰ ॥१०९॥
कि राजक रहीम है॰ ॥ कि करमं
करीम है॰ ॥ कि सरबम्‍ कली है॰ ॥
कि सरबम्‍ दली है॰ ॥११०॥ कि
सरबत्र मानयै ॥ कि सरबत्र दानयै ॥
कि सरबत्र गउनै ॥ कि सरबत्र भउनै
॥१११॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र
भेसै ॥ कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र
साजै ॥११२॥ कि सरबत्र दीनै ॥ कि
सरबत्र लीनै ॥ कि सरबत्र जा हो ॥
कि सरबत्र भा हो ॥११३॥ कि सरबत्र
देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र
कालै ॥ कि सरबत्र पालै ॥११४॥ कि
सरबत्र हम्ता ॥ कि सरबत्र गम्ता ॥
कि सरबत्र भेखी ॥ कि सरब्बत्र पेखी
॥११५॥ कि सरब्बत्र काजै ॥ कि सरब्बत्र
राजै ॥ कि सरब्बत्र सोखै ॥ कि सरब्बत्र

पोखै ॥११६॥ कि सरबत्र त्राणै ॥ कि सरबत्र प्राणै ॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥११७॥ कि सरबत्र मानयै ॥ सदैवम् प्रधानयै ॥ कि सरबत्र जापयै ॥ कि सरबत्र थापयै ॥११८॥ कि सरबत्र भानै ॥ कि सरबत्र मानै ॥ कि सरबत्र इंद्रै ॥ कि सरबत्र चन्द्रै ॥११९॥ कि सरबम् कलीमै ॥ कि परमं फहीमै ॥ कि आकल अलामै ॥ कि साहिब कलामै ॥१२०॥ कि हुसनुल वजू है· ॥ तमामुल रुजू है· ॥ हमेसुल सलामै ॥ सलीखत मुदामै ॥१२१॥ गनीमुल शिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥ बलम्दुल मकानै ॥ जमीनुल जमानै ॥१२२॥ तमीज़ुल तमामै ॥ रुजूअल निधानै ॥ हरीफुल अज़ीमै ॥ रज़ाइक यकीनै ॥१२३॥ अनेकुल

तरम्ग है॰ ॥ अभेद है॰ अभम्ग है॰ ॥ अज़ीज़ल निवाज ह ै ॰ ॥ गनीमुल खिराज है॰ ॥१२४॥ निरुकत सरूप है॰ ॥ त्रि मुकति बिभूति है॰ ॥ प्रभुगति प्रभा है॰ ॥ सु जुगति सुधा है॰ ॥१२५॥ सदैवम्‍ सरूप है॰ ॥ अभेदी अनूप है॰ ॥ समसतोपराज है॰ ॥ सदा सरब साज है॰ ॥१२६॥ समसतुल सलाम है॰ ॥ सदैवल अकाम है॰ ॥ न्रिबाध सरूप है॰ ॥ अगाधि अनूप है॰ ॥१२७॥ ओअं आदि रूपै ॥ अनादि सरूपै ॥ अनम्गी अनामे ॥ त्रिभम्गी त्रिकामे ॥१२८॥ त्रिबरगम्‍ त्रिबाधे ॥ अगम्जे अगाधे ॥ सुभम्‍ सरब भागे ॥ सु सरबानुरागे ॥१२९॥ त्रिभुगत सरूप है॰ ॥ अछिज्ज है॰ अछूत है॰ ॥ कि नरकम्‍ प्रणास है॰

॥ प्रिथीउल प्रवास है॰ ॥१३०॥ निरुकति प्रभा है॰ ॥ सदैवम्‍ सदा है॰ ॥ बिभुगति सरूप है॰ ॥ प्रजुगति अनूप है॰ ॥१३१॥ निरुकति सदा है॰ ॥ बिभुगति प्रभा है॰ ॥ अनुकति सरूप है॰ ॥ प्रजुगति अनूप है॰ ॥१३२॥

चाचरी छम्द ॥

अभम्ग है॰ ॥ अनम्ग है॰ ॥ अभेख है॰ ॥ अलेख है॰ ॥१३३॥ अभरम है॰ ॥ अकरम है॰ ॥ अनादि है॰ ॥ जुगादि है॰ ॥१३४॥ अजै है॰ ॥ अभै है॰ ॥ अभूत है॰ ॥ अधूत है॰ ॥१३५॥ अनास है॰ ॥ उदास हैं ॥ अधम्ध है॰ ॥ अबम्ध है॰ ॥१३६॥ अभगत है॰ ॥ बिरकत है॰ ॥ अनास है॰ ॥ प्रकास है॰ ॥१३७॥ निचिंत है॰ ॥ सुनिम्त

है॰ ॥ अलिक्ख है॰ ॥ अदिक्ख है॰ ॥१३८॥ अलेख है॰ ॥ अभेख है॰ ॥ अढाह है॰ ॥ अगाह है॰ ॥१३९॥ असम्भ है॰ ॥ अगम्भ है॰ ॥ अनील है॰ ॥ अनादि है॰ ॥१४०॥ अनित्त है॰ ॥ सुन्नित है॰ ॥ अजात है॰ ॥ अजादि है॰ ॥१४१॥

चरपट छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबम्‍ हम्ता ॥ सरबम्‍ गम्ता ॥ सरबम्‍ खिआता ॥ सरबम्‍ गिआता ॥१४२॥ सरबम्‍ हरता ॥ सरबम्‍ करता ॥ सरबम्‍ प्राणम्‍ ॥ सरबम्‍ त्राणम्‍ ॥१४३॥ सरबम्‍ करमं ॥ सरबम्‍ धरमं ॥ सरबम्‍ जुगता ॥ सरबं मुकता ॥१४४॥

रसावल छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥ सदैवम्‍ प्रकासे ॥ अनम्गम्‍ सरूपे ॥ अभम्गम्‍ बिभूते

॥१४५॥ प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सरब साथे ॥ अगाध सरूपे ॥ न्रिबाध बिभूते ॥१४६॥ अनम्गी अनामे ॥ त्रिभम्गी त्रिकामे ॥ न्रिभम्गी सरूपे ॥ सरबम्गी अनूपे ॥१४७॥ न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥ न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ॥१४८॥ न्रिसाकम्म सरीक है · ॥ अमितो अमीक है· ॥ सदैवम्म प्रभा है· ॥ अजै है· अजा है· ॥१४९॥

भगवती छम्द ॥ त्वप्रसादि ॥

कि ज़ाहर ज़हूर है· ॥ कि हाज़र हजूर है· ॥ हमेसुल सलाम है· ॥ समसतुल कलाम है· ॥१५०॥ कि साहिब दिमाग़ है· ॥ कि हुसनुल चराग़ है· ॥ कि कामल करीम है· ॥ कि राज़क रहीम है· ॥१५१॥ कि रोज़ी दिहिंद

है॰ ॥ कि राज़क रहिंद है॰ ॥ करीमुल कमाल है॰ ॥ कि हुसनुल जमाल है॰ ॥१५२॥ गनीमुल खिराज है॰ ॥ गरीबुल निवाज़ है॰ ॥ हरीफुल सिकम्न है॰ ॥ हिरासुल फिकम्न है॰ ॥१५३॥ कलम्कम्‍ प्रणास है॰ ॥ समसतुल निवास है॰ ॥ अगम्जुल गनीम है॰ ॥ रज़ाइक रहीम है॰ ॥१५४॥ समसतुल जुबाँ है॰ ॥ कि साहिब किराँ है॰ ॥ कि नरकम्‍ प्रणास है॰ ॥ बहिशतुल निवास है॰ ॥१५५॥ कि सरबुल गवम्न है॰ ॥ हमेसुल रवम्न है॰ ॥ तमामुल तमीज़ है॰ ॥ समसतुल अज़ीज़ है॰ ॥१५६॥ परम्‍ परमइस है॰ ॥ समसतुल अदीस है॰ ॥ अदेसुल अलेख है॰ ॥ हमेसुल अभेख है॰ ॥१५७॥ ज़मीनुल ज़माँ है॰

॥ अमीकुल इमाँ है॰ ॥ करीमुल कमाल है॰ ॥ कि जुरअत जमाल है॰ ॥१५८॥ कि अचलम्‍ प्रकास है॰ ॥ कि अमितो सुबास है॰ ॥ कि अजब सरूप है॰ ॥ कि अमितो बिभूति है॰ ॥१५९॥ कि अमितो पसा है॰ ॥ कि आतम प्रभा है॰ ॥ कि अचलम्‍ अनम्‍ग है॰ ॥ कि अमितो अभम्‍ग है॰ ॥१६०॥

मधुभार छम्‍द ॥ त्वप्रसादि ॥

मुनि मनि प्रनाम ॥ गुन गन मुदाम ॥ अरि बर अगम्‍ज ॥ हरि नर प्रभम्‍ज ॥१६१॥ अन गन प्रनाम ॥ मुनि मनि सलाम ॥ हरि नर अखंड ॥ बर नर अमंड ॥१६२॥ अनुभव अनास ॥ मुनि मनि प्रकास ॥ गुन गन प्रनाम ॥ जल थल मुदाम ॥१६३॥ अनछिज्‍ज अंग ॥ आसन अभम्‍ग ॥ उपमा अपार ॥ गति

मिति उदार ॥१६४॥ जल थल अमंड ॥ दिस विस अभम्ड ॥ जल थल महम्त ॥ दिस विस बिअंत ॥१६५॥ अनुभव अनास ॥ ध्रित धर धुरास ॥ आजानु बाहु ॥ एकै सदाहु ॥१६६॥ ओअंकार आदि ॥ कथनी अनादि ॥ खल खंड खिआल ॥ गुर बर अकाल ॥१६७॥ घर घर प्रनाम ॥ चित्त चरन नाम ॥ अनछिज्ज गात ॥ आजिज न बात ॥१६८॥ अनझंझ गात ॥ अनरम्ज बात ॥ अनटुट भम्डार ॥ अनठट अपार॥१६९॥ आडीठ धरम ॥ अति ढीठ करम ॥ अनब्रण अनम्त ॥ दाता महम्त ॥१७०॥ हरि बोलमना छम्द ॥ त्व प्रसादि ॥ करुणालय है· ॥ अरि घालय है· ॥ खल खंडन है· ॥ महि मंडन है · ॥१७१॥ जगतेस्वर है · ॥

परमेस्वर है · ॥ कलि कारण है· ॥ सरबुबारण है · ॥१७२॥ ध्रित धारन है· ॥ जग कारन है · ॥ मन मानय है · ॥ जग जानय है· ॥१७३॥ सरबम्‍ भर है· ॥ सरबम्‍ कर है· ॥ सरबुपासय है· ॥ सरब नासय है· ॥१७४॥ करुणाकर है· ॥ बिस्वंभर है· ॥ सरबेस्वर है· ॥ जगतेस्वर है· ॥१७५॥ ब्रहमंडस है· ॥ खल खंडस है· ॥ पर ते पर है· ॥ करुणाकर है· ॥१७६॥ अजपा जप है· ॥ अथपा थप है· ॥ अक्रिताक्रित है· ॥ अंम्रितांम्रित है·॥१७७॥ अम्रितांम्रित है· ॥ करुणाक्रित है· ॥ अक्रिताक्रित है· ॥ धरणी ध्रित है· ॥१७८॥ अमितेस्वर है· ॥ परमेस्वर है· ॥ अक्रिताक्रित है· ॥ अम्रितांम्रित है· ॥१७९॥

अजबाक्रित है· ॥ अम्रिताम्रित है· ॥ नर नाइक है· ॥ खल घाइक है · ॥१८०॥ बिस्वंभर है · ॥ करुणालय है· ॥ न्रिप नाइक है· ॥ सरब पाइक है· ॥१८१॥ भव भम्जन है· ॥ अरि गम्जन है· ॥ रिपु तापन है· ॥ जप जापन है· ॥१८२॥ अकलम्‍ क्रित है· ॥ सरबा क्रित है· ॥ करता कर है· ॥ हरता हरि है· ॥१८३॥ परमातम है· ॥ सरबातम है· ॥ आतम बस है· ॥ जस के जस है· ॥१८४॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

नमो सूरज सूरजे नमो चम्द्र चम्द्रे ॥ नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥ नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥ नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे ॥१८५॥ नमो राजसम्‍ तामसम्‍ साँत रूपे ॥ नमो परम

तत्तम अतत्तम सरूपे ॥ नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने ॥ नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन धिआने ॥१८६॥ नमो जुद्ध जुद्धे नमो गिआन गिआने ॥ नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥ नमो कलह करता नमो सांति रूपे ॥ नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥ कलम्कार रूपे अलम्कार अलम्के ॥ नमो आस आसे नमो बाँक बम्के ॥ अभम्गी सरूपे अनम्गी अनामे ॥ त्रिभम्गी त्रिकाले अनम्गी अकामे ॥१८८॥

एक अछरी छम्द ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥१८९॥ अभू ॥ अजू ॥ अनास ॥ अकास ॥१९०॥ अगम्ज ॥ अभम्ज ॥ अलख ॥ अभख ॥१९१॥ अकाल ॥ दिआल ॥

अलेख ॥ अभेख ॥१६२॥ अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥ अढाह ॥१६३॥ अनाथे ॥ प्रमाथे ॥ अजोनी ॥ अमोनी ॥१६४॥ न रागे ॥ न रम्गे ॥ न रूपे ॥ न रेखे ॥१६५॥ अकरमं ॥ अभरमं ॥ अगम्जे ॥ अलेखे ॥१६६॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ॥ अगम्जुल अनामे समसतुल निवासे ॥ न्रिकामं बिभूते समसतुल सरूपे ॥ कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥१६७॥ सदा सच्चिदानम्द सत्रं प्रणासी ॥ करीमुल कुनिम्दा समसतुल निवासी ॥ अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥ हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ॥१६८॥ चत्र चक्र जापु ञ६४ङ वरती चत्र चक्र भुगते ॥ सुयम्भव सुभम्

सरबदा सरब जुगते ॥ दुकालम्
प्रणासी दिआलम् सरूपे ॥ सदा अंग
सम्गे अभम्गम् बिभूते ॥१६६॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रामकली पातसाही १०

रे मन ऐसो करि सन्निआसा ॥ बन से सदन सबै करि समझहु मनही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ जत की जटा जोग को मजनु नेम के नखन बढाओ ॥ गयान गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूति लगाओ ॥१॥ अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ॥ सील सन्तोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो त्रिगुण अतीत ॥२॥ काम क्रोध हन्कार लोभ हठ मोह न मन मो लयावै ॥ तब ही आतम तत को दरसै परम पुरख कह पावै ॥३॥१॥

रामकली पातसाही १०

रे मन इह बिधि जोगु कमाओ ॥ सिङी साच अकपट कन्ठला धिआन

बिभूति चड़ाओ ॥१॥ रहाउ ॥ ताती गहु आतम बसि कर की भिच्छा नाम अधारम्‍ ॥ बाजै परम तार ततु हरि को उपजै राग रसारम्‍ ॥ उघटै तान तरम्‍ग रम्‍गि अति गयान गीत बंधानं ॥ चकि चकि रहै देव दानव मुनि छकि छकि बयोम बिवानं ॥२॥ आतम उपदेस भेसु सम्‍जम को जापु सु अजपा जापे ॥ सदा रहै कम्‍चन सी काया काल न कबहूं बिआपे ॥३॥२॥

रामकली पातसाही १०

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥ सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं सुचित ह्वै जागो ॥१॥ रहाउ ॥ औरन कहा उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध न लागो ॥ सिंचत कहा परे बिखयन कह कबहू बिखै रस तिआगो ॥१॥ केवल

करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥ सम्ग्रहु करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥२॥ जा ते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ॥ जौ सुख चाहो सदा सभन को तौ हरि के रस पागौ ॥३॥

सोरठि पातसाही १०

प्रभ जू तो कह लाज हमारी ॥ नील कम्ठ नरहरि नाराइण नील बसन बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥ परम पुरख परमेसुर सुआमी पावन पउन अहारी ॥ माधव महाजोति मधु मरदन मान मुकम्द मुरारी ॥१॥ न्रिबिकार निरजुर निंदा बिनु निरबिख नरक निवारी ॥ क्रिपा सिंधु काल त्रिदरसी कुक्रित प्रनासन कारी ॥२॥ धनुरपान ध्रितमान धराधर अन बिकार असिधारी ॥ हौ

मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ॥३॥४॥

राग कलिआण पातसाही १०

बिन करतार न किरतम मानो ॥ आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसुर जानो ॥१॥ रहाउ ॥ कहा भयो जो आनि जगत मै दसक असुर हरि घाए ॥ अधिक परपंच दिखाइ सभन कह आपहि ब्रहमु कहाए ॥१॥ भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु सो किम जाति गिनायो ॥ ता ते सरब काल के असि को घाइ बचाइ न आयो ॥२॥ कैसे तोहि तारि है सुनि जड़ आप डुबिओ भव सागर ॥ छुटिहो काल फास ते तबही गहो सरनि जगतागर ॥३॥५॥

खिआल पातसाही १०

मित्र पिआरे नू हाल फकीराँ दा

कहिणा ॥ तुधु बिनु रोग रजाईआँ दा ओढण नाग निवासाँ दे रहिणा ॥ सूल सुराही खंजरु पिआला बिंगु कसाईआँ दा सहिणा ॥ यारड़े दा सानू स्रथरु चम्गा भठ खेड़िआँ दा रहिणा ॥१॥६॥

तिलम्ग काफी पातसाही १०

केवल कालइ करतार ॥ आदि अंति अनंति मूरति गड़न भंजन हार ॥१॥ रहाउ ॥ निंद उसतति जउन के सम सत्रु मित्र न कोइ ॥ कउन बाट परी तिसै पथ सारथी रथ होइ ॥१॥ तात मात न जात जा कर पुत्र पौत्र मुकम्द ॥ कउन काजि कहाहिंगे जग आनि देवकि नंद ॥२॥ देव दैत दिसा विसा जिह कीन सरब पसारि ॥ कउन उपमा तउन को मुख लेत नामु मुरारि ॥३॥७॥

रागु बिलावलु पातसाही १०

सो किम मानस रूप कहाए॥ सिधय समाधि साध करि हारे किउ हू न देखन पाए ॥१॥ रहाउ ॥ नारद बिआस परासर ध्रूअ से धिआवत धिआन लगाए ॥ बेद पुरान हारि हठ छाडिओ तदपि धयान न आए ॥२॥ दानव देव पिसाच प्रेत ते नेतहि नेति कहाए ॥ सूछम ते सूछम करि चीने ब्रिधन ब्रिध बताए ॥३॥ भूमि अकास पताल सबै सजि एक अनेक सदाए ॥ सो नर काल फाँस ते बाचे जो हरि सरण सिधाए ॥४॥८॥ देवगंधारी पातसाही १० इक बिन दूसर सो न चिनार ॥ भंजन गड़न समर्थ सदा प्रभु जानत है करतार ॥१॥ रहाउ ॥ कहा भयो जो अति हित चित करि

बहु बिधि सिला पुजाई ॥ पान थके पाहन कह परसत कछु करि सिद्धि न आई ॥१॥ अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछू न खै है ॥ ता मै कहा सिधय है रे जड़ तोहि कछू बर दैहै ॥२॥ जौ जीअ होत तौ देत कछु तुहि मन बच करम बिचार ॥ केवल एक सरणि सुआमी बिन यौ न कतहि उधार ॥३॥६॥

देव गंधारी पातसाही १०

बिन हरि नाम न बाचन पैहै ॥ चौदह लोक जाहि बसि कीने ता ते कहा पलै है ॥१॥ रहाउ ॥ राम रहीम उबार न साकि है जा करि नामु रटै है ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबै है ॥१॥ बेद पुरान कुरान सबै मत जा कर नेति कहै है ॥ इंदर

फनिंदर मुनिंदर कलप बहु धयावत धिआन न ऐहै ॥२॥ जा कह रूप रम्ग नहि जनियत सो किम सयाम कहै है ॥ छुटि हो काल जाल ते तब ही ताहि चरन लपटै है ॥३॥१०॥

सलोकु मः १ ॥

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥

बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अन्तु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पड़िआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

सो दरु रागु आसा महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंख्खा केते तेरे वावणहारे ॥

केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसम्तरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इम्द्र इम्द्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अम्दरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती सम्तोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पम्डित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइिआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि

तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खम्ड मम्डल ब्रहमम्डा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रम्गी रम्गी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइि ॥ केवडु वडा डीठा होइि ॥ कीमति पाइि न कहिआ जाइि ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइि ॥१॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गम्भीरा गुणी गहीरा ॥ कोइि न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ सभि सत सभि तप सभि चम्गिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ आखण वाला किआ वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भम्डारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा

॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥३॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति

॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥

रागु गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइिआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै तटपतासहि मिलि सम्गति गुण परगासि ॥२॥ जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइिआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि सम्गति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर सम्गति

पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धन्नु सतसम्गति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥

रागु गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जम्त उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सतसम्गति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु सम्बाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै

मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अम्तु न पारावरिआ ॥४॥५॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरम्जनु हरि पुरखु निरम्जनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूम जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु सम्तहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जम्त विचारा ॥१॥ तूम घट घट अम्तरि सरब निरम्तरि जी हरि एको पुरखु समाणा

॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूम् आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूम् पारब्रहमु बेअम्तु बेअम्तु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ तेरी

भगति तेरी भगति भम्डार जी भरे बिअम्त बेअम्ता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अन्नता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअम्ता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिमटति सासत जी करि किरिआ खटु करम करम्ता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवम्ता ॥४॥ तूम आदि पुरखु अपरम्परु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूम जुगु जुगु एको सदा सदा तूम एको जी तूम निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूम आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे सटसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु

नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥

आसा महला ४ ॥

तूम्ह करता सचिआरु मैडा साँई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूम्ह देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूम्ह सभनी धिआइआ ॥ जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ तूम्ह दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जम्त सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ सम्जोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि

सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पम्कजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिम्द मिलण की इिह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसम्गति भजु केवल नाम ॥१॥ सरम्जामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु बटथा जात रम्गि माइिआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु सम्जमु धरमु न कमाइिआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइिआ ॥ कहु नानक हम नीच करम्मा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

ੴ वाहिगुरू जी की फते ॥

पातसाही १० ॥ चौपई ॥

पुनि राछस का काटा सीसा ॥ स्री असिकेत जगत के ई सा ॥ पुहपन ब्रिसटि गगन ते भई ॥ सभहिन आन बधाई दई ॥१॥ धंनय धंनय लोगन

के राजा ॥ दुसटन दाह गरीब निवाजा ॥ अखल भवन के सिरजनहारे ॥ दास जानि मुहि लेहु उबारे ॥२॥

कबियो बाच बेनती ॥ चौपई ॥ हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥ पूरन होइ चित्त की इच्छा ॥ तव चरनन मन रहै हमारा ॥ अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥ हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥ आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥ सुखी वसै मोरो परिवारा ॥ सेवक सिख सभै करतारा ॥२॥ मो रच्छा निज कर दै करीऐ ॥ सभ बैरिन को आज सम्घरीऐ ॥ पूरन होइ हमारी आसा ॥ तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥ तुमहि छाडि कोई अवर न धयाऊं ॥ जो बर चाहों सु तुम ते पाऊं ॥ सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि ॥ चुनि चुनि सत्रु

हमारे मारीअहि ॥४॥ आप हाथ दै मुझै उबरीऐ ॥ मरण काल का त्रास निवरीऐ ॥ हूजो सदा हमारे पच्छा ॥ स्री असिधुज जू करीअहु रच्छा ॥५॥ राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥ साहिब सम्त सहाइ पिआरे ॥ दीनबंधु दुसटन के हम्ता ॥ तुम हो पुरी चतरदस कम्ता ॥६॥ काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥ काल पाइ सिवजू अवतरा ॥ काल पाइ करि बिसनु प्रकासा ॥ सकल काल का कीआ तमासा ॥७॥ जवन काल जोगी सिव कीओ ॥ बेदराज ब्रहमा जू थीओ ॥ जवन काल सभ लोक सवारा ॥ नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥ जवन काल सभ जगत बनायो ॥ देव दैत जछन उपजायो ॥ आदि अंति एकै अवतारा ॥ सोई गुरू

समझीअहु हमारा ॥९॥ नमसकार तिस ही को हमारी ॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥ सिवकन को सिव गुन सुख दीए ॥ सत्रुन को पल मो बध कीओ ॥१०॥ घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥ चीटी ते कुंचर असथूला ॥ सभ पर क्रिपा द्रिसटि करि फूला ॥११॥ सम्तन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधुन के सुखी ॥ एक एक की पीर पछानै ॥ घट घट के पट पट की जानै ॥१२॥ जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तब देह अपारा ॥ जब आकरख करत हो कबहूं ॥ तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥ जेते बदन स्रिसटि सभ धारै ॥ आपु आपनी बूझ उचारै ॥ तुम सभही ते रहत निरालम ॥

जानत बेद भेद अरु आलम ॥१४॥ निरम्कार न्रिबिकार निरलम्भ ॥ आदि अनील अनादि असम्भ ॥ ता का मूड़ उचारत भेदा ॥ जा का भेव न पावत बेदा ॥१५॥ ता को कर पाहन अनुमानत ॥ महा मूड़ कछु भेद न जानत ॥ महादेव को कहत सदा सिव ॥ निरम्कार का चीनत नहि भिव ॥१६॥ आप आपनी बुधि है जेती ॥ बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ॥ तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम सम्सारा ॥१७॥ एकै रूप अनूप सरूपा ॥ रम्क भयो राव कही भूपा ॥ अंडज जेरज सेतज कीनी ॥ उतभुज खानि बहुरि रचि दीनी ॥१८॥ कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमटि भयो सम्कर इकैठा ॥ सगरी

स्रिसटि दिखाइ अचम्भव ॥ आदि जुगादि सरूप सुयंभव ॥१६॥ अब रच्छा मेरी तुम करो ॥ सिक्खय उबारि असिक्खय सम्घरो ॥ दुसट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ करो रण घाता ॥२०॥ जे असिधुज त्व सरनी परे ॥ तिन के दुसट दुखित ह्वै मरे ॥ पुरख जवन पग परै तुहारे ॥ तिन के तुम सम्कट सभ टारे ॥२१॥ जो कलि को इक बार धिऐ है ॥ ता के काल निकट नही ऐ है ॥ रच्छा होइ ताहि सभ काला ॥ दुसट अरिसट टरे ततकाला ॥२२॥ क्रिपा द्रिसटि तन जाहि निहरिहो ॥ ता के ताप तनिक महि हरिहो ॥ रिद्धि सिद्धि घर मो सभ होई ॥ दुसट छाह छ्वै सकै न कोई ॥२३॥ एक बार

जिन तुमै सम्भारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुसट दोख ते रहा ॥२४॥ खड़गकेतु मै सरणि तिहारी ॥ आपु हाथ दै लेहु उबारी ॥ सरब ठउर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥ क्रिपा करी हम पर जग माता ॥ ग्रंथ करा पूरन सुभ राता ॥ किलबिख सकल देह को हरता ॥ दुसट दोखीअन को छै करता ॥२६॥ स्री असिधुज जब भए दइआला ॥ पूरन करा ग्रंथ ततकाला ॥ मन बाछत फल पावै सोई ॥ दूख न तिसै बिआपत कोई ॥२७॥

अड़िल्ल ॥

सुनै गुंग जो याहि सु रसना पावई ॥
सुनै मूड़ चित लाइ चतुरता आवई ॥

दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै ॥ हो जो या की एक बार चौपई को कहै ॥२८॥

चौपई ॥

सम्बत सतरह सहस भणिज्जै ॥ अरध सहस फुनि तीन कहिज्जै ॥ भादव सुदी असटमी रवि वारा ॥ तीर सत्त द्रव ग्रंथ सुधारा ॥२९॥ इति स्री चरित्रो पखयाने त्रिया चरित्रे भूप मंत्री सम्बादे चार सै चार चरित्र समापत मसतु सुभ मसतु ॥३॥

दोहरा ॥

दास जान करि दास पर कीजै क्रिपा अपार ॥ आप हाथ दै राख मुहि मन क्रम बचन बिचार ॥१॥

चौपई ॥

मै न गनेसहि प्रिथम मनाऊं ॥ किसन

बिसन कबहूं नहि धिआऊं ॥ कान सुने पहिचान न तिन सो· ॥ लिवलागी मोरी पग इन सो· ॥२॥ महाकाल रखवार हमारो ॥ महा लोह मै किंकर थारो ॥ अपना जान करो रखवार ॥ बाहि गहे की लाज बिचार ॥३॥ अपना जान मुझै प्रतिपरीऐ ॥ चुनि चुनि सत्रु हमारे मरीऐ ॥ देग तेग जग मै दोऊ चलै ॥ राख आप मुहि अउर न दलै ॥४॥ तुम मम करहु सदा प्रतिपारा ॥ तुम साहिब मै दास तिहारा ॥ जान आपना मुझै निवाज ॥ आप करो हमरे सभ काज ॥५॥ तुम हो सभ राजन के राजा ॥ आपे आप गरीब निवाजा ॥ दास जान करि क्रिपा करहु मुहि ॥ हार परा मै आनि दार तुहि॰ ॥६॥ अपना जान करो

प्रतिपारा ॥ तुम साहिब मै किंकर थारा ॥ दास जान दै हाथ उबारो ॥ हमरे सभ बैरीअन सम्घारो ॥७॥ प्रिथम धरो भगवत को धिआना ॥ बहुर करो· कबिता बिधि नाना ॥ किसन जथा मति चरित्र उचारो ॥ चूक होइ कबि लेहु सुधारो ॥८॥

कबिबाच ॥ दोहरा ॥

जो निज प्रभ मो सो कहा सो कहिहौ· जग माहि ॥ जो तिह प्रभ कौ धिआइ है अंत सुरग को जाहि ॥१॥ दोहरा ॥ हरि हरि जन दुई एक है बिब बिचार कछु नाहि ॥ जल ते उपज तरम्ग जिउ जल ही बिखै समाहि ॥२॥

दोहरा ॥

जब आइसु प्रभु को भयो जनमु धरा जग आइ ॥ अब मै कथा सम्छेपते

सभहूं कहत सुनाइ ॥३॥

कबिबाच दोहरा ॥

ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर नयाइ ॥ पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करो सहाइ ॥४॥

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को नित उठि धिऐहै· सम्त ॥ अंत लहै· गे मुकति फलु पावहिंगे भगवम्त ॥५॥

दोहरा ॥

राम कथा जुग जुग अट्टल सभ कोऊ भाखत नेत ॥ सुरग बास रघुबर करा सगरी पुरी समेत ॥६॥

चौपई ॥

जो इह कथा सुनै अरु गावै ॥ दूख पाप तिह निकटि न आवै ॥ बिसनु भगति की ए फल होई ॥ आधि

बियाधि छ्वै सकै न कोई ॥७॥ सम्मत सतरह सहस पचावन ॥ हाड़ वदी प्रिथम सुखदावन ॥ त्व प्रसादि करि ग्रंथ सुधारा ॥ भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥८॥

दोहरा ॥

नेत्र तुंग के चरन तर सत्तु द्रव तीर तरम्ग ॥ स्री भगवत पूरन कीयो रघुबर कथा प्रसम्ग ॥९॥ साध असाध जानिओ नही बाद सुबाद बिबाद ॥ ग्रंथ सकल पूरन कीयो भगवत क्रिपा प्रसादि ॥१०॥

स्वैया ॥

पाँइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आँख तरे नही आनयो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहै· मत एक न मानयो ॥ सिंम्रिति सासत्र बेद सभै

बहु भेद कहै· हम एक न जानयो ॥
स्री असिपान क्रिपा तुमरी करि मै न
कहयो सभ तोहि बखानयो ॥११॥

दोहरा ॥

सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ
तुहारो दुआर ॥ बाँहि गहे की लाज
अस गोबिंद दास तुहार ॥१२॥

रामकली महला ३

अन्नदु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अन्नदु भइिआ मेरी माए सतिगुरू मै
पाइिआ ॥ सतिगुरु त पाइिआ सहज
सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग
रतन परवार परीआ सबद गावण
आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा
मनि जिनी वसाइिआ ॥ कहै नानकु
अन्नदु होआ सतिगुरू मै पाइिआ
॥१॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि

नाले ॥ हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अम्गीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू

विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु सम्तहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पम्च सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पम्च दूत तुधु वसि कीते कालु कम्टकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइिआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइिआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग सम्ताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ सम्त साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवम्ति नानकु गुर चरण

लागे वाजे अनहद् तूरे ॥४०॥१॥

मुम्दावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिम्नि वसतू पईओ सतु सम्तोखु वीचारो ॥ अम्मटत नामु ठाकुर का पइिओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुम्चै तिस का होइि उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम सम्सारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइिओई ॥ तरसु पइिआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

पउड़ी ॥

तिथै तू समरथु जिथै कोइि नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइि तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अम्मट्तु सेइि खाहि ॥ कलि महि एहो पुन्नु गुण गोविम्द गाहि ॥ सभसै नो किरपालु सम्ाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइि न जाइि जि आवै तुधु आहि ॥९॥

सलोकु महला ५

अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु

देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥१॥

मः ५ ॥

रखे रखण हारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै समगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥२॥

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ सम्बति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवन्नि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवन्नि ॥४॥१॥

रागु आसा महला १ ॥

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ बाबा
जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु
राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥ विसुए
चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी
माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक
॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चम्दु दीपक बने
तारिका मम्डल जनक मोती ॥ धूपु
मलआनलो पवणु चवरो करे सगल
बनराइ फूलम्त जोती ॥१॥ कैसी
आरती होइ ॥ भव खम्डना तेरी
आरती ॥ अनहता सबद वाजम्त भेरी
॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन
हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक
तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक

पद् गम्ध बिनु सहस तव गम्ध इिव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइि ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइि ॥ गुर साखी जोति परगटु होइि ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइि ॥३॥ हरि चरण कवल मकरम्द लोभित मनो अनदि्नो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिम्ग कउ होइि जा ते तेरै नाइि वासा ॥४॥३॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खम्डल खम्डा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइिआ मनि हरि लिव मम्डल मम्डा हे ॥१॥ करि साधू अम्जुली पुनु वडा हे ॥ करि डम्डउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन

अम्तरि हउमै कम्डा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डम्डा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खम्डा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खम्ड ब्रहमम्डा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मम्डा हे ॥४॥४॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेन्नती सुणहु मेरे मीता सम्त टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ इहु

सम्सारु बिकारु सम्से महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइि पीआवै इिहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइिगो फेरा ॥३॥ अम्तरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इिहै सुखु मागै मो कउ करि सम्तन की धूरे ॥४॥५॥

रामकली महला ३ अन्नदु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अन्नदु भइिआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइिआ ॥ सतिगुरु त पाइिआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइिआ ॥ कहै नानकु अन्नदु होआ सतिगुरू मै पाइिआ ॥१॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अम्गीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु सम्तहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

वाजे पम्च सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि

धारीआ ॥ पम्च दूत तुधु वसि कीते कालु कम्टकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइि नाही कृपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥

आन्नदु आन्नदु सभु को कहै आन्नदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आन्नदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अम्जनु सारिआ ॥ अम्दरहु जिन का

मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अन्नदु है आन्नदु गुर ते जाणिआ ॥७॥

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥

आवहु सम्त पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मम्निऐ पाईऐ ॥ हुकमु मम्निहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु

सुणहु सम्तहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥

ए मन चम्चला चतुराई किनै न पाइिआ ॥ चतुराई न पाइिआ किनै तू सुणि मन्न मेरिआ ॥ एह माइिआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइिआ ॥ माइिआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइिआ ॥ कहै नानकु मन चम्चल चतुराई किनै न पाइिआ ॥१०॥

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटम्बु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कम्मु मूले न कीचै जितु अम्ति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै

नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥
अगम अगोचरा तेरा अम्तु न पाइिआ ॥ अम्तो न पाइिआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जम्त सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइिआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगम्मु है तेरा अम्तु न पाइिआ ॥१२॥
सुरि नर मुनि जन अम्मटतु खोजदे सु अम्मटतु गुर ते पाइिआ ॥ पाइिआ अम्मटतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइिआ ॥ जीअ जम्त सभि तुधु उपाए इिकि वेखि परसणि आइिआ ॥ लबु लोभु अह्मकारु चूका सतिगुरू भला भाइिआ ॥ कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अम्मटतु गुर ते

पाइआ ॥१३॥
भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि तटसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खमनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥
जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ कहै

नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥

एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मम्नि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटम्ब सहित सिउ पवितु सम्गति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मम्नि वसाइआ ॥ कहै नानकु से

पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइिआ ॥१७॥

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइि ॥ नह जाइि सहसा कितै सम्जमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु सम्जमि धोता जाए ॥ मन्नु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइि ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इिहु सहसा इिव जाइि ॥१८॥

जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी

जनमु जूऐ हारिआ ॥१६॥
जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइि पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मन्नु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥
जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अन्तर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु सन्तहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥
जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर

थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अम्मटतु सदा रहहु हरि रम्गि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे

कच्ची आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥

गुर का सबदु रतन्नु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मन्नु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥

सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बन्धन होवै मुकतु सबदु मन्नि

वसाए ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥

सिमटति सासत्र पुन्न पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी सम्सारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अम्मटत बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो किहु

पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ

जाड़ि किसै विटहु रहे लोक विललाड़ि ॥ अैसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीअै विचहु आपु जाड़ि ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आड़ि ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाड़ि ॥३०॥

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥

ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाड़ि ॥ पिआस न जाड़ि होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न

पाइि ॥ हरि रसु पाइि पलै पीअै हरि रसु बहुड़ि न तटसना लागै आइि ॥ एहु हरि रसु करमी पाईअै सतिगुरु मिलै जिसु आइि ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइि ॥३२॥

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइिआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइिआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइि जगतु दिखाइिआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइिआ ॥ कहै नानकु सटसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइिआ ॥३३॥

मनि चाउ भइिआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मम्गलु गाउ सखी गटहु मम्दरु

बणिआ ॥ हरि गाउ मम्गलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइि कै किआ तुधु करम कमाइिआ ॥ कि करम कमाइिआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइिआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइिआ ॥ गुर परसादी हरि मम्नि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइिआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइिआ ॥३५॥

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति

धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु सम्सारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइिआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अम्ध से सतिगुरि मिलिऐ दिब डटसटि होई ॥३६॥

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अम्मटत नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥

हरि जीउ गुफा अम्दरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अम्तु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अम्दरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि

गावहे ॥३९॥

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइिआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग सम्ताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ सम्त साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवम्ति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ सलोकु ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥१॥ असटपदी ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुम्भर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिम्मटति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ काँखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन समगि मोहि उधारो ॥१॥ सुखमनी सुख अम्मटत प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ

कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुखु न सम्तापै ॥ प्रभ का सिमरनु साध कै सम्गि ॥ सरब निधान नानक हरि रम्गि ॥२॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से सिमरहि

जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि तटसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइि ॥ अम्मटत नामु रिद माहि समाइि ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥४॥ प्रभ कउ सिमरहि से धनवम्ते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवम्ते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ

सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइिआला ॥ नानक जन की मम्गै रवाला ॥५॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ सम्त कृपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥ प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ प्रभ कै

सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै
सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ कै
सिमरनि कमल बिगासनु ॥ प्रभ कै
सिमरनि अनहद झुनकार ॥ सुखु प्रभ
सिमरन का अम्तु न पार ॥ सिमरहि
से जन जिन कउ प्रभ मइिआ ॥
नानक तिन जन सरनी पइिआ ॥७॥
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ हरि
सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि
सिमरनि नीच चहु कुम्ट जाते ॥ हरि
सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि
सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि
सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि
सिमरन महि आपि निरम्कारा ॥ करि
किरपा जिसु आपि बुझाइिआ ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि

पाइिआ ॥८॥१॥

सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि तुम्हारी आइिओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥

असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइिआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल सटसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत

होोइि सुखीआ ॥ लाख करोरी बम्धु न परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै ॥ अनिक माइिआ रम्ग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इिहु जात इिकेला ॥ तह हरि नामु सम्गि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥ छूटत नही कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥ अनिक बिघन जह आइि सम्घारै ॥ हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्राम ॥ हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ ऐसा नामु जपहु मन रम्गि ॥ नानक पाईऐ साध कै सम्गि ॥३॥ जिह मारग के गने

जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा सम्गि तोसा ॥ जिह पैडै महा अम्ध गुबारा ॥ हरि का नामु सम्गि उजीआरा ॥ जहा पम्थि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ जहा तटखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अम्मटतु बरखै ॥४॥ भगत जना की बरतनि नामु ॥ सम्त जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत सम्त दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रम्गि रते रम्ग

एकै ॥ नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥ हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ हरि कै नामि जन कउ तटपति भुगति ॥ हरि का नामु जन का रूप रम्गु ॥ हरि नामु जपत कब परै न भम्गु ॥ हरि का नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥ हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥ हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥ हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ ओति पोति जन हरि रसि राते ॥ सुन्न समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर

जनु हरि हरि जपै ॥ हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ नानक जन सम्गि केते तरे ॥७॥ पारजातु इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा सम्त रिद वसै ॥ सम्त प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ सम्त का सम्गु वडभागी पाईऐ ॥ सम्त की सेवा नामु धिआईऐ ॥ नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥

सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिमटती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥

असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
खट सासत्र सिमटति वखिआन ॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ पुन्न
दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइि
होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु
भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऔ इिक बार
॥१॥ नउ खम्ड पटथमी फिरै चिरु
जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥ कनिक
अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम
करै बहु आसन ॥ जैन मारग सम्जम
अति साधन ॥ निमख निमख करि
सरीरु कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न

जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि तटसन ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥

अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविन्द भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
हरि का नामु जपत दुखु जाइि ॥
नानक बोलै सहजि सुभाइि ॥४॥ चारि
पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की
सेवा लागै ॥ जे को आपुना दूखु
मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै
॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साधसम्गि इिह हउमै छोरै ॥ जे को
जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की
सरनी परै ॥ जिसु जन कउ प्रभ दरस
पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि
जासा ॥५॥ सगल पुरख महि पुरखु
प्रधानु ॥ साधसम्गि जा का मिटै
अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै
नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
जा का मनु होइि सगल की रीना ॥

हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल सटसटि साजना ॥ सूख दूख जन सम डटसटेता ॥ नानक पाप पुन्न नही लेपा ॥६॥ निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अम्तरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन सम्गि आपि प्रभ राते ॥ तुम्ह्री उसतति तुम ते होइ ॥ नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥ सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल कृआ महि ऊतम किरिआ ॥ साधसम्गि दुरमति मलु हिरिआ ॥

सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अम्रित बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥ सलोकु ॥ निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥ असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ मुखि अपिआउ

बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता सम्गि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री सम्गि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर सम्गि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अम्ध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ आदि अम्ति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥ ता कउ अम्धा जानत दूरे ॥

जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥३॥ रतनु तिआगि कउडी समगि रचै ॥ साचु छोडि झूठ समगि मचै ॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ समगि सहाई तिसु परहरै ॥ चमदन लेपु उतारै धोइ ॥ गरधब प्रीति भसम समगि होइ ॥ अमध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥ करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अमतरि मलु माइआ ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ बाहरि गिआन धिआन

इसनान ॥ अम्तरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अम्तरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अम्तरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥ सुनि अम्धा कैसे मारगु पावै ॥ करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसनपद गावै गुम्ग ॥ जतन करै तउ भी सुर भम्ग ॥ कह पिम्गुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ सम्गि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के गटह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइिआ रम्गि रसै ॥

डटड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥ तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिम्डु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥ कोइि न जानै तुमरा अम्तु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवम्त ॥ सगल समग्री तुमरै सूतट धारी ॥ तुम ते होइि सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥ सलोकु ॥ देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइि ॥ नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइि ॥१॥

असटपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ एक भी न देइि दस भी हिरि लेइि ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइि ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइिआ ॥ सरब थोक नानक तिनि पाइिआ ॥१॥ अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइि ॥ अगिआनी मनि रोसु करेइि ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन

करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइिआलु ॥२॥ अनिक भाति माइिआ के हेत ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइिआ सिउ रम्गु लावै ॥ ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि रहिओ तह अम्ध अम्धारु ॥ बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥ मिथिआ तनु धनु कुटम्बु सबाइिआ ॥ मिथिआ हउमै ममता माइिआ ॥ मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रम्ग सम्गि माइिआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह

अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निम्दा सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर तटअ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥ मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अम्ध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगम्ध ॥

बिनु सिमरन दिनु रैनि बटथा बिहाइि ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइि ॥ गोबिद भजन बिनु बटथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धम्नि धम्नि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गम्ढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अम्तरि बसै निरम्कारु ॥ तिस की सीख तरै सम्सारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि

करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान थन्नतरि रहिआ समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥ सलोकु ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अह्मेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥ असटपदी ॥ जिह प्रसादि छतीह अम्मटत खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगम्धत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मम्दरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अम्दरि ॥ जिह

प्रसादि गटह सम्गि सुख बसना ॥
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह
प्रसादि रम्ग रस भोग ॥ नानक सदा
धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥ जिह
प्रसादि पाट पटम्बर हढावहि ॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि
॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ जिह
प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा
धिआइि केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी
जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक
पति सेती घरि जावहि ॥२॥ जिह
प्रसादि आरोग कम्चन देही ॥ लिव
लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह
प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ मन सुखु

पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ नानक ता की भगति करेह ॥३॥ जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥ जिह प्रसादि

करहि पुन्न बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुन्दर रूपु ॥ सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥ जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसादि बोलहि अम्मटत रसना ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि सम्पूरन फलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥

ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥ जिह प्रसादि तूम्‍ प्रगटु सम्‍सारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूम्‍ पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूम्‍ ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसन्न बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सरब निधान प्रभ तेरी

मङिआ ॥ आपहु कछू न किनहू लङिआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥ सलोकु ॥ अगम अगाधि पारब्रहमु सोइि ॥ जो जो कहै सु मुकता होइि ॥ सुनि मीता नानकु बिनवम्ता ॥ साध जना की अचरज कथा ॥१॥ असटपदी ॥ साध कै सम्गि मुख ऊजल होत ॥ साधसम्गि मलु सगली खोत ॥ साध कै सम्गि मिटै अभिमानु ॥ साध कै सम्गि प्रगटै सुगिआनु ॥ साध कै सम्गि बुझै प्रभु नेरा ॥ साधसम्गि सभु होत निबेरा ॥ साध कै सम्गि पाए नाम रतनु ॥ साध कै सम्गि एक ऊपरि जतनु ॥ साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी

॥१॥ साध कै समगि अगोचरु मिलै ॥ साध कै समगि सदा परफुलै ॥ साध कै समगि आवहि बसि पमचा ॥ साधसमगि अममटत रसु भुमचा ॥ साधसमगि होइि सभ की रेन ॥ साध कै समगि मनोहर बैन ॥ साध कै समगि न कतहूम धावै ॥ साधसमगि असथिति मनु पावै ॥ साध कै समगि माइिआ ते भिन्न ॥ साधसमगि नानक प्रभ सुप्रसन्न ॥२॥ साधसमगि दुसमन सभि मीत ॥ साधू कै समगि महा पुनीत ॥ साधसमगि किस सिउ नही बैरु ॥ साध कै समगि न बीगा पैरु ॥ साध कै समगि नाही को ममदा ॥ साधसमगि जाने परमान्नदा ॥ साध कै समगि नाही हउ तापु ॥ साध कै समगि तजै सभु आपु ॥ आपे जानै

साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥ साध कै सम्गि न कबहू धावै ॥ साध कै सम्गि सदा सुखु पावै ॥ साधसम्गि बसतु अगोचर लहै ॥ साधू कै सम्गि अजरु सहै ॥ साध कै सम्गि बसै थानि ऊचै ॥ साधू कै सम्गि महलि पहूचै ॥ साध कै सम्गि डटड़ै सभि धरम ॥ साध कै सम्गि केवल पारब्रहम ॥ साध कै सम्गि पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ साध कै सम्गि सभ कुल उधारै ॥ साधसम्गि साजन मीत कुटम्ब निसतारै ॥ साधू कै सम्गि सो धनु पावै ॥ जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ साधसम्गि धरम राइि करे सेवा ॥ साध कै सम्गि सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै सम्गि पाप पलाइिन ॥ साधसम्गि

अम्मटत गुन गाइिन ॥ साध कै सम्गि स्रब थान गम्मि ॥ नानक साध कै सम्गि सफल जन्नम ॥५॥ साध कै सम्गि नही कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥ साध कै सम्गि कलूखत हरै ॥ साध कै सम्गि नरक परहरै ॥ साध कै सम्गि ईहा ऊहा सुहेला ॥ साधसम्गि बिछुरत हरि मेला ॥ जो इिछै सोई फलु पावै ॥ साध कै सम्गि न बिरथा जावै ॥ पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥ साध कै सम्गि सुनउ हरि नाउ ॥ साधसम्गि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै सम्गि न मन ते बिसरै ॥ साधसम्गि सरपर निसतरै ॥ साध कै सम्गि लगै प्रभु मीठा ॥ साधू कै सम्गि घटि घटि डीठा ॥ साधसम्गि

भए आगिआकारी ॥ साधसम्गि गति भई हमारी ॥ साध कै सम्गि मिटे सभि रोग ॥ नानक साध भेटे सम्जोग ॥७॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ साध की उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा का नाही अम्त ॥ साध की सोभा सदा बेअम्त ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बनि आई ॥ नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥ सलोकु ॥ मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥ अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥ असटपदी ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे

जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रहम गिआनी से जन भए ॥ नानक

जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥ ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइिआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइिआ ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी की डटसटि अम्मटतु बरसी ॥ ब्रहम गिआनी बम्धन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥ ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही धम्धा ॥ ब्रहम गिआनी ले धावतु

बम्धा ॥ ब्रहम गिआनी कै होइि सु
भला ॥ ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥
ब्रहम गिआनी सम्गि सगल उधारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल
सम्सारु ॥४॥ ब्रहम गिआनी कै एकै
रम्ग ॥ ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु
सम्ग ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु
आधारु ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु
परवारु ॥ ब्रहम गिआनी सदा सद
जागत ॥ ब्रहम गिआनी अहम्बुधि
तिआगत ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि
परमान्नद ॥ ब्रहम गिआनी कै घरि
सदा अन्नद ॥ ब्रहम गिआनी सुख
सहज निवास ॥ नानक ब्रहम गिआनी
का नही बिनास ॥५॥ ब्रहम गिआनी
ब्रहम का बेता ॥ ब्रहम गिआनी एक
सम्गि हेता ॥ ब्रहम गिआनी कै होइि

अचिम्त ॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मम्त ॥ ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥ ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम

गिआनी का अन्तु न पारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ ब्रहम गिआनी सभ सटसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥ ब्रहम गिआनी आपि निरन्कारु ॥ ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥

सलोकु ॥ उरि धारै जो अन्तरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥

असटपदी ॥ मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीति निरम्जन दरस ॥ पर तटअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल सम्तसम्गि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निम्दा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मम्दा ॥ गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इम्द्री जित पम्च दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को अैसा अपरस ॥१॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसन्न ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिन्न ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन सम्गि राचै ॥ मन तन अम्तरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि

डटड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥ भगउती भगवम्त भगति का रम्गु ॥ सगल तिआगै दुसट का सम्गु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ साधसम्गि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ भगवम्त की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक अैसा भगउती भगवम्त कउ पावै ॥३॥ सो पम्डितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पम्डित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पम्डितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिमटति

बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पम्डित कउ सदा अदेसु ॥४॥ बीज मम्त्रभ सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइि ॥ साधसम्गि पावै जनु कोइि ॥ करि किरपा अम्तरि उर धारै ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखदु नामु ॥ कलिआण रूप मम्गल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का नामु सति रामदासु ॥ आतम रामु तिसु नदरी आइिआ ॥ दास दसम्तण भाइि तिनि पाइिआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि

जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥
अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥
सगल समगि आतम उदासु ॥ ऐसी
जुगति नानक रामदासु ॥६॥ प्रभ की
आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन
मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु
तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनन्दु तह
नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु
माटी ॥ तैसा अम्मटतु तैसी बिखु
खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रम्कु तैसा राजानु ॥ जो वरताए
साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु
कहीऔ जीवन मुकति ॥७॥ पारब्रहम
के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै
तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन
जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥

पसरिओ आपि होइि अनत तरम्ग ॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रम्ग ॥
जैसी मति देइि तैसा परगास ॥
पारब्रहमु करता अबिनास ॥ सदा
सदा सदा दइिआल ॥ सिमरि सिमरि
नानक भए निहाल ॥८॥६॥ सलोकु ॥
उसतति करहि अनेक जन अम्तु न
पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची
बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥
असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥
कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई
कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि
बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद
के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥

नानक करते का अम्तु न पावहि ॥१॥ कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई कोटि अम्ध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइिआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पम्खी सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसम्तर ॥ कई कोटि देस भू मम्डल ॥ कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव

दानव इिम्द्व सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिमटति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जम्त ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किन्नर पिसाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर मटगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥ कई कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई

कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवम्त ॥ कई कोटि माइआ महि चिम्त ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम सम्गि तिनि लिव लागी ॥ कई कोटि प्रभ कउ खोजम्ते ॥ आतम महि पारब्रहमु लह्मते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसम्गु ॥ पारब्रहम तिन लागा रम्गु ॥ जिन कउ होए आपि सुप्रसन्न ॥ नानक ते जन सदा धनि धम्नि ॥६॥ कई कोटि खाणी अरु खम्ड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमम्ड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिओ

पासार ॥ सदा सदा इकु एकम्कार ॥ कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ ता का अम्तु न जानै कोइि ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइि ॥७॥ कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइि परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥ सलोकु ॥ करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइि ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइि ॥१॥

असटपदी ॥ करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ अम्तु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रम्ग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अम्तरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक डटसटी अवरु न आवै ॥२॥ कहु

मानुख ते किआ होइि आवै ॥ जो
तिसु भावै सोई करावै ॥ इिस कै
हाथि होइि ता सभु किछु लेइि ॥ जो
तिसु भावै सोई करेइि ॥ अनजानत
बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन
आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि
धावै ॥ निमख माहि चारि कुम्ट फिरि
आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी
भगति देइि ॥ नानक ते जन नामि
मिलेइि ॥३॥ खिन महि नीच कीट
कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥
जा का डटसटि कछू न आवै ॥ तिसु
ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कउ
अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा
न गनै जगदीस ॥ जीउ पिम्डु सभ
तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन
ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि

बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥ इिस का बलु नाही इिसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रम्गि हसै ॥ कबहू निम्द चिम्द बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइिआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइि रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूम सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइि बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु

राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥ कबहू होइि पम्डितु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इिसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतम्ग होइि जीआ ॥ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइि ॥ नानक दूजा अवरु न कोइि ॥७॥ कबहू साधसम्गति इिहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ अम्तरि होइि गिआन परगासु ॥ उसु असथान का नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इिक रम्गि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै सम्गि ॥ जिउ जल महि जलु आइि

खटाना ॥ तिउ जोती समगि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥ सलोकु ॥ सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥ असटपदी ॥ जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥ सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ जो जानै मै जोबनवंतु ॥ सो होवत बिसटा का जंतु ॥ आपस कउ करमवंतु कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १॥ धनवंता होइ करि गरबावै ॥ त्रिण समानि कछु संगि न

जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे
आस ॥ पल भीतरि ता का होइि
बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवम्तु
॥ खिन महि होइि जाइि भसमम्तु ॥
किसै न बदै आपि अह्मकारी ॥ धरम
राइि तिसु करे खुआरी ॥ गुर प्रसादि
जा का मिटै अभिमानु ॥ सो जनु
नानक दरगह परवानु ॥२॥ कोटि
करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले
बिरथारे ॥ अनिक तपसिआ करे
अह्मकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि
अवतार ॥ अनिक जतन करि आतम
नही द्ब्वै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै
॥ आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
सरब की रेन जा का मनु होइि ॥ कहु
नानक ता की निरमल सोइि ॥३॥ जब

लगु जानै मुझ ते कछु होइि ॥ तब इिस कउ सुखु नाही कोइि ॥ जब इिह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन सम्गि माइि ॥ तब लगु धरम राइि देइि सजाइि ॥ प्रभ किरपा ते बम्धन तूटै ॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥ सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ तटपति न आवै माइिआ पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह तटपतावै खपि खपि मरै ॥ बिना सम्तोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ बटथे सभ काजै ॥ नाम रम्गि सरब सुखु होइि ॥ बडभागी किसै परापति होइि ॥ करन करावन आपे

आपि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ करन करावन करनैहारु ॥ इिस कै हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी डटसटि करे तैसा होइि ॥ आपे आपि आपि प्रभु सोइि ॥ जो किछु कीनो सु अपनै रम्गि ॥ सभ ते दूरि सभहू कै सम्गि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ आपहि एक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाइि ॥ नानक सद ही रहिआ समाइि ॥६॥ आपि उपदेसै समझै आपि ॥ आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥ उस ते भिन्न कहहु किछु होइि ॥ थान थन्नतरि एकै सोइि ॥ अपुने चलित आपि करणैहार ॥ कउतक करै रम्ग आपार ॥ मन महि आपि मन अपुने

माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइ
॥७॥ सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ सचु
सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे
किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला
तेरा रूप ॥ अति सुम्दर अपार अनूप
॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी
॥ घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु
जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥
सलोकु ॥ सम्त सरनि जो जनु परै सो
जनु उधरनहार ॥ सम्त की निम्दा
नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥
असटपदी ॥ सम्त कै दूखनि आरजा
घटै ॥ सम्त कै दूखनि जम ते नही
छुटै ॥ सम्त कै दूखनि सुखु सभु
जाइ ॥ सम्त कै दूखनि नरक महि

पाइि ॥ सम्त कै दूखनि मति होइि मलीन ॥ सम्त कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ सम्त के हते कउ रखै न कोइि ॥ सम्त कै दूखनि थान भ्रसटु होइि ॥ सम्त कृपाल कृपा जे करै ॥ नानक सम्तसमगि निम्द्कु भी तरै ॥१॥ सम्त के दूखन ते मुखु भवै ॥ सम्तन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ सम्तन कै दूखनि सरप जोनि पाइि ॥ सम्त कै दूखनि तटगद् जोनि किरमाइि ॥ सम्तन कै दूखनि तटसना महि जलै ॥ सम्त कै दूखनि सभु को छलै ॥ सम्त कै दूखनि तेजु सभु जाइि ॥ सम्त कै दूखनि नीचु नीचाइि ॥ सम्त दोखी का थाउ को नाहि ॥ नानक सम्त भावै ता ओइि भी गति पाहि ॥२॥ सम्त का निम्द्कु महा अतताई ॥

सम्त का निम्दकु खिनु टिकनु न पाई ॥ सम्त का निम्दकु महा हतिआरा ॥ सम्त का निम्दकु परमेसुरि मारा ॥ सम्त का निम्दकु राज ते हीनु ॥ सम्त का निम्दकु दुखीआ अरु दीनु ॥ सम्त के निम्दक कउ सरब रोग ॥ सम्त के निम्दक कउ सदा बिजोग ॥ सम्त की निम्दा दोख महि दोखु ॥ नानक सम्त भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥ सम्त का दोखी सदा अपवितु ॥ सम्त का दोखी किसै का नही मितु ॥ सम्त के दोखी कउ डानु लागै ॥ सम्त के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ सम्त का दोखी महा अहम्कारी ॥ सम्त का दोखी सदा बिकारी ॥ सम्त का दोखी जनमै मरै ॥ सम्त की दूखना सुख ते टरै ॥ सम्त के दोखी कउ नाही ठाउ

॥ नानक सम्त भावै ता लए मिलाइि ॥४॥ सम्त का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ सम्त का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ सम्त के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईअै ॥ सम्त का दोखी उझड़ि पाईअै ॥ सम्त का दोखी अम्तर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ सम्त के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ सम्त के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक सम्त भावै ता लए उबारि ॥५॥ सम्त का दोखी इउ बिललाइि ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइि ॥ सम्त का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ सम्त का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला

॥ सम्त का दोखी धरम ते रहत ॥
सम्त का दोखी सद मिथिआ कहत ॥
किरतु निम्दक का धुरि ही पइिआ ॥
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥
सम्त का दोखी बिगड़ रूपु होइि
जाइि ॥ सम्त के दोखी कउ दरगह
मिलै सजाइि ॥ सम्त का दोखी सदा
सहकाईऐ ॥ सम्त का दोखी न मरै न
जीवाईऐ ॥ सम्त के दोखी की पुजै न
आसा ॥ सम्त का दोखी उठि चलै
निरासा ॥ सम्त कै दोखि न तटसटै
कोइि ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइि ॥
पइिआ किरतु न मेटै कोइि ॥ नानक
जानै सचा सोइि ॥७॥ सभ घट तिस
के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस
कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति
करहु दिनु राति ॥ तिसहि धिआवहु

सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ जिस नो कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥ सलोकु ॥ तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥ असटपदी ॥ मानुख की टेक बटथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ बहुरि न तटसना लागै आइ ॥ मारै राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कम्ठि परोइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि

प्रभु सोइि ॥ नानक बिघनु न लागै कोइि ॥१॥ उसतति मन महि करि निरम्कार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना अम्मटतु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रम्गु ॥ साधसम्गि बिनसै सभ सम्गु ॥ चरन चलउ मारगि गोबिम्द ॥ मिटहि पाप जपीअै हरि बिम्द ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवम्त गनी सम्सार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इित उत की ओहु सोझी

जानै ॥ नाम समगि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरमजनु जानिआ ॥३॥ गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु तटसना बुझै ॥ साधसमगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ गटहसत महि सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीऔ जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो समतु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा डटसटाइिआ ॥ अपुने कारज महि आपि समाइिआ ॥

सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥ नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु डटसटि अनडटसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ सटसटि ॥ आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खम्ड ॥ धारण धारि रहिओ ब्रहमम्ड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥ जिन प्रभु जाता सु सोभावम्त ॥ सगल सम्सारु उधरै तिन मम्त ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लए

किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥ सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥ असटपदी

॥ टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिम्ता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥ रूपवम्तु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवम्ता होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु

सदा अरोगु ॥२॥ जिउ मन्दर कउ थामै थम्मनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथम्मनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अम्धकार दीपक परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइि बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू समगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन सम्तन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै समग ॥ लपटि रहिओ रसि लोभी

पतम्ग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ जिसु वखर कउ लैनि तू आइिआ ॥ राम नामु सम्तन घरि पाइिआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप सम्तह सम्गि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जम्जाल ॥ धम्नि धम्नि कहै सभु कोइि ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइि ॥ इिहु वापारु विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥ ५॥ चरन साध के धोइि धोइि पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इिसनानु ॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साधसम्गि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हरि

गुन गाइि अम्मटत रसु चाखै ॥ ओट गही सम्तह दरि आइिआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइिआ ॥६॥ मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की डटसटी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इिह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥ जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइि ॥ जा कै हिरदै एको होइि ॥ सचु करणी सचु ता की रहत ॥ सचु हिरदै सति

मुखि कहत ॥ साची डटसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥ सलोकु ॥ रूपु न रेख न रम्गु किछु तटहु गुण ते प्रभ भिन्न ॥ तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसन्न ॥१॥ असटपदी ॥ अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोइि ॥ सरब निरम्तरि एको सोइि ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गम्भीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर गोबिम्द ॥ कृपा निधान दइिआल बखसम्द ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इिहु अनराउ ॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग

॥ जो करि पाइिआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मम्त्रभ न जानै होरु ॥ अनद रूप मम्गल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु गटहसत महि भोगी ॥ धिआइि धिआइि भगतह सुखु पाइिआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अम्तु न पाइिआ ॥ २॥ जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन देइि ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइि ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस

के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ नाना रूप नाना जा के रम्ग ॥ नाना भेख करहि इक रम्ग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एकम्कारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ नाम के धारे सगले जम्त ॥ नाम के धारे खम्ड ब्रहमम्ड ॥ नाम के धारे सिमटति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै सम्गि उधरे सुनि

स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥ रूपु सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइि ॥ नामु जपत ता की गति होइि ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी मिति गति

॥ जिस की सटसटि सु करणैहारु ॥
अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते
की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो
तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥ बिसमन
बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ
तिसु आइिआ स्वाद ॥ प्रभ कै रम्गि
राचि जन रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ
लहे ॥ ओइि दाते दुख काटनहार ॥
जा कै सम्गि तरै सम्सार ॥ जन का
सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै सम्गि
एक लिव लागी ॥ गुन गोबिद कीरतनु
जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु
पावै ॥८॥१६॥ सलोकु ॥ आदि सचु
जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक
होसी भि सचु ॥१॥ असटपदी ॥ चरन
सति सति परसनहार ॥ पूजा सति
सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति

पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥ सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥ सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिन्न न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक एक ॥२॥ ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ ठाकुर का

सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर की सेवक के निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥ अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने दास कउ देइ वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ नानक सो सेवकु दह दिसि

प्रगटाइआ ॥४॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु न काढत आपि ॥ ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ सरब जीआ का राखा सोइ ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ बारम्बार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी अम्मटतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥ नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही डटसटाइआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रम्गु ॥ नामो सुखु हरि नाम का सम्गु ॥ नाम रसि जो जन तटपताने ॥ मन तन नामहि नामि समाने ॥ ऊठत

बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥ बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आतम कै चाइ ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की

तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥ सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ तिस कै सम्गि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥ असटपदी ॥ सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख के बम्धन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥ गुर कै गटहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की

आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ नानक

ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत सम्गि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि सम्तोखु आतम पतीआने ॥ पूरा गुरु अख्यओ जा का मम्त्र ॥ अम्मटत डटसटि पेखै होइि सम्त ॥ गुण बिअम्त कीमति नही पाइि ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइि ॥४॥ जिहबा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बम्दन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै

सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥ इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥ अम्मट्तु पीवै अमरु सो होइ ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ मोह माइआ कै सम्गि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ अम्धकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अम्देसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ जिस का सा तिनि

किरपा धारी ॥ साधसम्गि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ अपुनी कीमति आपे पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरम्तरि एको सोइ ॥ ओति पोति रविआ रूप रम्ग ॥ भए प्रगास साध कै सम्ग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥
सलोकु ॥ साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥
असटपदी ॥ सम्त जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥

अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥
चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ डटड़ु
करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु
सम्चहु होवहु भगवम्त ॥ सम्त जना
का निरमल मम्त ॥ एक आस राखहु
मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि
जाहि ॥१॥ जिसु धन कउ चारि कुम्ट
उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते
पावहि ॥ जिसु सुख कउ नित बाछहि
मीत ॥ सो सुखु साधू सम्गि परीति ॥
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु
मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ सरब
निधान महि हरि नामु निधानु ॥ जपि
नानक दरगहि परवानु ॥२॥ मनु

परबोधहु हरि कै नाइि ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइि ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइि ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइि ॥ कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइि आस ॥ भगति भाइि आतम परगास ॥ तितु घरि जाइि बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै सो काचो काचा ॥ आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इिउ रतन जनम का होइि उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिम्मटति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु लाइि ॥ मनि

बम्छत नानक फल पाइि ॥४॥ सम्गि न चालसि तेरै धना ॥ तूम् किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटम्ब अरु बनिता ॥ इिन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रम्ग माइिआ बिसथार ॥ इिन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डम्फु झूठु पासारी ॥ जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥ गुर की मति तूम् लेहि इिआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइि तुम्ारो चीत ॥ चरन कमल राखहु मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत

गति पावहु ॥ सार भूत सति हरि को नाउ ॥ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥ गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ होहि अचिम्तु बसै सुख नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साधसम्गि पावहि सचु धना ॥ हरि पूम्जी सम्चि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरम्तरि एको देखु ॥ कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥ एको जपि एको सालाहि ॥ एकु सिमरि एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाउ अन्नत ॥ मनि तनि जापि एक भगवम्त ॥ एको एकु एकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ अनिक

बिसथार एक ते भए ॥ एकु अराधि पराछत गए ॥ मन तन अम्तरि एकु प्रभु राता ॥ गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१६॥ सलोकु ॥ फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥ असटपदी ॥ जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ एक ओट एको आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥ प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ हरि रसु पावै

बिरला कोइि ॥ जिन चाखिआ से जन तटपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रम्गि ॥ उपजै चाउ साध कै सम्गि ॥ परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ अम्तरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ प्रभु सोइि ॥ नानक नामि रते सुखु होइि ॥२॥ सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइिओ दइिआलु ॥ सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ बम्धन काटि मुकति जनु भइिआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइिआ ॥ इिछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद सम्गि हजूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ मिलाइि ॥ नानक भगती नामि समाइि ॥३॥ सो किउ बिसरै जि

घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥ साजन सम्त करहु इहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइ तरीऐ सम्सारु ॥ बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल दूख का

होवत नासु ॥ नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥ उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अम्तरि इिही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइि ॥ मनु बिगसै साध चरन धोइि ॥ भगत जना कै मनि तनि रम्गु ॥ बिरला कोऊ पावै सम्गु ॥ एक बसतु दीजै करि मइिआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइिआ ॥ ता की उपमा कही न जाइि ॥ नानक रहिआ सरब समाइि ॥६॥ प्रभ बखसम्द दीन दइिआल ॥ भगति वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिम्द गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइि पुनीत ॥ भगति भाइि लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर

नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥ सरब बैकुम्ठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन कापर सम्गीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवम्त ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मम्त ॥ साधसम्गि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥

सलोकु ॥ सरगुन निरगुन निरम्कार सुन्न समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥

असटपदी ॥ जब अकारु इहु कछु न डटसटेता ॥ पाप पुन्न तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुन्न समाधि

॥ तब बैर बिरोध किसु समिग कमाति ॥ जब इिस का बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बम्ध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइि ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइि ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ अबिनासी सुख

आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइि ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइि ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरम्जन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छुटे कउन बम्धन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरम्जन निरम्कार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति सम्गि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु तटपतावै ॥

करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥ जब अपनी सोभा आपन सम्गि बनाई ॥ तब कवन माइि बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥ जह अछल अछेद अभेद समाइिआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइिआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह एकहि एक एक भगवम्ता ॥ तह कउनु अचिम्तु किसु

लागै चिम्ता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअम्त ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥ जह आपि रचिओ परपम्चु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ पापु पुन्नु तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बम्छावत ॥ आल जाल माइिआ जम्जाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु सम्कोचै तउ नानक एकै ॥७॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु सम्त परतापि ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि

कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥ सलोकु ॥ जीअ जन्त के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह डटसटार ॥१॥ असटपदी ॥ आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता सटसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते भिन्न नही किछु होइि ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइि ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल सटसटि

का जेता ॥१॥ जीअ जन्त्र सभ ता कै हाथ ॥ दीन दइिआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइि न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइि ॥ सभ सिरि एकु निरम्जन राइि ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ अम्तरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअम्त अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ २॥ पूरन पूरि रहे दइिआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अम्तरजामी रहिओ बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइि ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइि ॥ मन अम्तरि बिस्वासु करि मानिआ ॥

करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥
जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ तिस की
आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ
सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम
पदु पाई ॥ इस ते ऊपरि नही
बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ
निरम्कारु ॥ बम्धन तोरि भए निरवैर
॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इह
लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ नानक
हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥
साधसम्गि मिलि करहु अन्नद ॥ गुन
गावहु प्रभ परमान्नद ॥ राम नाम ततु
करहु बीचारु ॥ द्रुल्लभ देह का करहु
उधारु ॥ अम्मृत बचन हरि के गुन
गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै
अगिआनु बिनसै अम्धेरा ॥ सुनि

उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अम्तरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिम्ता जाइ मिटै अह्मकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न

पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ मति पूरी अम्मटतु जा की डटसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत सटसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुम्दर हरि रूप ॥ धन्नु सेवा सेवकु परवानु ॥ अम्तरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु पाइिआ ॥ साधसम्गि नानक हरि धिआइिआ ॥८॥२२॥ सलोकु ॥ गिआन अम्जनु गुरि दीआ अगिआन अम्धेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते सम्त भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥ असटपदी ॥ सम्तसम्गि अम्तरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकसु

घट माहि ॥ अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥ नउ निधि अम्रितु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुन्न समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥ सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिन्न नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ बेद पुरान सिम्रिति महि देखु ॥ ससीअर सूर

नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥ सन्त जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ सन्त जना कै हिरदै सभि धरम ॥ सन्त जना सुनहि सुभ बचन ॥ सरब बिआपी राम सन्गि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ सति बचन साधू सभि कहत ॥ जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अन्तरि बसे बाहरि भी ओही ॥ नानक दरसनु

देखि सभ मोही ॥४॥ आपि सति
कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते
सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे
बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकम्कारु ॥
अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु
भावै तिसु लए मिलाइ ॥ कवन
निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥ आपे
आपि आप भरपूरि ॥ अम्तरगति जिसु
आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन आपि
बुझाए ॥५॥ सरब भूत आपि वरतारा
॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल
समग्री जा का तना ॥ आपन जसु
आप ही सुना ॥ आवन जानु इकु
खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी
माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै
॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक

जा भावै ता लए समाइि ॥६॥ इिस ते होइि सु नाही बुरा ॥ ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति आपन सम्गि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइि ॥ दूसर होइि त सोझी पाइि ॥ तिस का कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इिहु जानु ॥७॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइि ॥ आपि मिलाइि लए प्रभु सोइि ॥ ओहु धनवम्तु कुलवम्तु पतिवम्तु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवम्तु ॥ धन्नु धन्नु धन्नु जनु आइिआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइिआ ॥ जन आवन का इिहै सुआउ ॥ जन कै सम्गि चिति आवै

नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै सम्सारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥ सलोकु ॥ पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ नानक पूरा पाइिआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥ असटपदी ॥ पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिम्द ॥ मन अम्तर की उतरै चिम्द ॥ आस अनित तिआगहु तरम्ग ॥ सम्त जना की धूरि मन मम्ग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साधसम्गि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भम्डार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ खेम कुसल सहज आन्नद ॥ साधसम्गि भजु परमान्नद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिम्द

अम्मटत रसु पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइिण एक ॥ एक रूप जा के रम्ग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दइिआल ॥ दुख भम्जन पूरन किरपाल ॥ सिमरि सिमरि नामु बारम्बार ॥ नानक जीअ का इिहै अधार ॥२॥ उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु ता का सम्गु ॥ जा कै मनि लागा हरि रम्गु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महाँत कै माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥ सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर

भए सभ रेन ॥ अम्मटत नामु साधसम्गि लैन ॥ सुप्रसन्न भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जम्जाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ प्रभ की उसतति करहु सम्त मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिम्द गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब इछा ता की पूरन होइ ॥ प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥ नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥ खेम साँति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुन्दरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी एक डटसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥ इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ गुण गोबिन्द नाम धुनि बाणी ॥ सिमटति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मताँत केवल हरि नाम ॥ गोबिन्द भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अप्राध साधसम्गि मिटै ॥ सम्त कृपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति

॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अम्मटत ता की बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इहि गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आसा महला ४ छम्त घरु ४ ॥

हरि अम्मटत भिन्ने लोइणा मनु प्रेमि रतन्ना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कम्चनु सोविन्ना ॥ गुरमुखि रम्गि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिन्ना ॥ जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धन्ना ॥१॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरम्म की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविम्द रम्गा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मम्गा ॥ मेरा मनु तनु

सबदि विगासिआ जपि अनत तरम्गा ॥ मिलि सम्त जना हरि पाइआ नानक सतसम्गा ॥३॥ दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूम्ढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कम्चन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥ पम्थु दसावा नित खड़ी मुम्ध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु

चेताइि गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥ गुरमुखि पिआरे आइि मिलु मै चिरी विछुन्ने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिन्ने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मन्ने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कम्मे ॥३॥ गुर अम्मटत भिन्नी देहुरी अम्मटतु बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अम्मटति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइिआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइिआ नानकु हरि इिके ॥४॥६॥१६॥ आसा महला ४ ॥ हरि अम्मटत भगति भम्डार है गुर सतिगुर

पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धन्नु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ी पाइिआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥ सचु साहु हमारा तूम्‍ धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भाँडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भाँडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भम्‍डारा ॥ २॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूम्‍ अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का

दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूम्ह गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अम्धेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥ जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलम्भु

है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥
हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै
भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो
फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥
तूम् हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए
राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु
नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन् तूम्
मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि
मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु
भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥ कोई
गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि
नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना
अम्तरि कपटु विकारु है तिना रोइि
किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु
जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना
नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि
भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥ आसा

महला ४ ॥ जिन अम्तरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि सम्ता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिख्ही सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥ गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी

॥ जन नानक हरि पुन्नु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुन्न केरी ॥३॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्‍ा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१६॥ आसा महला ४ ॥ जिन्‍ा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु डटड़ावै राम राजे ॥ तिस की तटसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन् जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥ जिनी

गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ी सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्ा सुखु सद होई ॥ जिन्ा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्ा मिलिआ हरि सोई ॥२॥ जिन्ा अम्तरि गुरमुखि प्रीति है तिन् हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन् की निम्दा कोई किआ करे जिन् हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥ हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अह्मकारीआ निम्दका पिठि देइ

नामदेउ मुखि लाइिआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अमति लए छडाइिआ ॥४॥१३॥२०॥

ੴ सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभम्‍ गुर प्रसादि ॥
आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि
सलोक भी महले पहिले के लिखे
टुम्डे अस राजै की धुनी ॥

सलोकु मः १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥ महला २ ॥ जे सउ चम्दा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अम्धार ॥२॥ मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुम्ञे अम्दरि खेत ॥ खेतै अम्दरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन

विचि सुआह ॥३॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूम्‍ तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूम्‍ जाणोई सभसै दे लैसहि जिम्दु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥ सलोकु मः १ ॥ सचे तेरे खम्ड सचे ब्रहमम्ड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु

धिआइिनि सचु ॥ जो मरि जम्मे सु कचु निकचु ॥१॥ मः १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइि ॥ कीता करणा सरब रजाइि ॥२॥ महला २ ॥ इिहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इिकन्हा हुकमि समाइि लए इिकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इिकन्हा भाणै कढि लए इिकन्हा माइिआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि

जाणीऔै जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइिनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइि रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥ सलोक मः १ ॥

विसमादु नाद विसमादु वेद ॥
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥
विसमादु रूप विसमादु रम्ग ॥
विसमादु नागे फिरहि जम्त ॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥

विसमादु सम्जोगु विसमादु विजोगु ॥
विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥
विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥
विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि
विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक
बुझणु पूरै भागि ॥१॥ मः १ ॥
कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति
भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली
आकासी कुदरति सरब आकारु ॥
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति
सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा
पैन्णु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति
जाती जिनसी रम्गी कुदरति जीअ
जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति
बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥

कुदरति पउणु पाणी बैसम्तरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूम्‍ कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अम्दरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइि भसमड़ि भउरु सिधाइिआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि सम्गलु घति चलाइिआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइिआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइिआ ॥ मनि अम्धै जनमु गवाइिआ ॥३॥ सलोक मः १ ॥ भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इिम्दु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम

दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चम्दु ॥ कोह करोड़ी चलत न अम्तु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरम्कारु सचु एकु ॥१॥ मः १ ॥ नानक निरभउ निरम्कारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कन्न् कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मम्गते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुम्दड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥ गिआनु न

गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरम्मिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥ सलोक मः १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कन्न् गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसम्तरु चम्दु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जम्जाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥ मः १ ॥

वाइिनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइिनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइि ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइि ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिन्नी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ बंधन

बम्धि भवाए सोइि ॥ पड़िऐ किरति नचै सभु कोइि ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइि ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन् मनि भउ तिन्ा मनि भाउ ॥२॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरम्कारु है नाइि लइिऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिम्डु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चम्गा आपणा करि पुन्नहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥ सलोक मः १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बम्दे से जि पवहि विचि बम्दी वेखण कउ दीदारु ॥ ह्मिदू सालाही सालाहनि दरसनि

रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा
पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी
सुमनि धिआवनि् जेते अलख नामु
करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरम्जन
काइिआ का आकारु ॥ सतीआ मनि
सम्तोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे
दे मम्गहि सहसा गूणा सोभ करे
सम्सारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा
खाराबा वेकार ॥ इिकि होदा खाइि
चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥
जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ
आकारा आकार ॥ ओइि जि आखहि
सु तूम्है जाणहि तिना भि तेरी सार ॥
नानक भगता भुख सालाहणु सचु
नामु आधारु ॥ सदा अन्नदि रहहि
दिनु राती गुणवम्तिआ पा छारु ॥१॥
मः १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई

कुम्हिआर ॥ घड़ि भाँडे इिटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अम्गिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥ सलोक मः १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जम्मिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ

॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुन्न वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जम्त उपाइआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बम्धना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु सम्जमि

इिह जाइि ॥ हउमै एहो हुकमु है
पइिऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ
रोगु है दारू भी इिसु माहि ॥ किरपा
करे जे आपणी ता गुर का सबदु
कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु
इितु सम्जमि दुख जाहि ॥२॥ पउड़ी
॥ सेव कीती सम्तोखीइ्ही जिन्ही सचो
सचु धिआइिआ ॥ ओन्ही मम्दै पैरु न
रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइिआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बम्धना अन्नु पाणी
थोड़ा खाइिआ ॥ तूम् बखसीसी
अगला नित देवहि चड़हि सवाइिआ ॥
वडिआई वडा पाइिआ ॥७॥ सलोक
मः १ ॥ पुरखाँ बिरखाँ तीरथाँ तटाँ
मेघाँ खेताँह ॥ दीपाँ लोआँ मम्डलाँ
खम्डाँ वरभम्डाँह ॥ अम्डज जेरज
उतभुजाँ खाणी सेतजाँह ॥ सो मिति

जाणै नानका सराँ मेराँ जम्ताह ॥ नानक जम्त उपाइि कै सम्माले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिम्ता भि करणी ताह ॥ सो करता चिम्ता करे जिनि उपाइिआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥ मः १ ॥ लख नेकीआ चम्गिआईआ लख पुन्ना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथाँ सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण सम्गराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा

साहिबु एकु तूम्ह जिनि सचो सचु
वरताइआ ॥ जिसु तूम्ह देहि तिसु
मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्
कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख सचु
न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥
विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥
सलोकु मः १ ॥ पड़ि पड़ि गडी
लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि
गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस
बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ
जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै
झखणा झाख ॥१॥ मः १ ॥ लिखि
लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु
तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु

भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ अन्नु न खाइिआ सादु गवाइिआ ॥ बहु दुखु पाइिआ दूजा भाइिआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अम्धै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइि न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अम्धु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ हरि का नामु मम्नि वसाए ॥ नानक नदरि करे सो पाए ॥ आस अम्देसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥ पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥

नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ी धावदे ॥ इकि मूलु न बुझनि् आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन् मम्गा जि तुझै धिआइदे ॥ ६॥ सलोकु मः १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु सम्सारु ॥ कूड़ु मम्डप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्णहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥ मः १ ॥

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइि ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइि ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइिआ साधि कै विचि देइि करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइि ॥ दइिआ जाणै जीअ की किछु पुन्नु दानु करेइि ॥ सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइि दारू पाप कढै धोइि ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइि ॥२॥ पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा

लालचु छडीऐ होइि इिक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्‍ा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥ सलोकु मः १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इिकु होइि त उगवै रुती हू रुति होइि ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रम्गु न सोइि ॥ भै विचि खुम्बि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइि ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइि न कोइि ॥१॥ मः १ ॥ लबु पापु दुइि राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥ अम्धी रयति गिआन विहूणी

भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि
वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का
वीचारु ॥ मूरख पम्डित हिकमति
हुजति सम्जै करहि पिआरु ॥ धरमी
धरमु करहि गावावहि मम्गहि मोख
दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न
जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु
को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै
॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता
नानक तोलिआ जापै ॥२॥ मः १ ॥
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै
सोइि ॥ सभनी छाला मारीआ करता
करे सु होइि ॥ अगै जाति न जोरु है
अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति
पवै चम्गे सेई केइि ॥३॥ पउड़ी ॥
धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइिआ ता

तिनी खसमु धिआइिआ ॥ एना जम्ता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइिआ ॥ इिकना नो तूम् मेलि लैहि इिकि आपहु तुधु खुआइिआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइिआ ॥ सहजे ही सचि समाइिआ ॥११॥ सलोकु मः १ ॥ दुखु दारू सुखु रोगु भइिआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूम् करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अम्तु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूम् सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइिआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि

रहिआ ॥२॥ मः २ ॥ जोग सबदम्
गिआन सबदम् बेद सबदम् ब्राहमणह
॥ खत्री सबदम् सूर सबदम् सूद्ध
सबदम् परा कृतह ॥ सरब सबदम् एक
सबदम् जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता
का दासु है सोई निरम्जन देउ ॥३॥
मः २ ॥ एक कृसनम् सरब देवा देव
देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि
जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का
दासु है सोई निरम्जन देउ ॥४॥ मः १
॥ कुम्भे बधा जलु रहै जल बिनु कुम्भु
न होइि ॥ गिआन का बधा मनु रहै
गुर बिनु गिआनु न होइि ॥५॥ पउड़ी
॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी
साधु न मारीअै ॥ जेहा घाले घालणा
तेवेहो नाउ पचारीअै ॥ अैसी कला न
खेडीअै जितु दरगह गइिआ हारीअै ॥

पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥ सलोकु मः १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु सम्तोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ मः १ ॥ साम कहै सेतम्बरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइि लइिऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखम्तरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चम्द्रावलि कान्ह कृसनु जादमु

भइिआ ॥ पारजातु गोपी लै आइिआ बिम्द्राबन महि रम्गु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइिआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन् चार वीचार ॥ भउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखम्तरु पाए ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अम्जनु दीआ इन्ी नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥ सलोकु मः १ ॥ सिम्मल रुखु सराइिरा अति

दीरघ अति मुचु ॥ ओड़ि जि आवहि
आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल
फिके फुल बकबके कम्मि न आवहि
पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण
चम्गिआईआ ततु ॥ सभु को निवै
आप कउ पर कउ निवै न कोड़ि ॥
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा
होड़ि ॥ अपराधी दूणा निवै जो ह्मता
मिरगाहि ॥ सीसि निवाड़िऐ किआ
थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥ मः १
॥ पड़ि पुसतक सम्धिआ बादम्‍ ॥
सिल पूजसि बगुल समाधम्‍ ॥ मुखि
झूठ बिभूखण सारम्‍ ॥ त्रैपाल तिहाल
बिचारम्‍ ॥ गलि माला तिलकु लिलाटम्‍
॥ दुड़ि धोती बसत्र कपाटम्‍ ॥ जे
जाणसि ब्रहमम्‍ करमम्‍ ॥ सभि फोकट
निसचउ करमम्‍ ॥ कहु नानक निहचउ

धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥ पउड़ी ॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अम्दरि जावणा ॥ मम्दा चम्गा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ न्नगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥ सलोकु मः १ ॥ दइआ कपाह सम्तोखु सूतु जतु गम्ढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तुटै ना मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धन्नु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कम्नि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥ मः

१ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥ मः १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥ मः १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका

एहु विडाणु ॥ मनि अम्धा नाउ सुजाणु ॥४॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइि दइिआलु किरपा करे ता साई कार कराइिसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइिसी ॥ हुकमि मम्निऔ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइिसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिम्दिआ सो फलु पाइिसी ॥ ता दरगह पैधा जाइिसी ॥१५॥ सलोक मः १ ॥ गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछाँ खाई ॥ अम्तरि पूजा पड़हि कतेबा सम्जमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखम्डा ॥ नामि लइिऔ जाहि तरम्दा ॥१॥ मः १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइिनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि

ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्‍ा भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अन्नु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥ पउड़ी ॥ चितै अम्दरि सभु को वेखि नदरी

हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धम्धै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मम्गनि भिख न पाइदा ॥१६॥ सलोकु मः १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥ मः १ ॥ जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिम्डा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण

वेग हर रम्गी हरम सवारिआ ॥ कोठे मम्डप माड़ीआ लाइि बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइिसि खाइिआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥ सलोकु मः १ ॥ जे करि सूतकु मन्नीऐ सभ तै सूतकु होइि ॥ गोहे अतै लकड़ी अम्दरि कीड़ा होइि ॥ जेते दाणे अन्न के जीआ बाझु न कोइि ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइि ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइि ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइि ॥१॥ मः १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर तटअ पर

धन रूपु ॥ कन्नी सूतकु कमनि पै लाइितबारी खाहि ॥ नानक ह्मसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥ मः १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइि ॥ जम्मणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइि ॥ खाणा पीणा पवित्रभ है दितोनु रिजकु सम्बाहि ॥ नानक जिन्ी गुरमुखि बुझिआ तिन्ा सूतकु नाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥ सलोकु मः १ ॥ पहिला सुचा आपि होइि सुचै बैठा आइि ॥ सुचे अगै

रखिओनु कोइि न भिटिओ जाइि ॥
सुचा होइि कै जेविआ लगा पड़णि
सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु
एहु लगा दोखु ॥ अन्नु देवता पाणी
देवता बैसम्तरु देवता लूणु पम्जवा
पाइिआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु
पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका
पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न
ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक
एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि
॥१॥ मः १ ॥ भम्डि जम्मीऐ भम्डि
निम्मीऐ भम्डि मम्गणु वीआहु ॥
भम्डहु होवै दोसती भम्डहु चलै राहु
॥ भम्डु मुआ भम्डु भालीऐ भम्डि
होवै बम्धानु ॥ सो किउ मम्दा
आखीऐ जितु जम्महि राजान ॥
भम्डहु ही भम्डु ऊपजै भम्डै बाझु न

कोड़ि ॥ नानक भम्डै बाहरा एको
सचा सोड़ि ॥ जितु मुखि सदा
सालाहीअै भागा रती चारि ॥ नानक
ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥
पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु
नाही सो चुणि कढीअै ॥ कीता आपो
आपणा आपे ही लेखा सम्ढीअै ॥ जा
रहणा नाही अैतु जगि ता काइतु
गारबि ह्मढीअै ॥ मम्दा किसै न
आखीअै पड़ि अखरु एहो बुझीअै ॥
मूरखै नालि न लुझीअै ॥१६॥ सलोकु
मः १ ॥ नानक फिकै बोलिअै तनु मनु
फिका होइ ॥ फिको फिका सदीअै
फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह
सटीअै मुहि थुका फिके पाइ ॥
फिका मूरखु आखीअै पाणा लहै
सजाइ ॥१॥ मः १ ॥ अम्दरहु झूठे

पैज बाहरि दुनीआ अम्दरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन् पटु अम्दरि बाहरि गुदड़ु ते भले सम्सारि ॥ तिन् नेहु लगा रब सेती देखन्े वीचारि ॥ रम्गि हसहि रम्गि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मम्गा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्ा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ २॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥

आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चम्गै चम्गा करि मन्ने मम्दै मम्दा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुम्ढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मम्दा मूलि न कीचई दे लम्मी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥ सलोकु

महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥ महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मम्गै अम्मटतु वेखहु एहु निआउ ॥२॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अम्दरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु

॥ पाणी अम्दरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥ महला २ ॥ होइि इिआणा करे कम्मु आणि न सकै रासि ॥ जे इिक अध चम्गी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइि ॥ हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइि ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अम्दरि पाइि ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइि ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥ महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु

भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नानक अम्त न जापन्ी हरि ता के पारावार ॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्ा गली जम्जीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥ सलोकु मः १ ॥ आपे भाँडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ी दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्ि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्ि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिन्ा सवारे नानका जिन् कउ नदरि करे ॥१॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु

विचि जम्त उपाइि कै देखै थापि उथापि ॥ किस नो कहीअै नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥ पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइि ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु सम्बाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिन्नै पाइि ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइि ॥ सो करे जि तिसै रजाइि ॥२४॥१॥ सुधु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उतार खासे दसखत का

पातिसाही १०॥

अकाल पुरख की रच्छा हम नै ॥ सरब लोह दी रच्छिआ हम नै ॥ सरब काल जी दी रच्छिआ हम नै ॥ सरब लोह जी दी सदा रच्छिआ हम नै ॥

आगै लिखारी के दसखत

त्वप्रसादि ॥ चउपई ॥

प्रणवो आदि एकम्कारा ॥ जलि थलि महीअलि कीओ पसारा ॥ आदि पुरखु अबिगत अबिनासी ॥ लोक चतुरदस जोति प्रकासी ॥१॥ हसति कीट के बीच समाना ॥ राव रम्क जिह इक सर जाना ॥ अद्वै अलख पुरखु अबिगामी ॥ सभ घट घट के अंतरजामी ॥२॥ अलख रूप अछै

अनभेखा ॥ राग रम्ग जिह रूप न रेखा ॥ बरन चिहन सबहूम्र ते निआरा ॥ आदि पुरखु अद्वै अबिकारा ॥३॥ बरन चिहन जिह जाति न पाता ॥ सत्रु मित्र जिह तात न माता ॥ सभ ते दूरि सभन ते नेरा ॥ जलि थलि महीअलि जाहि बसेरा ॥४॥ अनहद रूप अनाहद बानी ॥ चरन सरनि जिह बसति भवानी ॥ ब्रहमा बिसनु अंतु नही पाइओ ॥ नेति नेति मुख चार बताइओ ॥५॥ कोटि इंद उपइंद्र बनाए ॥ ब्रहमा रुद्र उपाइ खपाए ॥ लोक चतुरदस खेल रचाइओ ॥ बहुर आप ही बीच मिलाइओ ॥६॥ दानव देव फनिम्द अपारा ॥ गम्ध्रब जच्छ रचे सुभ चारा ॥ भूत भविख भवान कहानी ॥ घट घट के पट पट की

जानी ॥७॥ तात मात जिह जाति न पाता ॥ एक रम्ग काहू नही राता ॥ सरब जोति के बीच समाना ॥ सभहूम्र सरब ठौर पहिचाना ॥८॥ काल रहत अन काल सरूपा ॥ अलख पुरखु अविगत अवधूता ॥ जाति पाति जिह चिहन न बरना ॥ अबिगत देव अछै अनभरमा ॥६॥ सभ को काल सभन को करता ॥ रोग सोग दोखन को हरता ॥ एक चित्त जिह इक छिन धिआइओ ॥ काल फास के बीच न आइओ ॥१०॥

त्वप्रसादि ॥ कबित्त ॥

कतहूम्र सुचेत हुइ कै चेतना को चारु कीओ कतहूम्र अचिंत हुइ कै सोवत अचेत हो ॥ कतहूम्र भिखारी हुइ कै मागत फिरत भीख कहूम्र महादानि

हुइ कै मागिओ धन देत हो ॥ कहूँ महाराजन को दीजत अनन्त दान कहूँ महाराजन ते छीन छिति लेत हो ॥ कहूँ बेद रीति कहूँ ता सिउ बिप्रीत कहूँ त्रिगुन अतीत कहूँ सुरगुन समेत हो ॥१॥११॥

कहूँ जछ गन्ध्रब उरग कहूँ बिदिआधर कहूँ भए किंनर पिसाच कहूँ प्रेत हो ॥ कहूँ हुइ कै हिंदूआ गाइत्री को गुपत जपिओ कहूँ हुइ कै तुरका पुकारे बाँग देत हो ॥ कहूँ कोक काबि हुइ पुरान को पड़त मत कतहूँ कुरान को निदान जान लेत हो ॥ कहूँ बेद रीति कहूँ ता सिउ बिप्रीति कहूँ त्रिगुन अतीत कहूँ सुरगुन समेत हो ॥२॥१२॥

कहूँ देवतान के दिवान मै बिराजमान

कहूंम दानवान को गुमान मत देत हो ॥ कहूंम इंद्र राजा को मिलत इंद्र पदवी सी कहूंम इंद्र पदवी छपाइ छीन लेत हो ॥ कतहूंम बिचार अबिचार को बिचारत हो कहूंम निज नारि पर नारि के निकेत हो ॥ कहूंम बेद रीत कहूंम ता सिउ बिप्रीत कहूंम त्रिगुन अतीत कहूंम सुरगुन समेत हो ॥३॥१३॥

कहूंम ससत्र धारी कहूंम बिदिआ के बिचारी कहूंम मारुत अहारी कहूंम नार के निकेत हो ॥ कहूंम देव बानी कहूंम सारदा भवानी कहूंम मंगला म्रिड़ानी कहूंम सिआम कहूंम सेत हो ॥ कहूंम धरम धामी कहूंम सरब ठौर गामी कहूंम जती कहूंम कामी कहूंम देत कहूंम लेत हो ॥ कहूंम बेद रीति कहूंम

ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥४॥१४॥

कहूं जटा धारी कहूं कम्ठी धरे ब्रहम चारी कहूं जोग साधी कहूं साधना करत हो ॥ कहूं कानफारे कहूं डंडी हुइ पधारे कहूं फूक फूक पावन कउ प्रिथी पै धरत हो ॥ कतहूं सिपाही हुइ कै साधत सिलाहन को कहूं छत्री हुइकै अरि मारत मरत हो ॥ कहूं भूमि भार को उतारत हो महाराज कहूं भव भूतन की भावना भरत हो ॥५॥१५॥

कहूं गीत नाद के निदान को बतावत हो कहूं न्रितकारी चित्रकारी के निधान हो ॥ कतहूं पयूख हुइ कै पीवत पिवावत हो कतहूं मयूख ऊख कहूं मद पान हो ॥ कहूं महा सूर

हुइ कै मारत मवासन को कहूम्
महादेव देवतान के समान हो ॥ कहूम्
महा दीन कहूम् द्रब के अधीन कहूम्
बिदिआ मै प्रबीन कहूम् भूमि कहूम्
भानु हो ॥६॥१६॥

कहूम् अकलम्क कहूम् मारत मयम्क
कहूम् पूरन प्रजम्क कहूम् सुधता की
सार हो ॥ कहूम् देव धरम कहूम्
साधना के हरम कहूम् कुतसित
कुकरम कहूम् धरम के प्रकार हो ॥
कहूम् पउनाहारी कहूम् बिदिआ के
बिचारी कहूम् जोगी जती ब्रहम चारी
नर कहूम् नारि हो ॥ कहूम् छत्र धारी
कहूम् छाला धरे छैल भारी कहूम्
छकवारी कहूम् छल के प्रकार हो
॥७॥१७॥

कहूम् गीत के गवय्या कहूम् बेनु के

बजय्या कहूम न्रित के नचय्या कहूम नर को अकार हो ॥ कहूम बेद बानी कहूम कोक की कहानी कहूम राजा कहूम रानी कहूम नारि के प्रकार हो ॥ कहूम बेनु के बजय्या कहूम धेनु के चरय्या कहूम लाखन लवय्या कहूम सुंदर कुमार हो ॥ सुधता की सान हो कि सम्तन के प्रान हो कि दाता महादान हो न्रिदोखी निरम्कार हो ॥८॥१८॥

निरजुर निरूप हो कि सुंदर सरुप हो कि भूपन के भूप हो कि दाता महादान हो ॥ प्रान के बचय्या दूध पूत के दिवय्या रोग सोग के मिटय्या किधौ मानी महा मान हो ॥ बिदिआ के बिचार हो कि अद्वै अवतार हो कि सिधता की सूरति हो कि सुधता की

सान हो ॥ जोबन के जाल हो कि काल हूम के काल हो कि सत्रन के सूल हो कि मित्रन ु के प्रान हो ॥९॥१९॥
कहूम ब्रहम बाद कहूम बिदिआ को बिखाद कहूम नाद को ननाद कहूम पूरन भगत हो ॥ कहूम बेद रीति कहूम बिदिआ की प्रतीति कहूम नीति औ अनीति कहूम ज्वाला सी जगत हो ॥ पूरन प्रताप कहूम इकाँती को जाप कहूम ताप को अताप कहूम जोग ते डिगत हो ॥ कहूम बर देत कहूम छल सिउ छिनाइ लेत सरब काल सरब ठौर एक से लगत हो ॥१०॥२०॥
त्व प्रसादि ॥ सवये ॥
स्रावग सुध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥ सूर

सुरारदन सुध सुधादिक सम्त समूह अनेक मती के ॥ सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रान पती के ॥ स्री भगवान की भाइ क्रिपा हूम ते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥२१॥

माते मतम्ग जरे जर सम्गि अनूप उतम्ग सुरम्ग सवारे ॥ कोट तुरम्ग कुरम्ग से कूदत पउन के गउन कउ जात निवारे ॥ भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ॥ एते भए तो कहा भए भूपति अंत को नागे ही पाइ पधारे ॥२॥२२॥

जीत फिरे सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे ॥ गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत ही हय राज हजारे ॥

भूत भविख भवान के भूपति कउन गनै नही जात बिचारे ॥ स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंतके धाम सिधारे ॥३॥२३॥

तीरथ नहान दइआ दम दान सु सम्जम नेम अनेक बिसेखै ॥ बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखै ॥ पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजारक देखै ॥ स्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ॥४॥२४॥

सुध सिपाह दुरम्त दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ॥ भारी गुमान भरे मन मै करि परबत पंख हलै न हलैंगे ॥ तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतम्गन मान मलैंगे ॥ स्री पति स्री भगवान क्रिपा बिनु तिआग जहानु

निदान चलैंगे ॥५॥२५॥
बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछय्या ॥ तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलय्या ॥ गाड़े गड़ान के तोड़न हार सु बातन ही चक चार लवय्या ॥ साहिब स्री सभ को सिर नाइकु जाचिक अनेक सु एक दिवय्या ॥६॥२६॥
दानव देव फनिन्द निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे ॥ जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ॥ पुंन प्रतापन बाढत जै धुनि पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥ साध समूह प्रसन्न फिरैं जग सत्रु सभै अविलोक चपैंगे ॥७॥२७॥
मानव इंद्र गजिन्द्र नराधिप जौन

त्रिलोक को राज करैंगे ॥ कोट सनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे ॥ ब्रहम महेसुर बिसनु सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे ॥ जे नर स्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥२८॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठ रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥ न्हात फिरिओ लीए सात समुंद्रन लोक गइओ परलोक गवाइओ ॥ बासु कीओ बिखिआन सो बैठ कै ऐसे ही ऐस सु बैस बिताइओ ॥ साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेमु कीओ तिनही प्रभु पाइओ ॥९॥२९॥

काहू लै पाहन पूज धरो सिर काहू लै लिंगु गरे लटकाइओ ॥ काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह

को सीस निवाइओ ॥ कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान कउ पूजन धाइओ ॥ कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जगु स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥३०॥

त्व प्रसादि ॥ तोमर छन्द ॥

हरि जनम मरन बिहीन ॥ दस चार चार प्रबीन ॥ अकलम्क रूप अपार ॥ अनछिज्ज तेज उदार ॥१॥३१॥ अनभिज्ज रूप दुरम्त ॥ सभ जगत भगत महम्त ॥ जस तिलक भू भ्रित भानु ॥ दस चार चार निधान ॥२॥३१॥ अकलम्क रूप अपार ॥ सभ लोक सोक बिदार ॥ कलि काल करम बिहीन ॥ सभ करम धरम प्रबीन ॥३॥३३॥ अनखंड अतुल प्रताप ॥ सभ थापिओ जिह थाप ॥ अनखेद

भेद अछेद ॥ मुखचार गावत बेद ॥४॥३४॥ जिह नेति निगम कहम्त ॥ मुखचार बकत बिअंत ॥ अनभिज्ज अतुल प्रताप ॥ अन खंड अमित अथाप ॥५॥३५॥ जिह कीन जगत पसार ॥ रचिओ बिचार बिचार ॥ अनम्त रूप अखंड ॥ अतुल प्रताप प्रचम्ड ॥६॥३६॥ जिह अंड ते ब्रहमंड ॥ कीने सु चौदह खंड ॥ सभ कीन जगत पसार ॥ अबियकत रूप उदार ॥७॥३७॥ जिह कोटि इंद्र न्रिपार ॥ कई ब्रहम बिसन बिचार ॥ कई राम क्रिसन रसूल ॥ बिनु भगति को न कबूल ॥८॥३८॥ कइ सिंध बिंध नगिम्द्र ॥ कइ मच्छ कच्छ फनिम्द ॥ कई देव आदि कुमार ॥ कइ क्रिसन बिसनु अवतार ॥९॥३९॥ कइ इंद्र

बार बुहार ॥ कई बेद औ मुखचार ॥
कई रूद्द्र छुद्द सरूप ॥ कइ राम
क्रिसन अनूप ॥१०॥४०॥ कई कोक
काबि भणंत ॥ कई बेद भेद कहम्त
॥ कई सासत्र सिंम्रिति बखान ॥
कहूम्‍ कथत ही सु पुरान ॥११॥४१॥
कई अगनिहोत्र करम्त ॥ कई उरध
ताप दुरम्त ॥ कई उरध बाहु
सम्‍निआस ॥ कहूम्‍ जोग भेस उदास
॥१२॥४२॥ कहूम्‍ निवली करम करम्त
॥ कहूम्‍ पउन अहार दुरम्त ॥ कहूम्‍
तीरथ दान अपार ॥ कहूम्‍ जग करम
उदार ॥१३॥४३॥ कहूम्‍ अगनिहोत्र
अनूप ॥ कहूम्‍ निआइ राज बिभूति ॥
कहूम्‍ सासत्र सिंम्रिति रीति ॥ कहूम्‍
बेद सिउ बिप्रीति ॥१४॥४४॥ कई
देस देस फिरम्त ॥ कई एक ठौर

इसथंत ॥ कहूं करत जल महि जाप ॥ कहूं सहत तन पर ताप ॥१५॥४५॥ कहूं बास बनहि करंत ॥ कहूं ताप तनहि सहंत ॥ कहूं ग्रिहसत धरम अपार ॥ कहूं राज रीति उदार ॥१६॥४६॥ कहूं रोग रहत अभरम ॥ कहूं करम करत अकरम ॥ कहूं सेख ब्रहम सरूप ॥ कहूं नीति राज अनूप ॥१७॥४७॥ कहूं रोग सोग बिहीन ॥ कहूं एक भगति अधीन ॥ कहूं रंक राज कुमार ॥ कहूं बेद बिआस अवतार ॥१८॥४८॥ कई ब्रहम बेद रटंत ॥ कइ सेख नाम उचरंत ॥ बैराग कहूं संनिआस ॥ कहूं फिरत रूप उदास ॥१९॥४९॥ सभ करम फोकट जान ॥ सभ धरम निहफल मान ॥

बिन एक नाम अधार ॥ सभ करम भरम बिचार ॥२०॥५०॥

त्व प्रसादि ॥ लघु नराज छम्द ॥

जले हरी ॥ थले हरी ॥ उरे हरी ॥ बने हरी ॥१॥५१॥ गिरे हरी ॥ गुफे हरी ॥ छिते हरी ॥ नभे हरी ॥२॥५२॥ इहाँ हरी ॥ ऊहाँ हरी ॥ जिमी हरी ॥ जमा हरी ॥३॥५३॥ अलेख हरी ॥ अभेख हरी ॥ अदोख हरी ॥ अद्वैख हरी ॥४॥५४॥ अकाल हरी ॥ अपाल हरी ॥ अछेद हरी ॥ अभेद हरी ॥५॥५५॥ अजम्त्र हरी ॥ अमंत्र हरी ॥ सु तेज हरी ॥ अतम्त्र हरी ॥६॥५६॥ अजाति हरी ॥ अपाति हरी ॥ अमित्र हरी ॥ अमात हरी ॥७॥५७॥ अरोग हरी ॥ असोग हरी ॥ अभरम हरी ॥ अकरम हरी

॥८॥५८॥ अजै हरी ॥ अभै हरी ॥
अभेद् हरी ॥ अछेद् हरी ॥६॥५६॥
अखंड हरी ॥ अभम्ड हरी ॥ अडंड
हरी ॥ प्रचम्ड हरी ॥१०॥६०॥ अतेव
हरी ॥ अभेव हरी ॥ अजेव हरी ॥
अछेव हरी ॥११॥६१॥ भजो हरी ॥
थपो हरी ॥ तपो हरी ॥ जपो हरी
॥१२॥६२॥ जलस तुही ॥ थलस तुही
॥ नदिस तुही ॥ नदस तुही
॥१३॥६३॥ ब्रिछस तुही ॥ पतस तुही
॥ छितस तुही ॥ उरधस तुही
॥१४॥६४॥ भजस तुअं ॥ भजस तुअं
॥ रटम तुअं ॥ ठटस तुअं ॥१५॥६५॥
जिमी तुही ॥ जमा तुही ॥ मकी तुही
॥ मका तुही ॥१६॥६६॥ अभू तुही ॥
अभै तुही ॥ अछू तुही ॥ अछै तुही
॥१७॥६७॥ जतस तुही ॥ ब्रतस तुही

॥ गतस तुही ॥ मतस तुही ॥१८॥६८॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥१९॥६९॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥२०॥७०॥

त्व प्रसादि ॥ कबित्त ॥

खूक मलहारी गज गदहा बिभूति धारी गिदूआ मसान बास करिओ ई करत है ॥ घुघू मट बासी लगे डोलत उदासी म्रिग तरवर सदीव मोन साधे ई मरत है ॥ बिंद के सधय्या ताहि हीज की बडय्या देत बंदरा सदीव पाइ नागे ई फिरत है ॥ अंगना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन एक गिआन के बिहीन छीन कैसे कै तरत है ॥१॥७१॥

भूत बनचारी छिति छउना सभै

दूधाधारी पौन के अहारी सु भुजम्ग जानीअतु है ॥ त्रिण के भछय्या धन लोभ के तजय्या ते तो गऊअन के जय्या ब्रिख भय्या मानीअतु है ॥ नभ के उडय्या ताहि पंछी की बडय्या देत बगुला बिड़ाल ब्रिक धिआनी ठानीअतु है ॥ जेते बडे गिआनी तिनो जानी पै बखानी नाहि ऐसे न प्रपंच मन भूलि आनीअतु है ॥२॥७२॥

भूमि के बसय्या ताहि भू चरी के जय्या कहै नभ के उडय्या सो चिरय्या कै बखानीऐ ॥ फल के भछय्या ताहि बाँदरी के जय्या कहै आदिस फिरय्या ते तो भूत कै पछानीऐ ॥ जल के तरय्या को गम्गेरी सी कहत जग आग के भछय्या सो चकोर सम मानीऐ ॥ सूरज सिवय्या

ताहि कौल की बडय्या देत चम्दमा सिवय्या कौ कवी कै पहिचानीऐ ॥३॥७३॥

नाराइण क्छ म्छ तिंदूआ कहत सभ कउल नाभि कउल जिह ताल मै रहतु है ॥ गोपी नाथ गूजर गुपाल सभै धेनुचारी रिखी केस नाम कै महम्त लहीअतु है ॥ माधव भवर औ अटेरू को कन्हय्या नाम कम्स को बधय्या जम दूत कहीअतु है ॥ मूड़ रूड़ पीटत न गूड़ता को भेद पावै पूजत न ताहि जा के राखे रहीअतु है ॥४॥७४॥

बिस्नपाल जगत काल दीन दिआल बैरी साल सदा प्रतिपाल जम जाल ते रहत है ॥ जोगी जटाधारी सती साचे बडे ब्रहमचारी धिआन काज भूख पिआस देह पै सहत है ॥ निउली

करम जल पावक पवन होम अधो मुख एक पाइ ठाढे न बहत है ॥ मानव फनिम्द देव दानव न पावै भेद बेद औ कतेब नेति नेति कै कहत है ॥५॥७५॥

नाचत फिरत मोर बादर करत घोर दामनी अनेक भाउ करिओ ई करत है ॥ चम्द्रमा ते सीतल न सूरज ते तपत तेज इंद सो न राजा भव भूमि को भरत है ॥ सिव से तपसी आदि ब्रहमा से न बेदुचारी सनत कुमार सी तपस्सिआ न अनत है ॥ गिआन के बिहीन काल फास के अधीन सदा जुगन की चउकरी फिराए ई फिरत है ॥६॥७६॥

एक सिव भए एक गए एक फेर भए राम चम्द्र क्रिसन के अवतार भी

अनेक है ॥ ब्रहमा अरु बिसन केते बेद औ पुरान केते सिंम्रिति समूहन के हुइ हुइ बितए है ॥ मोन दी मदार केते असुनी कुमार केते अंसा अवतार केते काल बस भए है ॥ पीर औ पिकाँबर केते गने न परत एते भूमि ही ते हुइ कै फेरि भूमि ही मिलए है ॥७॥७७॥

जोगी जती ब्रहमचारी बडे बडे छत्रधारी छत्र ही की छाया कई कोस लौ चलत है ॥ बडे बडे राजन के दाबत फिरत देस बडे बडे राजन के दप को दलत है ॥ मान से महीप औ दिलीप कैसे छत्रधारी बडो अभिमान भुज दम्ड को करत है ॥ दारा से दिलीसर द्रुजोधन से मान धारी भोग भोग भूमि अंत भूमि मै मिलत है

॥८॥७८॥

सिजदे करे अनेक तोपची कपट भेस पोसती अनेक दा निवावत है सीस कौ ॥ कहा भइओ मल्ल जौ पै काढत अनेक डंड सो तौ न डंडौत असटाँग अथितीस कौ ॥ कहा भइओ रोगी जौ पै डारिओ रहिओ उरध मुख मन ते न मूंड निहुराइओ आदि इस कौं ॥ कामना अधीन सदा दामना प्रबीन एक भावना बिहीन कैसे पावै जगदीस कौ ॥९॥७९॥

सीस पटकत जा के कान मै खजूरा धसै मूंड छटकत मित्र पुत्र हूम के सोक सों ॥ आक को चरय्या फल फूल को भछय्या सदा बन को भ्रमय्या और दूसरो न बोक सों ॥ कहा भयो भेड जो घसत सीस ब्रिछन सों माटी

को भछय्या बोल पूछ लीजै जोक सों ॥ कामना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन एक भावना बिहीन कैसे भेटै परलोक सों ॥१०॥८०॥

नाचिओ इ करत मोर दादर करत ं सोर सदा घनघोर घन करिओ ई करत हैं॥ एक पाइ ठाढे सदा बन मै रहत ब्रिछ फूक फूक पाव भूमि स्रावग धरत हैं॥ पाहन अनेक जुग एक ठउर बासु करै काग और चील देस देस बिचरत हैं॥ गिआन के बिहीन महा दान मै न हूजै लीन भावना बिहीन दीन कैसे कै तरत हैं॥११॥८१॥

जैसे एक स्वाँगी कहूम जोगीआ बैरागी बनै कबहूम समनिआस भेस बन कै दिखावई ॥ कहूम पउनाहारी कहूम बैठे लाइ तारी कहूम लोभ की खुमारी

सो ं अनेक गुन गावई ॥ कहूं
ब्रहमचारी कहूं हाथ पै लगावै बारी
कहूं डंड धारी हुइ कै लोगन भ्रमावई
॥ कामना अधीन परिओ नाचत है
नाचन सो गिआन के बिहीन कैसे
ब्रहम लोक पावई ॥१२॥८२॥
पंच बार गीदर पुकारे परे सीत काल
कुंचर औ गदहा अनेक दा पुकार ही
॥ कहा भइओ जो पै कलवत्र लीओ
कासी बीच चीर चीर चोरटा कुठारन
सो मारही ॥ कहा भइओ फासी डारि
बूडिओ जड़ गंग धार डारि डारि फास
ठग मारि मारि डारही ॥ डूबे नरक
धार मूड़ गिआन के बिना बिचार
भावना बिहीन कैसे गिआन को
बिचार ही ॥१३॥८३॥
ताप के सहे ते जौ पै पाईऐ अताप

नाथ तापना अनेक तन घाइल सहत हैं॥ जाप के कीए ते जौ पै पायत अजाप देव पूदना सदीव तुही तुही उचरत हैं॥ नभ के उडे ते जौ पै नाराइण पायत अनल अकास पंछी डोलबो करत हैं॥ आग मै जरे ते गति राँड की परत करि पताल के बासी किउ भुजम्ग न तरत हैं॥१४॥८४॥

कोऊ भइओ मुंडीआ सम्निआसी कोऊ जोगी भइओ कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥ हिंदू औ तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥ करता करीम सोइ राजक रहीम ओई दूसरो न भेद कोइ भूलि भ्रम मानबो ॥ एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक एक ही सरूप सबै एकै

जोति जानबो ॥१५॥८५॥
देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज
एई मानस सबै एक पै अनेक को
भ्रमाउ है ॥ देवता अदेव जच्छ गन्ध्रब
तुरक हिंदू निआरे निआरे देसन के
भेस को प्रभाउ है ॥ एकै नैन एकै
कान एकै देह एकै बान खाक बाद
आतस औ आब को रलाउ है ॥ अलह
अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है
॥१६॥८६॥
जैसे एक आग ते कनूका कोटि आग
उठे निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग
मै मिलाहिंगे ॥ जैसे एक धूरि ते
अनेक धूरि पूरत है धूरि के कनूका
फेर धूरि ही समाहिंगे ॥ जैसे एक नद
ते तरम्ग कोटि उपजत हैं पानि के

तरम्ग सबै पानि ही कहाहिंगे ॥ तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१७॥८७॥

केते कच्छ मच्छ केते उन कउ करत भच्छ केते अच्छ वच्छ हुइ सपच्छ उड्ड जाहिंगे ॥ केते नभ बीच अच्छ पच्छ कउ करैंगे भच्छ केतक प्रतच्छ हुइ पचाइ खाहि जाहिंगे ॥ जल कहा थल कहा गगन के गउन कहा काल के बनाए सबै काल ही चबाहिंगे ॥ तेज जिउ अतेज मै अतेज जैसे तेज लीन ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१८॥८८॥

कूकत फिरत केते रोवत मरत केते जल मै डुबत केते आग मै जरत हैं॥ केते गम्ग बासी केते मदीना मका निवासी

केतक उदासी के भ्रमाए ई फिरत हैं॥ करवत सहत केते भूमि मै गडत केते सूआ पै चढ़त केते दूख कउ भरत हैं॥ गैन मै उडत केते जल मै रहत केते गिआन के बिहीन जक जारे ई मरत हैं॥१६॥८६॥

सोध हारे देवता बिरोध हारे दानो बडे बोध हारे बोधक प्रबोध हारे जापसी ॥ घस हारे चम्दन लगाइ हारे चोआचार पूज हारे पाहन चढाइ हारे लापसी ॥ गाह हारे गोरन मनाइ हारे मड़ी मट लीप हारे भीतन लगाइ हारे छापसी ॥ गाइ हारे गम्ध्रब बजाइ हारे किंनर सब पच हारे पंडित तपंत हारे तापसी ॥२०॥९०॥

त्व प्रसादि ॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

न रागम न रम्गम न रूपं न रेखं ॥ न मोहम न क्रोहम न दोहम न द्वैखं ॥ न करमं न भरमं न जनमं न जातम ॥ न मित्रं न सत्रं न पित्रं न मातम ॥१॥६१॥

न नेहम न गेहम न कामं न धामं ॥ न पुत्रम न मित्रम न सत्रम न भामं ॥ अलेखं अभेखं अजोनी सरूपं ॥ सदा सिद्धिदा बुद्धिदा ब्रिध रूपं ॥२॥६२॥

नही जानि जाइ कछू रूप रेखं ॥ कहा बास ता को फिरै कउन भेखं ॥ कहा नाम ता को कहा कै कहावै ॥ कहा कै बखानो कहै मै न आवै ॥३॥६३॥

न रोगम न सोगम न मोहम न मातम ॥ न करमं न भरमं न जनमं न जातम ॥ अद्वैखं अभेखं अजोनी सरूपे ॥ नमो

एक रूपे नमो एक रूपे ॥४॥६४॥
परेअं परा परम प्रगिआ प्रकासी
अछेदम अछै आदि अद्वै अबिनासी ॥
न जातम न पातम न रूपं न रम्गे ॥
नमो आदि अभम्गे नमो आदि अभम्गे
॥५॥६५॥
किते क्रिसन से कीट कोटै उपाए ॥
उसारे गड़े फेरि मेटे बनाए ॥ अगाधे
अभै आदि अद्वै अबिनासी ॥ प्रेअं परा
परम पूरन प्रकासी ॥६॥६६॥
न आधं न बिआधं अगाधं सरूपे ॥
अखंडित प्रताप आदि अछै बिभूते ॥
न जनमं न मरनम न बरनम न बिआधे
॥ अखंडे प्रचम्डे अदम्डे असाधे
॥७॥६७॥
न नेहम न गेहम सनेहम सनाथे ॥
उदम्डे अमंडे प्रचम्डे प्रमाथे ॥ न जाते

न पाते न सत्रे न मित्रे ॥ सु भूते भविखे भवाने अचित्रे ॥८॥९८॥

न राय न रम्कम न रूपं न रेखं ॥ न लोभम न छोभम अभूतम अभेखं ॥ न स्त्रं न मित्रं न नेहम न गेहम ॥ सदैवम सदा सरब सरबत्र सनेहम ॥९॥९९॥

न कामं न करोधं न लोभम न मोहम ॥ अजोनी अछै आदि अद्वै अजोहम ॥ न जनमं न मरनम न बरनम न बिआधं ॥ न रोगम न सोगम अभै निर बिखाधं ॥१०॥१००॥

अछेदम अभेदम अकरमं अकालम ॥ अखंडं अभम्डं प्रचम्डं अपालम ॥ न तातम न मातम न जातम न कायं ॥ न नेहम न गेहम न भरमं न भायं ॥११॥१०१॥

न रूपं न भूपं न कायं न करमं ॥ न

त्रासम न प्रासम न भेदम न भरमं ॥
सदैवम सदा सिद्ध ब्रिधं सरूपे ॥
नमो एक रूपे नमो एक रूपे
॥१२॥१०२॥
त्रिउकतम प्रभा आदि अनउकतम
प्रतापे ॥ अजुगतम अछै आदि अविकते
अथापे ॥ बिभुगतम अछै आदि अछै
सरूपे ॥ नमो एक रूपे नमो एक रूपे
॥१३॥१०३॥
न नेहम न गेहम न सोकम न साकम ॥
परेअं पवित्रं पुनीतम अताकम ॥ न
जातम न पातम न मित्रं न मंत्रे ॥ नमो
एक तम्त्रे नमो एक तम्त्रे ॥१४॥१०४॥
न धरमं न भरमं न सरमं न साके ॥ न
बरमं न चरमं न करमं न बाके ॥ न
सत्रं न मित्रं न पुत्रं सरूपे ॥ नमो
आदि रूपे नमो आदि रूपे

॥१५॥१०५॥
कहूं कम्ज के मंज के भरम भूले ॥
कहूं रम्क के राज के धरम अलूले ॥
कहूं देस के भेस के धरम धामे ॥
कहूं राज के साज के बाज तामे
॥१६॥१०६॥
कहूं अच्छ के पच्छ के सिद्ध साधे
॥ कहूं सिद्ध के बुद्धि के ब्रिद्ध
लाधे ॥ कहूं अम्ग के रम्ग के सम्गि
देखे ॥ कहूं जम्ग के रम्ग के रम्ग
पेखे ॥१७॥१०७॥
कहूं धरम के करम के हरम जाने ॥
कहूं धरम के करम के भरम माने ॥
कहूं चारु चेसटा कहूं चित्र रूपम ॥
कहूं परम प्रगिआ कहूं सरब भूपं
॥१८॥१०८॥
कहूं नेह ग्रेहम कहूं देह दोखं ॥

कहूं अउखधी रोग के सोक सोखं ॥
कहूं देव बिदिआ कहूं दैत बानी ॥
कहूं जच्छ गन्ध्रब किंनर कहानी
॥१६॥१०६॥
कहूं राजसी सातकी तामसी हो ॥
कहूं जोग बिदिआ धरे तापसी हो ॥
कहूं रोग हरता कहूं जोग जुगतं ॥
कहूं भूमि की भुगत मै भरम भुगतं
॥२०॥११०॥
कहूं देव कंनिआ कहूं दानवी हो ॥
कहूं जच्छ बिदिआधरे मानवी हो ॥
कहूं राजसी हो कहूं राज कंनिआ
॥ कहूं स्रिसटि की प्रिसट की रिसट
पंनिआ ॥२१॥१११॥
कहूं बेद बिदिआ कहूं बिओम बानी
॥ कहूं कोक की काबि कथै कहानी
॥ कहूं अद्द सारं कहूं भ॒ द्द्र

रूपं ॥ कहूं मद्द बानी कहूं छिद्द सरूपं ॥२२॥११२॥

कहूं बेद बिदिआ कहूं काबि रूपं ॥ कहूं चेसटा चार चित्रं सरूपं ॥ कहूं परम पुरान को पार पावै ॥ कहूं बैठ कुरान के गीत गावै ॥२३॥११३॥

कहूं सुद्ध सेखं कहूं ब्रहम धरमं ॥ कहूं ब्रिद्ध अवसथा कहूं बाल करमं ॥ कहूं जुआ सरूपं जरा रहत देहं ॥ कहूं नेह देहं कहूं तिआग ग्रेहं ॥२४॥११४॥

कहूं जोग भोगं कहूं रोग रागं ॥ कहूं रोग रहता कहूं भोग तिआगं ॥ कहूं राज साजं कहूं राज रीतं ॥ कहूं पूरन प्रग्गिआ कहूं परम प्रीतं ॥२५॥११५॥

कहूं आरबी तोरकी पारसी हो ॥

कहूम पहलवी पसतवी सम्सक्रिती हो ॥ कहूम देस भाखिआ कहूम देव बानी ॥ कहूम राज बिदिआ कहूम राजधानी ॥२६॥११६॥

कहूम मंत्र बिदिआ कहूम तम्त्र सारम ॥ कहूम जम्त्र रीतम कहूम ससत्र धारम ॥ कहूम होम पूजा कहूम देव अरचा ॥ कहूम पिंगुलाचारणी गीत चरचा ॥२७॥११७॥

कहूम बीन बिदिआ कहूम गान गीतम ॥ कहूम मलेछ भाखिआ कहूम बेद रीतम ॥ कहूम न्रित बिदिआ कहूम नाग बानी ॥ कहूम गारड़ू गूढ़ कथै कहानी ॥२८॥११८॥

कहूम अच्छरा पच्छरा मच्छरा हो ॥ कहूम बीर बिदिआ अभूतम प्रभा हो ॥ कहूम छैल छालाधरे छत्र धारी ॥ कहूम

राज साजम्‍ धिराजाधिकारी ॥२६॥११६॥
नमो नाथ पूरे सदा सिद्ध दाता ॥
अछेदी अछै आदि अद्वै बिधाता ॥ न
त्रसतम्‍ न ग्रस्तम्‍ समसतम्‍ सरूपे ॥
नमसतम्‍ नमसतम्‍ तुअसतम्‍ अभूते
॥३०॥१२०॥

त्वप्रसादि ॥ पाधड़ी छम्द ॥

अबयकत तेज अनभउ प्रकास ॥
अच्छै सरूप अद्वै अनास ॥ अनतुट्ट
तेज अनखुट्ट भम्डार ॥ दाता दुरम्त
सरबं प्रकार ॥१॥१२१॥
अनभूत तेज अनछिज्ज गात ॥ करता
सदीव हरता सनात ॥ आसन अडोल
अनभूत करम ॥ दाता दइआल
अनभूत धरम ॥२॥१२२॥
जिह सत्रु मित्र नही जनम जाति ॥
जिह पुत्र भ्रात नही मित्र मात ॥ जिह

करम भरम नही धरम धिआन ॥ जिह नेह गेह नही बिओत बान ॥३॥१२३॥
जिह जाति पाति नही सत्रु मित्र ॥ जिह नेह गेह नही चिहन चित्र ॥ जिह रंग रुप नही राग रेख ॥ जिह जनम जाति नही भरम भेख ॥४॥१२४॥
जिह करम भरम नही जाति पाति ॥ नही नेह गेह नही पित्र मात ॥ जिह नाम थाम नही बरग बिआधि ॥ जिह रोग सोग नही सत्रु साध ॥५॥१२५॥
जिह त्रास वास नही देह नास ॥ जिह आदि अंत नही रूप रास ॥ जिह रोग सोग नही जोग जुगति ॥ जिह त्रास आस नही भूमि भुगति ॥६॥१२६॥
जिह काल बिआल कटिओ न अंग ॥ अछै सरूप अखै अभंग ॥ जिह नेति

नेति उचरम्त बेद ॥ जिह अलख रूप कथत कतेब ॥७॥१२७॥

जिह अलख रूप आसन अडोल ॥ जिह अमित तेज अछै अतोल ॥ जिह धिआन काज मुनि जन अनम्त ॥ कई कलप जोग साधत दुरम्त ॥८॥१२८॥

तन सीत घाम बरखा सहम्त ॥ कई कलप एक आसन बितम्त ॥ कई जतन जोग बिदिआ बिचार ॥ साधंत तदपि पावत न पार ॥६॥१२६॥

कई उरध बाहु देसन भ्रमंत ॥ कई उरध मध पावक झुलम्त ॥ कइ सिंम्रिर्ति सासत्र उचरम्त बेद ॥ कई कोक काबि कथत कतेब ॥१०॥१३०॥

कइ अगनिहोत्र कई पउनाहार ॥ कई करत कोट म्रित को अहार ॥ कइ करत साक पै प्त्र भच्छ ॥ नही तदपि

देव होवत प्रतच्छ ॥११॥१३१॥
कई गीत गान गन्ध्रब रीति ॥ कई बेद सासत्र बिदिआ प्रतीति ॥ कहूं बेद रीति जग आदि करम ॥ कहूं अगनिहोत्र कहूं तीरथ धरम ॥१२॥१३२॥
कई देस देस भाखा रटंत ॥ कई देस देस बिदिआ पढ़ंत ॥ कइ करत भाँति भाँतिन बिचार ॥ नही नैक तास पायतन पार ॥१३॥१३३॥
कई तीरथ तीरथ भरमत सु भरम ॥ कई अगनिहोत्र कइ देव करम ॥ कई करत बीर बिदिआ बिचार ॥ नही तदपि तास पायतन पार ॥१४॥१३४॥
कहूं राज रीति कहूं जोग धरम ॥ कई सिंम्रिति सासत्र उचरत सु करम ॥ निउली आदि करम कहूं हसति

दान ॥ कहूं असुमेध मख को बखान ॥१५॥१३५॥

कहूं करत ब्रहम बिदिआ बिचार ॥ कहूं जोग रीति कहूं बिरधचार ॥ कहूं करत जच्छ गन्ध्रब गान ॥ कहूं धूप दीप कहूं अरघ दान ॥१६॥१३६॥

कहूं पित्र करम कहूं बेद रीति ॥ कहूं न्रित नाच कहूं गान गीति ॥ कहूं करत सासत्र सिंम्रिति उचार ॥ कहूं भजत एक पग निराधार ॥१७॥१३७॥

कई नेह देह कई गेह वास ॥ कई भ्रमत देस देसन उदास ॥ कइ जर्ल निवास कई अगनि ताप ॥ कइ जपर्त उरध लटकन्त जाप ॥१८॥१३८॥

कई करत जोग कलपं प्रजन्त ॥ नही तदपि तास पायतन अंत ॥ कई करत

कोटि बिदिआ बिचारि ॥ नही तदप द्रिसटि देखे मुरारि ॥१६॥१३६॥

बिन भगति सकति नही परत पान ॥ बहु करत होम अरु जग्ग दान ॥ बिन एक नाम इक चित लीन ॥ फोकटो सरब धरमा बिहीन ॥२०॥१४०॥

त्वप्रसादि ॥ तोटक छन्द ॥

जै जम्पहु जुगण जूह जुअं ॥ भै कम्पहु मेरु पयाल भुअं ॥ तप तापस सरब जलेरुथलम् ॥ धन उचरत इंद्र कुमेर बलम् ॥१॥१४१॥

अनखेद सरूप अभेद अभिअं ॥ अनखंड अभूत अछेद अछिअं ॥ अनकाल अपाल दिआल सुअं ॥ जिह ठटीअं मेरु अकास भुअं ॥२॥१४२॥

अनखंड अमंड प्रचम्ड नरम् ॥ जिह रचीअं देव अदेव बरम् ॥ सभ कीनी

दीन जमीन जमाँ ॥ जिह रचीअं सरब
मकीन मकाँ ॥३॥१४३॥
जिह राग न रूप न रेख रुखं ॥ जिह
ताप न साप न सोक सुखं ॥ जिह
रोग न सोग न भोग भुयं ॥ जिह खेद
न भेद न छेद छुयं ॥४॥१४४॥
जिह जाति न पाति न मात पितम ॥
जिह रचीअं छत्री छत्र छितम ॥ जिह
राग न रेख न रोग भणं ॥ जिह द्वैख
न दाग न दोख गणं ॥५॥१४५॥
जिह अंडह ते ब्रहमंड रचिओ ॥ दस
चार करी नव खंड सचिओ ॥ रज
तामस तेज अतेज कीओ ॥ अनभउ
पद आप प्रचम्ड लीओ ॥६॥१४६॥
स्रिअ सिंधरु बिंध नगिम्द नगम ॥
स्रिअ जच्छ गम्ध्रब फनिम्द भुजम ॥
रचि देव अदेव अभेव नरम ॥

नरपालनि पाल कराल त्रिगम्
॥७॥१४७॥
कई कीट पतम्ग भुजम्ग नरम् ॥ रचि अंडज सेतज उतभुजम् ॥ कीए देव अदेव सराध धितम् ॥ अनखंड प्रताप प्रचम्ड गतम् ॥८॥१४८॥
प्रभ जाति न पाति न जोत जुतम् ॥ जिह तात न मात न भ्रात सुतम् ॥ जिह रोग न सोग न भोग भुअं ॥ जिह जम्पहि किंनर जच्छ जुअं ॥९॥१४९॥
नर नारि नपुंसक जाहि कीए ॥ गण किंनर जच्छ भुजम्ग दीए ॥ गज बाज रथादिक पात गणं ॥ भव भूत भविख्ख भवान तुअं ॥१०॥१५०॥
जिह अंडज सेतज जेर रजम् ॥ रचि भूमि अकास पताल जलम् ॥ रचि पावक पौन प्रचम्ड बली ॥ बन जासु

कीओ फल फूल कली ॥११॥१५१॥
भूअ मेर अकास निवास छितम ॥ रचि रोज इकादसि चन्द्र ब्रतम ॥ दुति चन्द दिनीसह दीप दई ॥ जिह पावक पउन प्रचन्ड मई ॥१२॥१५२॥
जिह खंड अखंड प्रचन्ड कीए ॥ जिह छत्र उपाइ छिपाइ दीए ॥ जिह लोक चतुरदस चार रचे ॥ गण गन्ध्रब देव अदेव सचे ॥१३॥१५३॥
अनधूत अभूत अछूत मतम ॥ अनगाध अबिआधि अनादि गतम ॥ अनखेद अभेद अछेद नरम ॥ जिह चार चतुर दिस चक्र फिरम ॥१४॥१५४॥
जिह राग न रन्ग न रेख रुगम ॥ जिह सोग न भोग न जोग जुगम ॥ भूअ भन्जन गन्जन आदि सिरम ॥ जिह बंदत देव अदेव नरम ॥१५॥१५५॥

गण किंनर जच्छ भुजम्ग रचे ॥ मणि माणक मोती लाल सुचे ॥ अनभम्ज प्रभा अनगम्ज ब्रितम्म ॥ जिह पार न पावत पूरि मतम्म ॥१६॥१५६॥

अनखंड सरूप अडंड प्रभा ॥ जै जम्पत बेद पुरान सभा ॥ जिह बेद कतेब अनम्त कहै ॥ जिह भूत अभूत न भेद लहै ॥१७॥१५७॥

जिह बेद पुरान कतेब जपै ॥ सुत सिंधु अधोमुख ताप तपै ॥ कई कलपन लौ तप ताप करै ॥ नही नैक क्रिपानिधि पान परै ॥१८॥१५८॥

जिह फोकट धरम सभै तजि है ॥ इक चित क्रिपा निधि को भजि है ॥ तेऊ या भव सागर को तरि है ॥ भव भूलि न देह पुनर धरि है ॥१९॥१५९॥

इक नाम बिना नही कोटि ब्रती ॥ इम

बेद उचारत सारसुती ॥ जेऊ वा रस के चसके रस है ॥ तेऊ भूलि न काल फधा फस है ॥२०॥१६०॥

त्वप्रसादि ॥ नराज छम्द ॥

अगम्ज आदि देव है अभम्ज भम्ज जानीऐ ॥ अभूत भूत है सदा अगम्ज गम्ज मानीऐ ॥ अदेव देव है सदा अभेव भेव नाथ है ॥ समसत सिधि ब्रिधिदा सदीव सरब साथ है ॥१॥१६१॥

अनाथ नाथ नाथ है अभम्ज भम्ज है सदा ॥ अगम्ज गम्ज गम्ज है सदीव सि्धि ब्रिधिदा ॥ अनूप रूप सरूप है अछिज्ज तेज मानीऐ ॥ सदीव सिद्ध बुद्धिदा प्रताप पत्र जानीऐ ॥२॥१६२॥

न राग रम्ग रूप है न रोग राग रेख है

॥ अदोख अदाग अदह्ग है अभूत अभ्रम अभेख है ॥ न तात मात जाति है न पाति चिहन बरन है ॥ अदेख असेख अभेख है सदीव बिसु भरन है ॥३॥१६३॥

बिस्वंभर बिसु नाथ है बिसेख बिसु भरन है ॥ जिमी जमान के बिखै सदीव करम करन है ॥ अद्वैख है अभेख है अलेख नाथ जानीऐ ॥ सदीव सरब ठउर मै बिसेख आन मानीऐ ॥४॥१६४॥

न जम्त्र मै न तम्त्र मै न मंत्र बसि आवई ॥ पुरान औ कुरान नेति नेति कै बतावई ॥ न करम मै न धरम मै न भरम मै बताईऐ ॥ अगम्ज आदि देव है कहो सु कैसि पाईऐ ॥५॥१६५॥

जिमी जमान के बिखै समसत एक जोति है ॥ न घाट है न बाढ है न घाट बाढ होति है ॥ न हानि है न बान है समान रूप जानीऐ ॥ मकीन औ मकान अप्रमान तेज मानीऐ ॥६॥१६६॥

न देह है न गेह है न जाति है न पाति है ॥न मंत्र है न मित्र है न तात है न मात है ॥ न अंग है न रम्ग है न सम्ग साथ नेह है ॥ न दोख है न दाग है न द्वैख है न देह है ॥७॥१६७॥

न सिंघ है न सिआर है न राउ है न रम्क है ॥ न मान है न मउत है न साक है न सम्क है ॥ न जच्छ है न गम्ध्रब है न नरु है न नारि है ॥ न चोर है न साह है न साह को कुमार

है ॥८॥१६८॥
न नेह है न गेह है न देह को बनाउ है ॥ न छल है न छिद्द्र है न छल को मिलाउ है ॥ न तम्त्र है न मंत्र है न जम्त्र को सरूप है ॥ न राग है न रम्ग है न रेख है न रूप है ॥९॥१६९॥
न जम्त्र है न मंत्र है न तम्त्र को बनाउ है ॥ न छल है न छिद्र है न छाइआ को मिलाउ है ॥ न राग है न रम्ग है न रूप है न रेख है ॥ न करम है न धरम है अजनम है अभेख है ॥१०॥१७०॥
न तात है न मात है अखिआल अखंड रूप है ॥ अछेद है अभेद है न रम्क है न भूप है ॥ परे है पवित्र है पुनीति है पुरान है ॥ अगम्ज है अभम्ज है करीम है कुरान है

॥११॥१७१॥

अकाल है अपाल है खिआल है अखंड है ॥ न रोग है न सोग है न भेद है न भम्ड है ॥ न अंग है न रम्ग है न सम्ग है न साथ है ॥ प्रिआ है पवित्र है पुनीति है प्रमाथ है ॥१२॥१७२॥

न सीत है न सोच है न घ्राम है न घाम है ॥ न लोभ है न मोह है न क्रोध है न काम है ॥ न देव है न दैत है न नर को सरूप है ॥ न छल है न छिद्द है न छिद्द की बिभूति है ॥१३॥१७३॥

न काम है न क्रोध है न लोभ है न मोह है ॥ न द्वैख है न भेख है न दुइ है न द्रोह है ॥ न काल है न बाल है सदीव दयाल रूप है ॥

अगम्ज है अभम्ज है अभरम है अभूत है ॥१४॥१७४॥

अछेद छेद है सदा अगम्ज गम्ज गम्ज है ॥ अभूत भेख है बली अरूप राग रम्ग है ॥ न द्वैख है न भेख है न काम क्रोध करम है ॥ न जाति है न पाति है न चित्र चिहन बरन है ॥१५॥१७५॥

बिअंत है अनम्त है अनम्त तेज जानीऐ ॥ अभूमि अभिज्ज है सदा अछिज्ज तेज मानीऐ ॥ न आधि है न बिआधि है अगाधि रूप लेखीऐ ॥ अदोख है अदाग है अछै प्रताप पेखीऐ ॥१६॥१७६॥

न करम है न भरम है न धरम को प्रभाउ है ॥ न जम्त्र है न तम्त्र है न मंत्र को रलाउ है ॥ न छल है न छिद

है, न छिद्र को सरूप है, ॥ अभम्ग है अनम्ग है अगम्ज सी बिभूति है ॥१७॥१७७॥

न काम है न क्रोध है न लोभ मोह कार है ॥ न आधि है न गाधि है न बिआधि को बिचार है ॥ न रम्ग राग रूप है न रूप रेख रार है ॥ न हाउ है न भाउ है न दाउ को प्रकार है ॥१८॥१७८॥

गजाधपी नराधपी करम्त सेव है सदा ॥ सितसपती तपसतपी बनसपती जपस सदा ॥ अगसत आदि जे बडे तपसपती बिसेखीऐ ॥ बिअंत बिअंत बिअंत को करम्त पाठ पेखीऐ ॥१९॥१७९॥

अगाध आदि देव की अनादि बात मानीऐ ॥ न जाति पाति मंत्र मित्र सत्रु

सनेह जानीऐ ॥ सदीव सरब लोक के क्रिपाल खिआल मै रहै ॥ तुरन्त दोह देह ् के अनन्त भाँति सो दहै ॥२०॥१८०॥

त्वप्रसादि ॥ रूआमल छन्द ॥

रूप राग न रेख रन्ग न जनम मरन बिहीन ॥ आदि नाथ अगाध पुरख सु धरम करम प्रबीन ॥ जन्त्र मंत्र न तन्त्र जा को आदि पुरख अपार ॥ हसति कीट बिखै बसै सब ठउर मै निरधार ॥१॥१८१॥

जाति पाति न तात जा को मंत्र मात न म्त्रि ॥ सरब ठउर बिखै रमिओ जिह चक्क्र चिहन न च्त्रि ॥ आदि देव उदार मूरति अगाध नाथ अनन्त ॥ आदि अंति न जानीऐ अबिखाद देव दुरन्त ॥२॥१८२॥

देव भेव न जानही जिह मरम बेद कतेब ॥ सनक अउ सनकेस नम्दन पावही नहि सेब ॥ जच्छ किंनर मच्छ मानस मुरग उरग अपार ॥ नेति नेति पुकार ही सिव सक्र औ मुखचार ॥३॥१८३॥

सरब सपत पतार के तर जापही जिह जाप ॥ आदि देव अगाधि तेज अनादि मूरति अताप ॥ जम्त्र मंत्र न आवइ कर तम्त्र मंत्रन कीर्न ॥ सरब ठउर रहिओ बिराज धिराजराज प्रबीन ॥४॥१८४॥

जच्छ गम्ध्रब देव दानो न ब्रहम छत्रीअन माहि ॥ बैसनम्‍ के बिखै बिराजै सूद्र भी वहि नाहि ॥ गूड़ गउड न भील भीकर ब्रहम सेख सरूप ॥ रात दिवस न मध उरध न

भूमि अकास अनूप ॥५॥१८५॥
जाति जनम न काल करम न धरम करम बिहीन ॥ तीरथ जात्र न देव पूजा गोर के न अधीन ॥ सरब सपत पतार के तर जानीऐे जिह जोति ॥ सेस नाम सहम्सफनि नहि नेति पूरन होत ॥६॥१८६॥
सोधि सोधि हटे सभै सुर बिरोध दानव सरब ॥ गाइ गाइ हटे गम्ध्रब वाइ किंनर गरब ॥ पड़त पड़त थके महा कबि गड़त गाड़ अनम्त ॥ हार हार कहिओ सभू मिल नाम नाम दुरम्त ॥७॥१८७॥
बेद भेद न पाइओ लखिओ न सेब कतेब ॥ देव दानो मूड़ मानो जच्छ न जानै जेब ॥ भूत भूब भवान भूपति आदि नाथ अनाथ ॥ अगनि बाइ जले

थले महि सरब ठउर निवास ॥८॥१८८॥

देह गेह न नेह सनेह अबेह नाथ अजीति ॥ सरब गम्जन सरब भम्जन सरब ते अनभीति ॥ सरब करता सरब हरता सरब दिआल अद्वैख ॥ चक्र चिहन न बरन जा को जाति पाति न भेख ॥९॥१८९॥

रूप रेख न रम्ग जा को राग रूप न रम्ग ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब ते अनभम्ग ॥ सरब दाता सरब गिआता सरब को प्रतिपाल ॥ दीन बंधु दइआल सुआमी आदि देव अपाल ॥१०॥१९०॥

दीन बंधु प्रबीन स्री पति सरब को करतार ॥ बरन चिहन न चक्क्र जा को चक्क्र चिहन अकार ॥ जाति पाति न

गोत्र गाथा रूप रेख न बरन ॥ सरब दाता सरब गिआता सरब भूअ को भरन ॥११॥१६१॥

दुसट गन्जन सत्रु भन्जन परम पुरख प्रमाथ ॥ दुसट हरता स्रिसटि करता जगत मै जिह गाथ ॥ भूत भब भविख्ख भवान प्रमान देव अगन्ज ॥ आदि अन्त अनादि स्री पति परम पुरख अभन्ज ॥१२॥१६२॥

धरम के अन करम जेतक कीन तउन पसार ॥ देव अदेव गन्ध्रब किंनर मच्छ कच्छ अपार ॥ भूमि अकास जले थले महि मानीऐ जिह नाम ॥ दुसट हरता पुसटि करता स्रिसटि हरता काम ॥१३॥१६३॥

दुसट हरना स्रिसटि करना दिआल लाल गोबिंद ॥ मित्र पालक सत्रु

घालक दीन दइआल मुकम्द ॥ अघौ दम्डण दुसट खंडण काल हूम् के काल ॥ दुसट हरणं पुसटि करणं सरब के प्रतिपाल ॥१४॥१६४॥

सरब करता सरब हरता सरब के अनकाम ॥ सरब खंडण सरब दम्डण सरब के निज भाम ॥ सरब भुगता सरब जुगता सरब करम प्रबीन ॥ सरब खंडण सरब दम्डण सरब करम अधीन ॥१५॥१६५॥

सरब सिंम्रितन सरब सासत्रन सरब बेद बिचार ॥ दुसट हरता बिसु भरता आदि रूप अपार ॥ दुसट दम्डण पुसटि खंडण आदि देव अखंड ॥ भूमि अकास जले थले महि जपत जाप अमद्धड ॥१६॥१६६॥

स्रिसटिचार बिचार जेते जानीऐ स

बिचार ॥ आदि देव अपार स्री पति दुसट पुसट प्रहार ॥ अंन दाता गिआन गिआता सरब मान महिंद्र ॥ बेद बिआस करे कइ जिन कोटि इंद्र उपइंद्र ॥१७॥१६७॥

जनम जाता करम गिआता धरम चार बिचार ॥ बेद भेव न पावई सिव रूद्र औ मुख चार ॥ कोटि इंद उप इंद्र बिआस सनक सनत कुमार ॥ गाइ गाइ थके सभै गुन चक्क्रत भे मुख चार ॥१८॥१६८॥

आदि अंत न मद्धि जा को भूत भ्रुब भवान ॥ सत दुआपर त्रितीआ कलजुग चत्र काल प्रधान ॥ धिआइ धिआइ थके महा मुनि गाइ गम्ध्रब अपार ॥ हार हार थके सभै नही पाइओ तिह पार ॥१९॥१६९॥

नारद आदिक बेद बिआसक मुनि महान अनम्त ॥ धिआइ धिआइ थके सभे कर कोटि कसट दुरम्त ॥ गाइ गाइ थके गम्ध्रब नाच अपछ्र अपार ॥ सोधि सोधि थके महा सुर पाइओ नहि पार ॥२०॥२००॥

त्व प्रसादि ॥

दोहरा ॥ एक समै स्री आतमा उचरिओ मति सिउ बैन ॥ सभ प्रताप जगदीस को कहो सगल बिधि तैन ॥१॥२०१॥

दोहरा ॥ को आतमा सरूप है कहा स्रिसटि को बिचार ॥ कउन धरम को करम है कहो सगल बिसथार ॥२॥२०२॥

दोहरा ॥ कह जीतब कह मरन है कवन सुरग कह नरक ॥ को सुघड़ा

को मूड़ता कहा तरक अवतरक ॥३॥२०२॥
दोहरा ॥ को निम्दा जस है कवन कवन पाप कह धरम ॥ कवन जोग को भोग है कवन करम अपकरम ॥४॥२०४॥
दोहरा ॥ कहो सु सम का सो कहै दम को कहा कहम्त ॥ को सूरा दाता कवन कहो तम्त को मंत ॥५॥२०५॥
दोहरा ॥ कहा रम्क राजा कवन हरख सोग है कवन ॥ को रोगी रागी कवन कहो तत मुहि तवन ॥६॥२०६॥
दोहरा ॥ कवन रिसट को पुसट है कहा स्रिसटि को बिचार ॥ कवन स्रिसटि को भ्रिसट है कहो सकल बिसथार ॥७॥२०७॥
दोहरा ॥ कहा करम को करम है कहा

भरम को नास ॥ कहा चितन की चेसटा कहा अचेत प्रकास ॥८॥२०८॥

दोहरा ॥ कहा नेम सम्जम कहा कहा गिआन अगिआन ॥ को रोगी सोगी कवन कहा भरम की हान ॥९॥२०९॥

दोहरा ॥ को सूरा सुंदर कवन कहा जोग को सार ॥ को दाता गिआनी कवन कहो बिचार अबिचार ॥१०॥ २१०॥

त्वप्रसादि ॥ दीरघ त्रिभम्गी छम्द ॥

दुरजन दल दम्डण असुर बिहम्डण दुसट निकम्दण आदि ब्रिते ॥ चछरासुर मारण पतित उधारण नरक निवारण गूड़ गते ॥ अछै अखंडे तेज प्रचम्डे खंड उदम्डे अलख मते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रम्म

कपरदिनि छत्र छिते ॥१॥२११॥

आसुरी बिहम्डण दुसट निकम्दन पुसट उदम्डण रूप अते ॥ चम्डासुर चम्डण मुंड बिहम्डण धूम्र बिधुंसण महिख मथे ॥ दानव प्रहारण नरक निवारन अधम उधारन उरध अधे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रम्म कपरदिनि आदि ब्रिते ॥२॥२१२॥

डावरू डवम्कै बबर बवम्कै भुजा फरम्कै तेज बरम्म ॥ लम्कुड़ीआ फाधै आयुध बाधै सैन बिमरदन काल असुरम्म ॥ असटाइध चमकै भूखण दमकै अति सित झमकै फुंक फनम्म ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रम्म कपरदिनि दैत जिणं ॥३॥२१३॥

चम्डासुर चम्डण मुंड बिमुंडण खंड अखंडण खून खिते ॥ दामनी दमंकण

धुजा फरम्कण फणी फुकारण जोध जिते ॥ सर धार बिबरखण दुसट प्रकरखण पुसट प्रहरखण दुसट मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकास तल उरध अधे ॥४॥२१४॥

दामनी प्रहासन सुछबि निवासन स्रिसटि प्रकासन गूड़ गते ॥ रकतासुर आचन जुध प्रमाचन निरभै नराचन धरम ब्रिते ॥ स्रोणंत अचम्ती अनल बवम्ती जोग जयंती खड़ग धरे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन पाप बिनासन धरम करे ॥५॥२१५॥

अघ ओघ निवारन दुसट प्रजारन स्रिसटि उबारन सुध मते ॥ फणीअर फुंकारण बाघ बकारण ससत्र प्रहारण साध मते ॥ सैहथी सनाहन असट प्रबाहन बोल निबाहन तेज अतुलम ॥

जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकास पताल जलम्‍ ॥६॥२१६॥

चाचर चमकारन चिछुर हारन धूम्र धुंकारन द्रप मथे ॥ दाड़वी प्रदम्ते जोग जयंते मनुज मथंते गूड़ कथे ॥ करम प्रणासन चम्द प्रकासन भानु प्रतेजन असट भुजे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन भरम बिनासन धरम धुजे ॥७॥२१७॥

घुंघरू घमंकण ससत्र झमंकण फणी फुकारण धरम धुजे ॥ असटाट प्रहासन स्रिसटि निवासन दुसट प्रणासन चक्र गते ॥ केसरी प्रवाहे सुद्ध सनाहे अगम अथाहे एक ब्रिते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि कुमारि अगाधि ब्रिते ॥८॥२१८॥

सुर नर मुनि बंदन दुसट निकम्दन

भ्रिसट बिनासन म्रित मथे ॥ कावरू कुमारे अधम उधारे नरक निवारे आदि कथे ॥ किंकणी प्रसोहण सुर नर मोहण सिंघारोहण बितल तले ॥ जै जै होसी सभ ठउर निवासन बाइ पताल अकास अनले ॥९॥२१९॥

सम्कटी निवारन अधम उधारन तेज प्रकरखण तुंद तबे ॥ दुख दोख दहम्ती ज्वाल जयंती आदि अनादि अगाधि अछे ॥ सुद्धता समरपण तरक बितरकण तपत प्रतापण जपत जिवे ॥ जै जै होसी शस्त्र प्रकरखण आदि अनील अगाध अभे ॥१०॥२२०॥

चम्चला चखंगी अलक भुजम्गी तुंद तुरम्गण तिछ सरे ॥ कर कसा कुठारे नरक निवारे अधम उधारे तूर भुजे ॥

दामनी दमंके केहर लम्के आदि अतम्के क्रूर कथे ॥ जै जै होसी रकतासुर खंडण सुंभ चक्रत निसुंभ मथे ॥११॥२२१॥

बारिज बिलोचन ब्रितन बिमोचन सोच बिसोचन कउच कसे ॥ दामनी प्रहासे सुक सर नासे सुब्रित सुबासे दुसट ग्रसे ॥ चम्चला प्रअंगी बेद प्रसम्गी तेज तुरम्गी खंड सुरम्‌ ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनादि अगाध उरम्‌ ॥१२॥२२२॥

घंटिका बिराजै रूण झुण बाजै भ्रम भै भाजै सुनत सुरम्‌ ॥ कोकिल सुन लाजै किल बिख भाजै सुख उपराजै मद्ध उरम्‌ ॥ दुरजन दल दझै मन तन रिझै स भै न भजै रोह रणं ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन चम्ड चक्रतन आदि

गुरम ॥१३॥२२३॥
चाचरी प्रजोधन दुसट बिरोधन रोस अरोधन क्रूर ब्रिते ॥ धूम्राछ बिधुंसन प्रलै प्रजुंसन जग बिधुंसन सुध मते ॥ जालपा जयंती सत्रु मथंती दुसट प्रदाहन गाड़ मते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगादि अगाधि गते ॥१४॥२२४॥
खत्रीआण खतम्गी अभै अभम्गी आदि अनम्गी अगाधि गते ॥ बिड़लाछ बिहम्डण चिछुर दम्डण तेज प्रचम्डण आदि ब्रिते ॥ सुर नर प्रतिपारन पतित उधारन दुसट निवारन दोख हरे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन बिसु बिधुंसन स्रिसटि करे ॥१५॥२२५॥
दामनी प्रकासे उनत नासे जोत प्रकासे अतुल बले ॥ दानवी प्रकरखण सर वर

वरखण दुसट प्रधरखण बितल तले ॥
असटाइध बाहण बोल निबाहण सम्त
पनाहण गूड़ गते ॥ जै जै होसी
महिखासुर मरदन आदि अनादि
अगाधि ब्रिते ॥१६॥२२६॥

दुख दोख प्रभच्छण सेवक रच्छण
सम्त प्रतच्छण सुद्ध सरे ॥ सारम्ग
सनाहे दुसट प्रदाहे अरि दल गाहे
दोख हरे ॥ गम्जन गुमाने अतुल
प्रवाने सम्त जमाने आदि अंते ॥ जै जै
होसी महिखासुर मरदन साध प्रदछण
दुसट हम्ते ॥१७॥२२७॥

कारण करीली गरब गहीली जोति
जतीली तुंद मते ॥ असटाइध चमकण
ससत्र झमकण दामनि दमकण आदि
ब्रिते ॥ डुकडुकी दमंकै बाघ बबंकै
भुजा फरम्कै सुध गते ॥ जै जै होसी

महिखासुर मरदन आदि जुगादि अनादि मते ॥१८॥२२८॥

चछरासुर मारण नरक निवारण पतित उधारण एक भटे ॥ पापान बिहम्डण दुसट प्रचम्डण खंड अखंडण काल कटे ॥ चम्दानन चारै नरक निवारै पतित उधारै मुंड मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन धूम्र बिधुंसन आदि कथे ॥१९॥२२९॥

रकतासुर मरदन चम्ड चक्रदन दानव अरदन बिड़ाल बधे ॥ सर धार बिबरखण दुरजन धरखण अतुल अमरखण धरम धुजे ॥ धूम्राछ बिधुंसण स्रोणित चुंसन सुंभ निपात निसुंभ मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनील अगाध कथे ॥२०॥२३०॥

त्व प्रसादि ॥ पाधड़ी छम्द ॥

तुम कहो देव सरबं बिचार ॥ जिम कीओ आपि करते पसार ॥ जद्दपि अभूत अनभै अनम्त ॥ तउ कहों जथा मति त्रैण तम्त ॥१॥२३१॥

करता करीम कादर क्रिपाल ॥ अद्वै अभूत अन भै दिआल ॥ दाता दुरम्त दुख दोख रहत ॥ जिह नेति नेति सभ बेद कहत ॥२॥२३२॥

कई ऊच नीच कीनो बनाउ ॥ सभ वार पार जा को प्रभाउ ॥ सभ जीव जम्त जानम्त जाहि ॥ मन मूढ़ किउ न सेवम्त ताहि ॥३॥२३३॥

कई मूढ़ पत्र पूजा करम्त ॥ कई सिद्ध साध सूरज सिवम्त ॥ कइ पलटॅ सूरज सिजदा कराइ ॥ प्रभ एक रूप द्वै कै लखाइ ॥४॥२३४॥

अनछिज्ज तेज अनभै प्रकास ॥ दाता दुरन्त अद्वै अनास ॥ सभ रोग सोग ते रहत रूप ॥ अन भै अकाल अछै सरूप ॥५॥२३५॥

करुणा निधान कामल क्रिपाल ॥ दुख दोख हरत दाता दिआल ॥ अंजन बिहीन अनभन्ज नाथ ॥ जल थल प्रभाउ सरबत्र साथ ॥६॥२३६॥

जिह जाति पाति नही भेद भरम ॥ जिह रन्ग रूप नही एक धरम ॥ जिह सत्र मित्र दोऊ एक सार ॥ अछै सरूप अबिचल अपार ॥७॥२३७॥

जानी न जाइ जिह रूप रेख ॥ कहि बास तास कहि कउन भेख ॥ कहि नाम तास है कवन जात ॥ जिह सत्रु मित्र नही पुत्र भ्रात ॥८॥२३८॥

करुणा निधान कारण सरूप ॥ जिह

चक्क्र चिहन नही रम्ग रूप ॥ जिह खेद् भेद् नही करम काल ॥ सभ जीव जम्त की करत पाल ॥९॥२३९॥

उरधं बिरहत सिद्धं सरूप ॥ बुधं अपाल जुधं अनूप ॥ जिह रूप रेख नही रम्ग राग ॥ अनछिज्ज तेज अनभिज्ज अदाग ॥१०॥२४०॥

जल थल महीप बन तन दुरम्त ॥ जिह नेति नेति निस दिन उचरम्त ॥ पाइओ न जाइ जिह पैर पार ॥ दीनान दोख दहिता उदार ॥११॥२४१॥

कई कोटि इंद्र जिह पानिहार ॥ कई कोटि रुद्र जुगीआ दुआर ॥ कई बेद बिआस ब्रहमा अनम्त ॥ जिह नेति नेति निसि दिन उचरम्त ॥१२॥२४२॥

त्व प्रसादि ॥ सवय्ये ॥

दीनन की प्रतिपाल करै नित सम्त उबार गनीमन गारै ॥ पच्छ पसू नग नाग नराधिप सरब समै सभ को प्रतिपारै ॥ पोखत है जल मै थल मै पल मै कलि के नही करम बिचारै ॥ दीन दइआल दइआनिधि दोखन देखत है पर देत न हारै ॥१॥२४३॥

दाहत है दुख दोखन को दल दुजन के पल मै दल डारै ॥ खंड अखंड प्रचम्ड प्रहारन पूरन प्रेम की प्रीति सम्भारै ॥ पार न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ॥ रोजी ही राज बिलोकत राजक रोखि रूहान की रोजी न टारै ॥२॥२४४॥

कीट पतम्ग कुरम्ग भुजम्गम भूत भविख भवान बनाए ॥ देव अदेव खपे अहम्मेव न भेव लखिओ भ्रम

सिउ भरमाए ॥ बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥ पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन स्री पदमापति पाए ॥३॥२४५॥

आदि अनम्त अगाध अद्वैख सु भूत भविख भवान अभै है ॥ अंत बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥ लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभु वै है ॥ दीन दइआल दइआकर स्री पति सुंदर स्री पदमापति ए है ॥४॥२४६॥

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥ देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥ जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ॥ काहे को डोलत है तुमरी सुद्धि सुंदर

स्री पद्मापति लै है ॥५॥२४७॥
रोगन ते अरु सोगन ते जल जोगन ते बहु भाँति बचावै ॥ सत्रु अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै ॥ राखत है अपनो कर दै करि पाप सम्बूह न भेटन पावै ॥ और की बात कहा कह तो सो सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥६॥२४८॥
जछ भुजम्ग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही कर धिआवै ॥ भूमि अकास पताल रसातल जच्छ भुजम्ग सभै सिर निआवै ॥ पाइ सकै नही पार प्रभा हू को नेति ही नेतह बेद बतावै ॥ खोज थके सभ ही खुजीआ सुर हार परे हरि हाथ न आवै ॥७॥२४९॥
नारद से चतुरानन से रुमना रिखि से सभहूम्ह मिल गाइओ ॥ बेद कतेब न

भेद लखिओ सभ हारि परे हरि हाथ न आइओ ॥ पाइ सकै नही पार उमापति सिद्ध सनाथ सनम्तन धिआइओ ॥ धिआन धरो तिह को मन मै जिह को अमितोज सभै जग छाइओ ॥८॥२५०॥

बेद पुरान कतेब कुरान अभेद न्रिपान सभै पचि हारे ॥ भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे ॥ राग न रूप न रेख न रम्ग न साक न सोग न सम्ग तिहारे ॥ आदि अनादि अगाध अभेख अद्वैख जपिओ तिन ही कुल तारे ॥९॥२५१॥

तीरथ कोटि कीऐ इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ॥ देस फिरिओ कर भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे ॥ आसन कोटि करे

असटाँग धरे बहु नयास करे मुख कारे ॥ दीन दइआल अकाल भजे बिन अंत को अंतके धाम सिधारे ॥१०॥२५२॥

त्व प्रसादि ॥ कबित्त

अत्र के चलय्या छिति छत्र के धरय्या छत्र धारीयों के छलय्या महाँ सत्रुन के साल हैं ॥ दान के दिवय्या महाँ मान के बढय्या अवसान के दिवय्या है ·ं कटय्या जम जाल है · ॥ जुद्ध के जितय्या अबरुद्ध के मिटय्या महाँ बुद्धि के दिवय्या महा मान हूम के माल है · ॥ गिआन हूम के गिआता महाँ बुद्धिता के दाता देव काल हूम के काल महा काल हूम के काल हैं ॥१॥२५३॥

पूरबी न पार पावै हिंगुला हिमालै धिआवै गोर गरदेजी गुन गावै तेरे नाम

है ॰ ॥ जोगी जोग साधै पउन साधना कितेक बाधै आरब के आरबी अराधै तेरे नाम हैं ॥ फरा के फिरम्गी मानै कम्धारी कुरैसी जानै पछम के पछमी पछानै निज काम है॰ ॥ मरहटा मघेले तेरी मन सो तपसिआ करै दिड़्वै तिलम्गी पहचानै॒ धरम धाम है ॰ ॥२॥२५४॥

बंग के बंगाली फिरहम्ग के फिरम्गावाली दिल्ली के दिलवाली तेरी आगिआ मै चलत है ॰ ॥ रोह के रुहेले माघ देस के मघेले बीर बंगसी बुंदेले पाप पुंज को मलत हैं ॥ गोखा गुन गावै चीन मचीन के सीस नयवै तिबती धिआइ दोख देह के दलत हैं ॥ जिनै तोहि धिआइओ तिनै पूरन प्रताप पाइओ सरब धन धाम फल

फूल सो फलत है · ॥३॥२५५॥
देव देवतान को सुरेस दानवान को महेस गम्ग धान को अभेस कहीअतु है · ॥ रम्ग मै रम्गीन राग रूप मै प्रबीन और काहूम्‍ पै न दीन साध अधीन कहीअतु हैं ॥ पाईऐ न पार तेज पुंज मै अपार सरब बिदिआ को उदार है · अपार कहीअतु है · ॥ हाथी की चिंघार पल पाछै पहुंचत ताहि चीटी की पुकार पहिले ही सुनीअतु हैं ॥४॥२५६॥
केते इंद्र दुआर केते ब्रहमा मुखचार केते क्रिसनावतार केते राम कहीअतु है· ॥ केते ससि रासी केते सूरज प्रकासी केते मुंडीआ उदासी जोग दुआर दहीअतु है · ॥ केते महादीन केते बिआस से प्रबीन केते कुमेर

कुलीन केते जच्छ कहीअतु हैं ॥ करते
है॰ बिचार पै न पूरन को पावै पार
ताही ते अपार निराधार लहीअतु है॰
॥५॥२५७॥

पूरन अवतार निराधार है न पारावार
पाई ऐ न पार पै अपार कै बखानीऐ
॥ अद्वै अबिनासी परम पूरन प्रकासी
महा रूप हूभ के रासी हैं अनासी कै
कै मानीऐ ॥ जन्त्र हूभ न जाति जा की
बाप हूभ न माइ ता की पूरन प्रभा की
सु छटा कै अनुमानीऐ ॥ तेज हूभ को
तन्त्र है कि राजसी को जत्र है कि
मोहनी को मंत्र है निजन्त्र कै कै
जानीऐ ॥६॥२५८॥

तेज हूभ को तरु है कि राजसी को सरु
है कि सुद्धता को घरु है कि
सिद्धता की सार है ॥ कामना की

खान है कि साधना की सान है बिरकतता की बान है कि बुधि को उदार है ॥ सुंदर सरूप है कि भूपन को भूप है कि रूप हूम को रूप है कुमति को प्रहार है ॥ दीनन को दाता है गनीमन को गारक है साधन को रच्छक है गुनन को पहार है ॥७॥२५६॥

सिद्धि को सरूप है कि बुद्धि को बिभूति है कि क्रुद्ध को अभूत है कि अछै अबिनासी है ॥ काम को कुनिम्दा है कि खूबी को दहिंदा है गनीमन गरिंदा है कि तेज को प्रकासी है ॥ काल हूम के काल है कि सत्रुन के साल है कि मित्रन को पोखत है कि ब्रिधता की बासी है ॥ जोग हूम को जम्त्र है कि तेज हूम को तम्त्र है

· कि मोहनी को मंत्र है· कि पूरन प्रकासी है · ॥८॥२६०॥

रुप को निवास हैं कि बुद्धि को प्रकास है कि सिद्धिता को बास है· कि बुद्धि हूम को घरु है ॥ देवन को देव है कि निरम्जन अभेव है अदेवन को देव है कि सुद्धिता को सरु है ॥ जान को बचय्या है इमान को दिवय्या जमजाल को कटय्या है कि कामना को करु हैं ॥ तेज को प्रचम्ड है अखंडण को खंड है महीपन को मंड है कि इसत्री हैं न नरु हैं ॥६॥२६१॥

बिस्व को भरन हैं कि अपदा को हरन हैं कि सुख को करन हैं कि तेज को प्रकास हैं॥ पाईऐ न पार पारावार हूम को पार जा को कीजत बिचार सु

बिचार को निवास हैं॥ हिंगुला हिमालै गावै हबसी हलुबी धिआवै पूरबी न पार पावै आसा ते अनास है ॥ देवन को देव महा देव हू को देव हैं निरम्जन अभेव नाथ अद्वै अबिनास हैं ॥१०॥२६२॥

अंजन बिहीन हैं निरम्जन प्रबीन हैं कि सेवक अधीन हैं कटय्या जम जाल के ॥ देवन के देव महादेव हूम्‍ के देवनाथ भूम के भुजय्या है मुहय्या महा बाल के ॥ राजन के राजा महा साज हूम्‍ के साजा महा जोग हूम्‍ को जोग है धरय्या द्‍ुम छाल के ॥ कामना के कर हैं कुबुद्धता को हर हैं कि सिद्धिता के साथी है कि काल है कुचाल के ॥११॥२६३॥

छीर कैसी छीरा वधि छाछ कैसी

छत्रानेर छपाकर कैसी छब कालिंदी के कूल के ॥ हम्सनी सी सीहा रूम हीरा सी हुसैनाबाद गम्गा कैसी धार चली सातो सिंधु रूल के ॥ पारा सी पलाऊ गढ रूपा कैसी रामपुर सोरा सी सुरम्गाबाद नीके रही झूल के ॥ चम्पा सी चम्देरी कोट चाँदनी सी चाँदा गड़ कीरति तिहारी रही मालती सी फूल के ॥१२॥२६४॥

फटक सी कैलास कमाऊ गड़ काँसी पुर सीसा सी सुरम्गाबाद नीके सोहीअतु है ॥ हिमा सी हिमालै हरहार सी हलबानेर हम्स कैसी हाजीपुर देखे मोहीअतु है ॥ चम्दन सी चम्पावती चम्द्रमा सी चम्द्रा गिर चाँदनी सी चाँदा गड़ जोन जोहीअतु है ॥ गम्गा सम गम्ग धार बकान सी

बिलम्दावाद कीरति तिहारी की उजिआरी सोहीअतु है ॥१३॥२६५॥
फरासी फिरम्गी फरासीस के दुरम्गी मकरान के म्रिदंगी तेरे गीत गाइअतु हैं ॥ भखरी कम्धारी गोर गखरी गरदेजाचारी पौन के अहारी तेरो नाम धिआइअतु हैं ॥ पूरब पलाऊ काम रूप औ कमाऊ सरब ठउर मै बिराजै जहाँ जहाँ जाई अतु हैं॥ पूरन प्रतापी जम्त्र मंत्र ते अतापी नाथ कीरति तिहारी को न पार पाइअतु हैं॥१४॥२६६॥

त्व प्रसादि ॥ पाधड़ी छम्द ॥

अद्वै अनास आसन अडोल ॥ अद्वै अनम्त उपमा अतोल ॥ अछै सरूप अबयकत नाथ ॥ आजानु बाहु सरबा प्रमाथ ॥१॥२६७॥

जह तह महीप बन तन प्रफुल्ल ॥ सोभा बसम्त जह तह प्रडुल्ल ॥ बन तन दुरम्त खग म्रिग महान ॥ जह तह प्रफुल सुंदर सुजान ॥२॥२६८॥

फुलतम्‍ प्रफुल लहि लहित मोर ॥ सिर ढुरहि जान मनमथह चौर ॥ कुजरत कमाल राजक रहीम ॥ करुणा निधान कामल करीम ॥३॥२६९॥

जह तह बिलोक तह तह प्रसोह ॥ आजानु बाहु अमितोज मोह ॥ रोसम्‍ बिरहत करुणा निधान ॥ जह तह प्रफुल्ल सुंदर सुजान ॥४॥२७०॥

बन तन महीप जल थल महान ॥ जह तह प्रसोह करुणा निधान ॥ जग मगत तेज पूरन प्रताप ॥ अंबर जमीन जिह जपत जाप ॥५॥२७१॥

सातो अकास सातो पतार ॥ बिथरिओ

अदिसट जिह करम जारि, ॥ उसतति सम्पूरनम ॥

੧ੴ वाहिगुरू जी की फते ॥

अथ चम्डी चरित्र लिखयते ॥

नराज छम्द ॥

महिख्ख दइत सूरयं ॥ बढियो सु लोह पूरयं ॥ सु देव राज जीतयं ॥ त्रिलोक राज कीतयं ॥१॥ भजे सु देवता तबै ॥ इकत्र होइ कै सबै ॥ महेसुराचलम बसे ॥ बिसेख चित मो त्रसे ॥२॥ जुगेस भेस धार कै ॥ भजे हथिआर डार कै ॥ पुकार आरतम चले ॥ बिसूर सूरमा भले ॥३॥ बरख किते तहाँ रहे ॥ सु दुख देह मो सहे ॥ जगत्र माति धिआयं ॥ सु जैत पत्र पायं ॥४॥ प्रसम्न देवता भए ॥ चरम्न पूजबे धए ॥ सनम्मुखान ठड्ढीअं ॥ प्रणाम पान पड्ढीअं ॥५॥

रसावल छम्द ॥

तबै देव धाए ॥ सबै सीस निआए ॥ सुमन धार बरखे ॥ सबै साधु हरखे ॥६॥ करी देबि अरचा ॥ ब्रहम बेद चरचा ॥ जबै पाइ लागे ॥ तबै सोग भागे ॥७॥ बिनम्ती सुनाई ॥ भवानी रिझाइ ॥ सबै ससत्र धारी ॥ करी सिंघ सुआरी ॥८॥ करे घंट नादम ॥ धुनम निर बिखादम ॥ सुणयो दैइत राजम ॥ सजिओं जुद्ध साजम ॥९॥ चड़िओ राछसेसम ॥ रचे चार अनेसम ॥ बली चामरेवम ॥ हठी चिच्छुरेवम ॥१०॥ बिड़ालच्छ बीरम ॥ चड़े बीर धीरम ॥ बडे इख्खु धारी ॥ घटा जानु कारी ॥११॥

दोहरा

बाण जिते राछसनि मिलि छाडत भए अपार ॥ फूल माल हुऐ मात उरि

सोभे सभे सु धार ॥१२॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

जिते दानवो बान पानी चलाए ॥ तिते देवता आप काटे बचाए ॥ किते ढाल ढाहे किते पास पेले । भरे बसत्र लोहू जनो फाग खेले ॥१३॥ दुरगा हूं कियं खेत धुंके नगारे ॥ करम्म पट्टिसम्म परघ पाँसी सम्भारे ॥ तहाँ गोफनै गुरज गोले सम्भारैं॥ हठी मारही मार कै कै पुकारैं ॥१४॥ तबै असट हाथं हथिआरम्म सम्भारे ॥ सिरम्म दानवे ंद्रान के ताकि झारे ॥ बबक्किओ बली सिंघ जुधं मझारम्म ॥ करे खंड खंडं सु जोधा अपारम्म ॥१५॥

तोटक छम्द ॥

तब दानव रोस भरे सभ ही ॥ जगमात के बाण लगे जब ही ॥

बिबिधायुध लै सु बली हरखे ॥ घन बूंदन जिउं बिसखं बरखे ॥१६॥ जनु घोर कै सिआम घटा घुमडी ॥ असुरेस अनीकनि तिउ उमडी ॥ जग मात बिरूथनि मो धसि कै ॥ धनुसाइक हाथ गहिओ कसि कै ॥१७॥ रण कुंजर पुंज गिराइ दीए ॥ इक खंड अखंड दुखंड कीए ॥ सिर एकनि चोट निफोट बही ॥ तरवा तर हुऐ तरवार रही ॥१८॥ तन झज्झर हुऐ रण भूमि गिरे ॥ इक भाज चले फिर कै न फिरे ॥ इकि हाथ हथिआर लै आन बहे ॥ लरि कै मरि कै गिरि खेत रहे ॥१६॥

नराज छम्द ॥

तहाँ सु दैत राजयं ॥ सजे सु सरब साजयं ॥ तुरम्ग आप बाहियं ॥ बधं सु मात चाहियं ॥२०॥ तबै दुगा

बकारि कै ॥ कमाण बाण धारि कै ॥
सु घाव चामरम्म कियो ॥ उतार हसति
तें दियो ॥२१॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

तबै बीर कोपं बिड़ालाछ नामं ॥ सजे
ससत्र देहम्म चले जुद्ध धामं ॥ सिरम्म
सिंघ के आन घायं प्रहारम्म ॥ बली
सिंघ सो हाथ सों मारि डारम्म ॥२२॥
बिड़ालाछ मारे सु पिंगाछ धाए ॥
दुरगा सामुहे बोल बाँके सुनाए ॥ करी
अभ्र जिउं गरज कै बाण बरखं ॥ महाँ
सूर बीरम्म भरे जुद्ध हरखं ॥२३॥ तबै
देवीअं पाणि बाणम्म सम्भारम्म ॥ हन्यो
दुसट के घाइ सीसम्म मझारम्म ॥ गिरयो
झूम भूमं गए प्राण छुट्टं ॥ मनो मेरु
को सातवों स्रिंग टुट्टं ॥२४॥ गिरे
बीर पिंगाछ देबी सम्घारे ॥ चले अउर

बीरम्‍ हथिआरम्‍ उघारे ॥ तबै रोस देबी सरोघं चलाए ॥ बिना प्राण कै जुद्ध मद्धं गिराए ॥२५॥

चौपई ॥

जे जे सत्रु सामुहे आए ॥ सबै देवता मारि गिराए ॥ सैना सकल जबै हनि डारी ॥ आसुरेस कोपा अहम्कारी ॥२६॥ आप जुद्ध तब कीआ भवानी ॥ चुनि चुनि हने पखरीआ बानी ॥ क्रोध जुआल मसतक ते बिगसी ॥ ता ते आप कालिका निकसी ॥२७॥

मधुभार छम्द ॥

मुख बमत जुआल ॥ निकसी कपाल ॥ मारे गजेस ॥ छुट्टे है एस ॥२८॥ छुट्टंत बाण ॥ झमकत क्रिपाण ॥ साँगं प्रहार ॥ खेलत धमार ॥२९॥ बाहैं निसम्ग ॥ उठैं झड़ंग ॥ तुङपक

तड़ाक ॥ उॅठत कड़ाक ॥३०॥
बबकम्त माइ ॥ भभकम्त घाइ ॥
जुज्झे जुआण ॥ नच्चे किकाण ॥३१॥

रूआमल छम्द ॥

धायो असुरेंद्र तह निज कोप ओप
बढाइ ॥ सम्ग लै चतुरम्ग सैना सुद्ध
ससत्र नचाइ ॥ देबि ससत्र लगैं गिरे
रण रुॅझि जुॅझि जुआण ॥ पीलराज
फिरे कहूं रण सुच्छ छुच्छ किकाण
॥३२॥ चीर चामर पुंज कुंजर बाजिराज
अनेक ॥ ससत्र असत्र सुभे कहूं
सरदार सुआर अरेक ॥ तेग तीर तुफंग
तबर कुहुक बाण अनम्त ॥ बेधि बेधि
गिरे बरच्छिन सूर सोभावम्त ॥३३॥
ग्रिध ब्रिध उडे तहाँ फिकरम्त सुआन
स्रिगाल ॥ मत दम्ति सपच्छ पूबै
कम्क बम्क रसाल ॥ छुद्द्र मीन

छुरुध्रका अरु चरम कच्छप अनम्त ॥
नक्क्र बक्क्र सु बरम सोभित स्रोण
नीर दुरम्त ॥३४॥ नव सूर नवका से
रथी अति रथी जान जहाज ॥ लादि
लादि मनो चले धन धीर बीर सलाज
॥ मोलु बीच फिरैं चुकात दलाल खेत
खतम्ग ॥ गाहि गाहि फिरे फवज्जनि
झारि दिरब निखंग ॥३५॥ अंग भम्ग
गिरे कहूं बहु रम्ग रमगित बसत्र ॥
चरम बरम सुभे कहूं रण भूमि
ससत्ररुअसत्र ॥ मुंड तुंड धुजा पताका
टूक टाक अरेक ॥ जूझ जूझ परे सबै
अरि बाचिओ नही एक ॥३६॥ कोप
कै महिखेस दानो धायो तिह काल ॥
असत्र ससत्र सम्भार सूरो रूप कै
बिकराल ॥ कालि पाणि क्रिपाण लै
तिह मारिओ ततकाल ॥ जोति जोति

बिखै मिली तज ब्रहम रम्ध्रि उताल ॥३७॥

दोहरा ॥

महिखासुर कह मार कर प्रफुलत भी जग माइ ॥ ता दिन ते महिखे बलिहि देत जगत सुख पाइ ॥३८॥

इति स्री बचित्र नाटके चम्डी चरित्रे महिखासुर बधहि प्रथम धिआइ सम्पूरण

मसतु सुभ मसतु ॥१॥

॥ अफजू ॥

अथ धूम्र नैन जुद्ध कथनम ॥

कुलक छम्द ॥

देविस तब गाजीय ॥ अनहद बाजीय ॥ भइ बधाई ॥ सभ सुखदाई ॥१॥३९॥ दुंदभि बाजे ॥ सभ सुर

गाजे ॥ करत बडाई ॥ सुमन ब्रखाई ॥२॥४०॥ कीनी अरचा ॥ जस धुनि चरचा ॥ पाइन लागे ॥ सभ दुख भागे ॥३॥४१॥ गाए करखा ॥ पुहपनि बरखा ॥ सीस निवाए ॥ सब सुख पाए ॥४॥४२॥

दोहरा ॥

लोप चम्डिका जू भए दै देवन को राज ॥ बहुर सुंभ नैसुंभ दुइ दैत बढे सिर ताज ॥५॥४३॥

चोपई ॥

सुंभ निसुंभ चड़े लै के दल ॥ अरि अनेक जीते जिन जल थल ॥ देव राज को राज छिनावा ॥ सेस मुकट मनि भेट पठावा ॥६॥४४॥ छीन लयो अलिकेस भम्डारा ॥ देस देस के जीति न्रिपारा ॥ जहाँ तहाँ कह दैत

पठाए ॥ देस बिदेस जीति फिर आए ॥७॥४५॥

दोहरा ॥

देव सभै त्रासित भऐ मन मो कियो बिचार ॥ सरनि भवानी की सभै भाजि परे निरधार ॥८॥४६॥

नराज छम्द ॥

सु त्रास देव भाजियं ॥ बिसेख लाज लाजियं ॥ बिसिख कारमंक से ॥ सु देव लोक मो बसे ॥६॥४७॥ तबै प्रकोप देबि हुऐ ॥ चली सु ससत्र असत्र लै ॥ सु मुद्द पानि पान कै ॥ गजी क्रिपान पानि लै ॥१०॥४८॥

रसावल छम्द ॥

सुनी देव बानी ॥ चढ़ी सिंघ रानी ॥ सुभम्म ससत्र धारे ॥ सभै पाप टारे ॥११॥४६॥ करे नद्द नादम्म ॥ महाँ

मद्द मादम ॥ भयो सम्ख सोरम ॥ सुणयो चार ओरम ॥१२॥५०॥ उते दैत धाए ॥ बडी सैन लिआए ॥ मुखं रकत नैणम ॥ बके बम्क बैणम ॥१३॥५१॥ चवम चार ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ लए बाण पाणम ॥ सु काती क्रिपाणम ॥१४॥५२॥ मंडे मद्ध जम्गं ॥ प्रहारम खतम्गं ॥ करउती कटारम ॥ उठी ससत्र झारम ॥१५॥५३॥ महाँ बीर धाए ॥ सरोघं चलाए ॥ करैं बार बैरी ॥ फिरें जिउ गंगैरी ॥१६॥५४॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

उॅधत सटायं उतै सिंघ धायो ॥ इतै सम्ख लै हाथ देवी बजायो ॥ पुरी चउदहूंयं रहिओ नाद पूरम ॥ चमक्किओ मुखं जुद्ध के मधि नूरम ॥१७॥५५॥ तबै धूम्र नैणम मचिओ

ससत्र धारी ॥ लए सम्ग जोधा बडे बीर भारी ॥ लयो बेढ़ि पूबम्म कियो नाद उँचम्म ॥ सुणे गरभणीआन के गरभ मुच्चम्म ॥१८॥५६॥ सुणिओ नाद स्रवणम्म कियो देवि कोपं ॥ सजे चरम बरमं धरे सीस टोपं ॥ भई सिंघ सुआरम्म कियो नाद उच्चम्म ॥ सुने दीह दानवान के मान मुच्चम्म ॥१६॥५७॥ महाँ कोप देवी धसी सैन मदधं ॥ करे बीर बम्के तहा अद्ध अद्धं ॥ जिसै धाइ कै सूल सैथी प्रहारयो ॥ तिनै फेरि पाणम्म न बाणम्म सम्भारयो ॥२०॥५८॥

रसावल छम्द ॥

जिसै बाण मारिओ ॥ तिसै मार डारिओ ॥ जितै सिंघ धायो ॥ तितै सैन घायो ॥२१॥५६॥ जिते घाइ डाले

॥ तिते घारि घाले ॥ समुह सत्रु आयो ॥ सु जाने न पायो ॥२२॥६०॥ जिते जुज्झ रुझे ॥ तिते अंत जुज्झे ॥ जिनै ससत्र घाले ॥ तिते मार डाले ॥२३॥६१॥ तबै मात काली ॥ तपी तेज वाली ॥ जिसै घाव डारयो ॥ सु सुरगं सिधारयो ॥२४॥६२॥ घरी अदध मदधं ॥ हनियो सैन सुद्धं ॥ हनियो धूम्र नैणम ॥ सुनयो देव गैणम ॥२५॥६३॥

दोहरा ॥ भजी बिरूथनि दानवी गई भूप के पास ॥ धूम्र नैण काली हनयो भजियो सैन निरास ॥२६॥६४॥

इति स्री बचित्र नाटके चम्डी चरित्रे धूम्र नैण बधहि दुतीआ धिआइ सम्पूरण

मसतु सुभ मसतु ॥२॥ अफजू ॥

अथ चम्ड मुंड जुद्ध कथनम ॥

दोहरा ॥

इह बिधि दैत सम्घार कर धवला चली अवास ॥ जो यह कथा पढ़ै सुनै रिधि सिधि ग्रिह तास ॥१॥६५॥

चउपई ॥

धूम्र नैण जब सुणे सम्घारे ॥ चम्ड मुंड तब भूप हकारे ॥ बहु बिधि कर पठए सनमाना ॥ है गै पति दीए रथ नाना ॥२॥६६॥ प्रिथम निरखि देबीअहि जे आए ॥ ते धवला गिरि ओर पठाए ॥ तिन की तनिक भनक सुनि पाई ॥ निसिरी ससत्र असत्र लै माई ॥३॥६७॥

रूआल छम्द ॥

साजि साजि चले तहाँ रण राछसेंद्र अनेक ॥ अरध मुंडित मुंडितेक जटाधरे

सु अरेक ॥ कोपि ओपं दै सबै कर ससत्र असत्र नचाइ ॥ धाइ धाइ करैं प्रहारन तिच्छ तेग कम्पाइ ॥४॥६८॥ ससत्र असत्र लगे जिते सभ फूल माल हुए गए ॥ कोप ओप बिलोकि अतिभुति दानवम्‍ बिसमै भए ॥ दउर दउर अनेक आयुध फेर फेर प्रहारहीं॥ जूझ जूझ गिरे अरेक सु मार मार पुकारहीं॥५॥६९॥ रेल रेल चले हइंद्रन पेल पेल गजेंद्र ॥ झेल झेल अनम्‍त आयुध हेल हेल रिपें द्र ॥ गाहि गाहि फिरे फवज्जन बाहि बाहि खतम्‍ग ॥ अंग भम्‍ग गिरे कहूं रण रम्‍ग सूर उतम्‍ग॥६॥७०॥ झार झार फिरै सरोतम डारि झारि क्रिपान ॥ सैल से रण पुंज कुंजर सूर सीस पखान ॥ बक्क नक्क भुजा सु सोभित चक्क से

रथ चक्क्र ॥ केस पास सिबाल सोहत असथ चूर सरक्क्र ॥७॥७१॥ सज्जि सज्जि चले हथिआरन गज्जि गज्जि गजे ंद्र ॥ बज्जि बज्जि सबज्ज बाजन भज्जि भज्जि हएंद्र ॥ मार मार पुकार कै हथीआर हाथ सम्भार ॥ धाइ धाइ परे निसाचर बाइ सम्ख अपार ॥८॥७२॥ सम्ख गोयमं गजियं अर सजियं रिपु राज ॥ भाजि भाजि चले किते तज लाज बीर न्रिलाज ॥ भीम भेरी भुंकीअं अरु धुंकीअं सु निसाण ॥ गाहि गाहि फिरे फवज्जन बाहि बाहि गदाण ॥९॥७३॥ बीर कम्गने बम्धहीं अरु अच्छरैं सिर तेलु ॥ बीनि बीनि बरे बरम्गनि डारि डारि फुलेल ॥ घालि घालि बिवान ले गी फेरि फेरि सु बीर ॥ कूदि कूदि परे तहाँ ते

झागि झागि सु तीर ॥१०॥७४॥ हाँकि हाँकि लरे तहाँ रण रीझि रीझि भटेंद्र ॥ जीति जीति लयो जिन्है कइ बार इंद्र उपेंद्र ॥ काटि काटि दए कपाली बाँटि बाँटि दिसान ॥ डाटि डाटि कर दलम्‍ सुर पह्‍गु पूब पिसान ॥११॥७५॥ धाइ धाइ सम्घारीअं रिपु राज बाज अनम्त ॥ स्रोण की सरिता उठी रण मद्‍िध रूप दुरम्त ॥ बाण अउर कमाण सैथी सूल तिच्छ कुठार ॥ चम्ड मुंड हणे दोऊ कर कोप कालि करवार ॥१२॥७६॥

दोहरा ॥

चम्ड मुंड मारे दोऊ काली कोप करवार ॥ अउर जिती सैना हुती छिन मो दई सम्घार ॥१३॥७७॥

इति स्री बचित्र नाटके चम्डी चरित्रे

चम्ड

मुंड बधहि त्रितियो धिआइ सम्पूरण मसत

सुभ मसतु ॥३॥ अफजू ॥

अथ रकत बीरज जुद्ध कथनम ॥

सोरठा ॥

सुनी भूप इम गाथ चम्ड मुंड काली हने ॥ बैठ भ्रात सो भ्रात मंत्र करत इह बिधि भए ॥१॥७८॥

चउपई ॥ रकत बीज तब भूपि बुलायो ॥ अमित दरब दै तहाँ पठायो ॥ बहु बिधि दई बिरूथनि सम्गा ॥ है गै रथ पैदल चतुरम्गा ॥२॥७९॥ रकत बीज दै चलयो नगारा ॥ देव लोग लउ सुनी पुकारा ॥ कम्पी भूमि गगन थहराना ॥ देवन जुति दिवराज डराना ॥३॥८०॥ धवला गिरि के जब

तट आए ॥ दुंदभि ढोल म्रिदम्ग बजाए ॥ जब ही सुना कुलाहल काना ॥ उतरी ससत्र असत्र लै नान्हा ॥४॥८१॥ छहबर लाइ बरखीअं बाणम ॥ बाजराज अरु गिरे किकाणम ॥ ढहि ढहि परे सुभट सिरदारा ॥ जनु कर कटे बिरछ सम्गि आरा ॥५॥८२॥ जे जे स्त्रतु सामुहे भए ॥ बहुर जीअत ग्रिह को नही गए ॥ जिह पर परत भइ तरवार्रा ॥ इकि इकि ते भए दो दो चारा ॥६॥८३॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

झिमी तेज तेगं सरोसम्म प्रहारम्म ॥ खिमी दामनी जाणु भादों मझारम्म ॥ उठे नद्द नादम्म कड़क्के कमाणम्म ॥ मचयो लोह क्रोहम्म अभूतम्म भयाणम्म ॥७॥८४॥ बजे भेर भेरी जुझारे

झणक्के ॥ परी कुट्ट कुट्टं लगे धीर धक्के ॥ चवी चावडियं नफीरम्‍ रणक्कम्‍ ॥ मनो बिच्चरम्‍ बाघ बम्के बबक्कम्‍ ॥८॥८५॥ उते कोपियं स्रोणबिंदम्‍ सु बीरम्‍ ॥ प्रहारे भली भाँति सो आनि तीरम्‍ ॥ उते दउर देवी करयो खह्ग पातम्‍ ॥ गिरयो मूरछा हुऐ भयो जानु घातम्‍ ॥९॥८६॥ छुटी मूरछनायं महा बीर गज्जयो ॥ घरी चार लौ सार सो सार बज्जयो ॥ लगे बाण स्रोणम्‍ गिरयो भूमि जुद्धं ॥ उठे बीर तेते कीए नाद क्रूद्धं ॥१०॥८७॥ उठे बीर जेते तिते कालि कूटे ॥ परे चरम बरमं कहूं गात टूटे ॥ जिती भूमि मद्धं परी स्रोण धारम्‍ ॥ जगे सूर तेते कीए मार मारम्‍ ॥११॥८८॥ परी कुट्ट कुट्टं रुले

तच्छ मुच्छम ॥ कहू मुंड तुंडं कहूं मासु मुछम ॥ भयो चार सै कोस लौ बीर खेतम ॥ बिदारे परे बीर ब्रिंदम बिचेतम ॥१२॥८६॥

रसावल छम्द ॥

चहूं ओर ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ झंडा गड्ड गाढे ॥ मचे रोस बाढे ॥१३॥९०॥ भरे बीर हरखं ॥ करी बाण बरखं ॥ चवम चार ढुक्के ॥ पछे आहु रुक्के ॥१४॥९१॥ परी ससत्र झारम ॥ चली स्रोण धारम ॥ उठे बीर मानी ॥ धरे बान पानी ॥१५॥९२॥ महा रोसि गज्जे ॥ तुरी नाद बज्जे ॥ भरे रोस भारी ॥ मच्चे छत्र धारी ॥१६॥९३॥ हकम हाक बज्जी ॥ फिरै सैण भज्जी ॥ परयो लोह क्रोहम ॥ छके सूर सोहम ॥१७॥९४॥ गिरे अंग

भम्गं ॥ दवम्‍ जानु दम्गं ॥ कड़ंकार
छुट्टे ॥ झणम्कार उठे ॥१८॥९५॥
कटा कट्ट बाहैं ॥ उभै जीत चाहैं ॥
महाँ म्‍दद माते ॥ तपे तेज ताते
॥१९॥९६॥ रसम्‍ रुद्र राचे ॥ उभै जुद्ध
माचे ॥ करैं बाण अरचा ॥ धनुर बेद
चरचा ॥२०॥९७॥ मचे बीर बीरम्‍ ॥
उठी झार तीरम्‍ ॥ गलो गड्ड फोरैं ॥
नही नैन मोरैं ॥२१॥९८॥ समुह
ससत्र बरखे ॥ महिखुआसु करखे ॥
करैं तीर मारम्‍ ॥ बहैं लोह धारम्‍
॥२२॥९९॥ नदी स्रोण पूरम्‍ ॥ फिरी
गैण हूरम्‍ ॥ गजै गैण काली ॥ हसी
खङ्पराली ॥२३॥१००॥ कहूं बाजि
मारे ॥ कहूं सूर भारे ॥ कहूं चरम टूटे
॥ फिरैं गज फूटे ॥२४॥१०१॥ कहूं
बरम बेधे ॥ कहूं चरम छेदे ॥ कहूं

पील परमं ॥ कटे बाजि बरमं ॥२५॥१०२॥ बली बैर रुज्झे ॥ समुह सार झुज्झे ॥ लखे बीर खेतम ॥ नच्चे भूत प्रेतम ॥२६॥१०३॥ नच्चे मासहारी ॥ हसे बयोम चारी ॥ किलम्कार कम्कम ॥ मच्चे बीर बम्कम ॥२७॥१०४॥ छुभे छत्र धारी ॥ महिखुआस चारी ॥ उठे छिच्छ इच्छम ॥ चले तीर तिच्छम ॥२८॥१०५॥ गणम गाँध्रबेअं ॥ चरम चारणेअं ॥ हसे सिध सिद्धं ॥ मचे बीर क्रुद्धं ॥२९॥१०६॥ डका ड्डक डाकैं॥ हक्का हक्क हाकैं ॥ भका भुंक भेरी ॥ डमक डाम डेरी ॥३०॥१०७॥ महा बीर गाजे ॥ नवम नाद बाजे ॥ धरा गोम गज्जे ॥ द्र ुगा दैत बज्जे ॥३१॥१०८॥

बिजै छन्द ॥
जेतक बाण चले अरि ओर ते फूल की माल हुऐ कम्ठ बिराजे ॥ दानव पुंगव पेख अचम्भव छोड भज्जे रण एक न गाजे ॥ कुंजर पुंज गिरे तिह ठौर भरे सभ स्रोणत पै गन ताजे ॥ जानुक नीरध मद्धि छपे भ्रमि भूधर के भय ते नग भाजे ॥३२॥१०६॥

मनोहर छन्द ॥
स्री जगनाथ कमान लै हाथ परमाथिन सम्ख स्रजयो जब जुद्धं ॥ गाहत सैण सम्घारत सूर बबक्कति सिंघ भ्रमयो रण क्रुद्धं ॥ कउचह भेद अभेदित अंग सुरम्ग उतम्ग सु सोभित सुद्धं ॥ मानो बिसाल बड़वानल जुआल समुद्र के मद्धि बिराजति उॅधं ॥३३॥११०॥

बिजै छन्द ॥

पूर रही भव भूर धनुर धुनि धूर उडी नभ मंडल छायो ॥ नूर भरे मुख मार गिरे रण हूरन हेरि हियो हुलसायो ॥ पूरन रोस भरे अरि तूरण पूरि परे रण भूमि सुहायो ॥ चूर भए अरि रूरे गिरे भट चूरण जानुक बैद बनायो ॥३४॥१११॥

सम्गीत भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

कागड़दम्ग काती कटारी कड़ाकम ॥ तागड़दम्ग तीरम तुपकम तड़ाकम ॥ झागड़दम्ग नागड़दम्ग बागड़दम्ग बाजे ॥ गागड़दम्ग गाजी महा गज्ज गाजे ॥३५॥११२॥ सागड़दम्ग सूरम कागड़दम्ग कोपं ॥ पागड़दम्ग परमं रणम पाव रोपं ॥ सागड़दम्ग ससत्रं झागड़दम्ग झारैं॥ बागड़दम्ग बीरम डागड़दम्ग डकारैं ॥३६॥११३॥

चागड़दम्ग चउपे बागड़दम्ग बीरम्म ॥
मागड़दम्ग मारे तनम्म तिच्छ तीरम्म ॥
गागड़दम्ग गज्जे सु बज्जे गहीरैं॥
कागड़दम्ग कवियान कथे कथीरैं
॥३७॥११४॥ दागड़दम्ग दानो
भागड़दम्ग भाजे ॥ गागड़दम्ग गाजी
जागड़दम्ग गाजे ॥ छागड़दम्ग छउही
छुरे प्रे छड़ाके ॥ तागड़दम्ग तीरम्म
तुपकम्म तड़ाके ॥३८॥११५॥ गागड़दम्ग
गोमाय गज्जे गहीरम्म ॥ सागड़दम्ग
सम्खं नागड़ दम्ग नफीरम्म ॥
बागड़दम्ग बाजे बज्जे बीर खेतम्म ॥
नागड़दम्ग नाचे सु भूतम्म परेतम्म
॥३९॥११६॥ तागड़दम्ग तीरम्म
बागड़दम्ग बाणम्म ॥ कागड़दम्ग काती
कटारी क्रिपाणम्म ॥ नागड़दम्ग नादम्म
बागड़ दम्ग बाजे ॥ सागड़दम्ग सूरम्म

रागड़द्म्ग राजे ॥४०॥११७॥
सागड़द्म्ग सम्खं नागड़द्म्ग नफीरम्‍ ॥ गागड़द्म्ग गोमाय ग्‌जे गहीरम्‍ ॥ नागड़द्म्ग नगारे बागड़द्म्ग बाजे ॥ जागड़द्म्ग जोधा गागड़द्म्ग गाजे ॥४१॥११८॥

नराज छम्द् ॥

जितेक रूप धारियं ॥ तितेक देबि मारियं ॥ जितेक रूप धारहीं॥ तितिओ द्रुगा सम्घारहीं ॥४२॥११९॥
जितेक ससत्र वा झरे ॥ प्रवाह स्रोन के परे ॥ जितीक बिम्दुका गिरैं॥ सु पान कालिका करैं ॥४३॥१२०॥

रसावल छम्द् ॥

हूओ स्रोण हीनम्‍ ॥ भयो अंग छीनम्‍ । गिरिओ अंत झूमं ॥ मनो मेघ भूमं ॥४४॥१२१॥ सबै देव हरखे ॥ सुमन

धार बरखे ॥ रकतबिम्दु मारे ॥ सबै
सम्तुबारे ॥४५॥१२२॥ इति स्री बचित्र
नाटके चम्डी चरित्रे रकत
बीरज बधह चतुरथ धिआइ सम्पूरण
मसतु
सुभ मसतु ॥४॥ अफजू ॥
अथ निसुंभ जुद्ध कथनम ॥
दोहरा ॥
सुंभ निसुंभ सुणयो जबै रकत बीरज
को नास ॥ आप चढ़त भे जोर दल
सजे परस अरु पासु ॥१॥१२३॥
भुजम्ग प्रयात छम्द ॥
चढ़े सुंभ नैसुंभ सूरा अपारम ॥ उठे
नद्द नादम सु धउसा धुकारम ॥ भई
असट सै कोस लौ छत्र छायं ॥ भज्जे
चम्द्र सूरम डरयो देवरायं ॥२॥१२४॥
भका भुक्क भेरी ढका ढुक्क ढोलम ॥

फटी नख सिंघं मुखं डड्ढ कोलम्‍ ॥ डमा डह्लम डउरू डका डुक डंकम्‍ ॥ रड़े ग्रिद्ध ब्रिद्धं किलक्कार कम्कम्‍ ॥३॥१२५॥ खुरम्‍ खेह उठी रहिओ गैण पूरम्‍ ॥ दहले सिंध बिंधं भए पुब चूरम्‍ ॥ सुणयो सोर काली गहे ससत्र पाणम्‍ ॥ किलक्कार जेमी हने जम्ग जुआणम्‍ ॥४॥१२६॥

रसावल छम्द ॥

गज्जे बीर गाजी ॥ तुरे तुंद ताजी ॥ महिखुआस करखे ॥ सरम्‍ धार बरखे ॥५॥१२७॥ इतै सिंघ गजयो ॥ महाँ सम्ख बजयो ॥ रहयो नाद पूरम्‍ ॥ छुही गैणि धूरम्‍ ॥६॥१२८॥ सबै ससत्र साजे ॥ घणम्‍ जेम गाजे ॥ चले तेज तै कै ॥ अनम्त ससत्र लै कै ॥७॥१२९॥ चहूं ओर ढूके ॥ मुखं

मार कूके ॥ अनम्त ससत्र बज्जे ॥ महाँ बीर गज्जे ॥८॥१३०॥ मुखं नैण रकतम्‍ ॥ धरे पाण सकतम्‍ ॥ कीए क्रोध उँठे ॥ सरम्‍ ब्रिसटि बुठ्ठे ॥९॥१३१॥ किते दुसट कूटे ॥ अनम्तासत्र छूटे ॥ करी बाण बरखं ॥ भरी देबि हरखं ॥१०॥१३२॥

बेली बिद्रुम छम्द ॥

कह कह सु कूकति कम्कियं ॥ बह बहत बीर सु बम्कियं ॥ लह लहत बाण क्रिपाणयं ॥ गह गहत प्रेत मसाणयं ॥११॥१३३॥ डह डहत डवर डमंकयं ॥ लह लहत तेग त्रमंकयं ॥ ध्रम ध्रमत साँग धमंकयं ॥ बबकम्त बीर सु बम्कयं ॥१२॥१३४॥ छुटकम्त बाण कमाणयं ॥ हहरम्त खेत खत्राणयं ॥ डहकम्त डामर डाकणी ॥

कह कहक कूकत जुह्नगणी ॥१३॥१३५॥ उफटंत स्रोणत छिच्छयं ॥ बरखंत साइक तिच्छयं ॥ बबकम्त बीर अनेकयं ॥ फिकरम्त सिआर बिसेखयं ॥१४॥१३६॥ हरखंत स्रोणत रम्गणी ॥ बिहरम्त देबि अभम्गणी ॥ बबकम्त केहर डोलही ॥ रण रम्ग अभम्ग कलोलहीं ॥१५॥१३७॥ ढम ढमत ढोल ढमक्कयं ॥ धम धमत साँग ध्रमक्कयं ॥ बह बहत क्रुद्ध क्रिपाणयं ॥ जुझंत जोध जुआणयं ॥१६॥१३८॥

दोहरा ॥

भज्जी चमू सभ दानवी सुंभ निरख निज नैण ॥ निकट बिकट भट जे हुते तिन प्रति बुलिओ बैण ॥१७॥१३९॥

नराज छम्द ॥

निसुंभ सुंभ कोप कै ॥ पठिओ सु पाव रोप कै ॥ कहयो कि सीघ्र जाइयो ॥ दुगाहि बाँध लिआइयो ॥१८॥१४०॥ चड़यो सु सैण सज्जि कै ॥ सुकोप सूर गज्जि कै ॥ उठे बजन्त्र बाजि कै ॥ चलिओ सुरेस भाजि कै ॥१९॥१४१॥ अनन्त सूर सन्ग लै ॥ चलिओ सु दुंदभीन दै ॥ हकार सूरमा भरे ॥ बिलोकि देवता डरे ॥२०॥१४२॥

मधुभार छन्द ॥

कम्पयो सुरेस ॥ बुलयो महेस ॥ किन्नो बिचार ॥ पुछे जुझार ॥२१॥१४३॥ कीजै सु मित्र ॥ कउने चरित्र ॥ जा ते सु माइ ॥ जीतै बनाइ ॥२२॥१४४॥ सकतैं निकार ॥ भेजो अपार ॥ सत्रून जाइ ॥ हनिहैं रिसाइ

॥२३॥१४५॥ सोइ काम कीन ॥ देवन प्रबीन ॥ सकतैं निकार ॥ भेजी अपार ॥२४॥१४६॥

बिरध नराज छम्द ॥

चली सकति सीघ्र सी क्रिपाण पाणि धार कै ॥ उठे सु ग्रिध ब्रिध डउर डाकणी डकार कै ॥ हसे सु कम्क बम्कयं कबम्ध अंध उठही ॥ बिसेख देवतारु बीर बाण धार बुठ्ठही ॥२५॥१४७॥

रसावल छम्द ॥

सबै सकति ऐ कै ॥ चली सीस निऐ कै ॥ महा असत्र धारे ॥ महाँ बीर मारे ॥२६॥१४८॥ मुखं रकत नैणम ॥ बकै बम्क बैणम । धरे असत्र पाणम ॥ कटारी क्रिपाणम ॥२७॥१४९॥ उतै दैत गाजे ॥ तुरी नाद बाजे ॥ धरे चार

चरमं ॥ स्रजे क्रूर बरमं ॥२८॥१५०॥
चहूं ओर गरजे ॥ सबै देव लरजे ॥
छुटे तिच्छ तीरम ॥ कटे चउर चीरम
॥२६॥१५१॥ रसम रुद्द्र रत्ते ॥ महाँ
तेज तत्ते ॥ करी बाण बरखं ॥ भरी
देबि हरखं ॥३०॥१५२॥ इते देबि मारै
॥ उतै सिंघ फारै ॥ गणम गूढ़ गरजैं ॥
सबै दैत लरजैं ॥३१॥१५३॥ भइ बाण
बरखा ॥ गए जीति करर्खा ॥ सबै
दुसट मारे ॥ मया सम्तुबारे
॥३२॥१५४॥ निसुंभम सम्घारिओ ॥
दलम दैत मारिओ ॥ सबै दुसट भाजे
॥ इतै सिंघ गाजे ॥३३॥१५५॥ भई
पुहप बरखा ॥ गए जीत करखा ॥
जयं सम्त जम्पै ॥ त्रसे दैत कम्पै
॥३४॥१५६॥ इति स्री बचित्र नाटके
चम्डी चरित्रे निसुंभ

बधह पंचमों धिआइ सम्पूरण मसत सुभ

मसतु ॥५॥ अफजू ॥

अथ सुंभ जुद्ध कथनम ॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

लघू भ्रात जुझयो सुणयो सुंभ रायं ॥ सजे ससत्र असत्रं चढ़िओ चउप चायं ॥ भयो नाद उचम रहयो पूर गैणम ॥ त्रसे देवता दैत कम्पधे त्रिनैणम ॥१॥१५७॥ डरयो चार बकत्रं टरयो देव राजम ॥ डिगे पूब सरबम स्रजे सुभ्र साजम ॥ परे हूह दै कै भरे लोह क्रोहम ॥ मनो मेरु को सातवों स्रिंग सोहम ॥२॥१५८॥ सजयो सैण सुंभम कियो नाद उॅचम ॥ सुणे गरभणीआन के गरभ मुचम ॥ परयो लोह क्रोहम उॅठी ससत्र झारम ॥ चवी चावडा

डाकणियं डकारम ॥३॥१५६॥ बहे ससत्र असत्रं कटे चरम बरमं ॥ भले कै निबाहयो भटं सुआमि धरमं ॥ उठी कूह जूहम गिरे चउर चीरम ॥ रूले तच्छ मुच्छम परी गच्छ तीरम ॥४॥१६०॥ गिरे अंकुसम बारुणम बीर खेतम ॥ नचे कम्ध हीणम कबम्धं अचेतम ॥ उडै ं ग्रिद्ध ब्रिद्धं रड़ै ं कम्क बम्कम ॥ भका भुंक भेरी डहा डूह डंकम ॥५॥१६१॥ टका टुक्क टोपं ढका ढुक्क ढालम ॥ तछा मुच्छ तेगं बकै बिक्करालम ॥ हला चाल बीरम धमा धंमि सागं ॥ परी हाल हूलम सुणिओ लोग नागं ॥६॥१६२॥ डकी डाकणी जोगणियं बितालम ॥ नचे कम्ध हीणम कबम्धं कपालम ॥ हसे देव सरबम रिसयो दानवेसम ॥ किधो

अगनि जुआलम्‍ भयो आप भेसम्‍ ॥७॥१६३॥

दोहरा ॥

सुंभासुर जेतक असुर पठए कोप बढाइ ॥ ते देबी सोखत करे बूंद तवा की निआइ ॥८॥१६४॥

नराज छम्द ॥

सु बीर सैण सज्जि कै ॥ चड़्यो सकोप गज्जि कै ॥ चलयो सु ससत्र धार कै ॥ पुकार मार मार कै ॥९॥१६५॥

सम्गीत मधुभार छम्द ॥

कागड़दम्‍ कड़ाक ॥ तागड़दम्‍ तड़ाक ॥ सागड़दम्‍ सु बीर ॥ गागड़दम्‍ गहीर ॥१०॥१६६॥ नागड़दम्‍ निसाण ॥ जागड़दम्‍ जुआण ॥ नागड़दी निहम्ग ॥ पागड़दी पिलम्ग ॥११॥१६७॥

तागड़दी तमक्कि ॥ लागड़दी लहक्कि ॥ कागड़दी क्रिपाण ॥ बाहैं जुआण ॥१२॥१६८॥ खागड़दी खतम्ग ॥ नागड़दी निहम्ग ॥ छागड़दी छुटंत ॥ आगड़दी उडंत ॥१३॥१६९॥ पागड़दी पवम्ग ॥ सागड़दी सुभम्ग ॥ जागड़दी जुआण ॥ झागड़दी झुझाण ॥१४॥१७०॥ झागड़दी झड़ंग ॥ कागड़दी कड़ंग ॥ तागड़दी तड़ाक ॥ चागड़दी चटाक ॥१५॥१७१॥ घागड़दी घबाक ॥ भागड़दी भभाक ॥ कागड़दी कपालि ॥ नच्ची बिक्राल ॥१६॥१७२॥

नराज छम्द ॥

अनम्त दुसट मारयं ॥ बिअंत सोक टारयं ॥ कमंध अंध उठियं ॥ बिसेख बाण बुट्ठीयं ॥१७॥१७३॥ कड़ाक

करमुकम्म उधं ॥ सड़ाक सैहथी जुधं ॥ बिअंत बाण बरखयं ॥ बिसेख बीर हरखयं ॥१८॥१७४॥

सम्गीत नराज छम्द ॥

कड़ा कड़ी क्रिपाणयं ॥ जटा जुटी जुआणयं ॥ सु बीर जागड़दम्म जगे ॥ लड़ाक लागड़दम्म पगे ॥१९॥१७५॥

रसावल छम्द ॥

झमी तेग झट्टटं ॥ छुरी छिङ्प्र छुट्टटं ॥ गुरम्म गुरज गट्टटं ॥ पलम्मगं पिसट्टटं ॥२०॥१७६॥ किते स्रोण चट्टटं ॥ किते सीस फुटं ॥ कहूं हूह छुटं ॥ कहूं बीर उॅठं ॥२१॥१७७॥ कहूं धूरि लुटं ॥ किते मार रट्टटं ॥ भणै जस्स भट्टटं ॥ किते पेट फट्टटं ॥२२॥१७८॥ भजे छत्रि थटं ॥ किते खून खट्टटं ॥ किते दुसट दट्टटं ॥

फिरे जयों हरट्टं ॥२३॥१७६॥ सजे सूर सारे ॥ महिखुआस धारे ॥ लए खह्ग आरे ॥ महा रोह वारे ॥२४॥१८०॥ सही रूप कारे ॥ मनो सिंधु खारे ॥ कई बार गारे ॥ सु मारम्‍ उचारे ॥२५॥१८१॥ भवानी पछारे ॥ जवा जेमि जारे ॥ बडे ई लुझारे ॥ हुते हीए वारे ॥२६॥१८२॥ इकम्‍ बार टारे ॥ ठमं ठोक ठारे ॥ बली मार डारे ॥ ढमक्के ढढारे ॥२७॥१८३॥ बहे बाणिआरे ॥ किते तीर तारे ॥ लखे हाथ बारे ॥ दिवाने दिदारे ॥२८॥१८४॥ हणे भूमि पारे ॥ किते सिंघ फारे ॥ किते आपु बारे ॥ जिते दैत भारे ॥२९॥१८५॥ तिते अंत हारे ॥ बडे ई अड़िआरे ॥ खरे ई बरिआरे ॥ करूरम्‍ करारे ॥३०॥१८६॥ लपक्के

ललारे ॥ अरीले अरिआरे ॥ हणे कालिका रे ॥ भज्जे रोहवारे ॥३१॥१८७॥

दोहरा ॥

इह बिधि दुसट प्रजार कै ससत्र असत्र करि लीन ॥ बाण बूंद प्रिथमे बरख सिंघ नाद पुन कीन ॥३२॥१८८॥

रसावल छम्द ॥

सुणयो सुंभ रायं ॥ चड़्यो चउप चायं ॥ सजे ससत्र पाणम ॥ चढ़े जम्ग जुआणम ॥३३॥१८६॥ लगे ढोल ढंके ॥ कमाणम कड़ंके ॥ भए नद्द नादम ॥ धुणम निर बिखादम ॥३४॥१६०॥ चमक्की क्रिपाणम ॥ हठे तेज माणम ॥ महाँ बीर हुंके ॥ सु नीसाण द्रुंके ॥३५॥१६१॥ चहूं ओर गरजे ॥ सबै देव लरजे ॥ सरम धार बरखे ॥ मया

पाण परखे ॥३६॥१९२॥ चौपई ॥ जे लै ससत्रु सामुहे धए ॥ तिते निधन कहुं प्रापत भए ॥ झमकति भई असिन की धारा ॥ भभके रुंड मुंड बिकरारा ॥३७॥१९३॥

दोहरा ॥

है गै रथ पैदल कटे बचयो न जीवत कोइ ॥ तब आपै निकसयो न्रिपति सम्भु करै सो होइ ॥३८॥१९४॥

चौपई ॥

सिव दूती इकि दुगा बुलाई ॥ कान लाग नीकै समझाई ॥ सिव कौ भेज दीजीऐ तहाँ ॥ दैत राज इसथित है जहाँ ॥३९॥१९५॥ सिव दूती जब इम सुन पावा ॥ सिवहि दूत कर उतै पठावा ॥ सिव दूती ता ते भयो नामा ॥ जानत सकल पुरख अरु बामा

॥४०॥१९६॥ सिव कही दैत राज सुनि बाता ॥ इह बिधि कहयो तुमहु जगमाता ॥ देवन कौ दै कै ठकुराई ॥ कै माँडहु हम सम्ग लराई॥४१॥१९७॥ दैत राज इह बात न मानी ॥ आप चले जूझन अभिमानी ॥ गरजति कालि काल जयों जहाँ ॥ प्रापति भयो असुर पति तहाँ ॥४२॥१९८॥ चमकी तहाँ असिन की धारा ॥ नाचे भूत प्रेत बैतारा ॥ फरके अंध कबम्ध अचेता ॥ भिभरे भईरव भीम अनेका ॥४३॥१९९॥ तुरही ढोल नगारे बाजे ॥ भाँति भाँति जोधा रण गाजे ॥ ढढि डफ डमरु डुगडुगी घनी ॥ नाइ नफीरी जाति न गनी ॥४४॥२००॥

मधुभार छम्द ॥

हुंके किकाण ॥ धुंके निसाण ॥ सज्जे

सु बीर ॥ गज्जे गहीर ॥४५॥२०१॥ झुक्के निझक्क ॥ बज्जे उबक्क ॥ सज्जे सुबाह ॥ अछै उछाह ॥४६॥२०२॥ कट्टे किकाण ॥ फुट्टे चवाण ॥ सूलम्‍ सड़ाक ॥ उॅठे कड़ाक ॥४७॥२०३॥ गज्जे जुआण ॥ बज्जे निसाण ॥ सज्जे रजेंद्र ॥ गज्जे गजेंद्र ॥४८॥२०४॥

भुजम्‍ग प्रयात छम्‍द ॥

फिरे बाजियं ताजियं इत्त उत्तम्‍ ॥ गज्जे बारुणम्‍ दारुणम्‍ राज पुत्रं ॥ बजे सम्‍ख भेरी उठे सम्‍ख नादम्‍ ॥ रणम्‍कै नफीरी धुणम्‍ निर बिखादम्‍ ॥४९॥२०५॥ कड़क्के क्रिपाणम्‍ सड़क्कार सेलम्‍ ॥ उठी कूह जूहम्‍ भइ रेल पेलम्‍ ॥ रुले तच्छ मुच्छम्‍ गिरे चउर चीरम्‍ ॥ कहूं हथ्थ मथ्थं कहूं बरम

बीरम ॥५०॥२०६॥

रसावल छन्द ॥

बली बैर रुज्झे ॥ समुह सार जुज्झे ॥ सम्भारे हथिआरम ॥ बकै ं मार मारम ॥५१॥२०७॥ सबै ससत्र सज्जे ॥ महा बीर गज्जे ॥ सरम ओघ छुट्टे ॥ कड़क्कार उठे ॥५२॥२०८॥ बज्जैं बादित्रेअं ॥ हसैं गाँध्रबेअं ॥ झंडा गड्ड जुट्टे उट्ठे सरम सम्ज फुट्टे ॥५३॥२०६॥ चहूं ओर उट्ठे ॥ सरम ब्रिसटि बुट्ठे ॥ करोधी करालम ॥ बकैं बिकरालम ॥५४॥२१०॥

भुजम्ग प्रयात छन्द ॥

किते कुठीअं बुठीअं ब्रिसट बाणम ॥ रणम डुलीअं बाजि खाली पलाणम ॥ जुझे जोधयं बीर देवम अदेवम ॥ सुभे ससत्र साजा मनो साँतनेवम

॥५५॥२११॥ गज्जे गज्जियं सरब सज्जे पवम्गं ॥ जुद्धं जुट्टीअं जोध छुट्टे खतम्गं ॥ तड़क्के तबल्लम् झड़ंके क्रिपाणम् ॥ सड़क्कार सेलम् रणम्के निसाणम् ॥५६॥२१२॥ ढमा ढल्लम ढोलम् ढका ढुक्क ढालम् ॥ गहा जूह गज्जे हयं हाल चालम् ॥ सटा सट्ट सेलम् खहा खूनि खह्गं ॥ तुट्टे चरम बरम उठे नाल अह्गं ॥५७॥२१३॥ उठे अह्गि नालम् खहे खोल खह्गं ॥ निसामावसी जाणु मासाण जह्गं ॥ डकी डाकणी डामरु डउर डक्कम् ॥ नचे बीर बैताल भूतम् भभक्कम् ॥५८॥२१४॥

बेली बिद्रम छम्द ॥

सरबासत्र आवत भे जिते ॥ सभ काटि दीन द्रुगा तिते ॥ अरि और जेतिक

डारीअं ॥ तेऊ काटि भूमि उतारीअं ॥५६॥२१५॥ सर आप काली छम्डीअं ॥ सरबासत्र सत्रु बिहम्डीअं ॥ ससत्र हीन जबै निहारिओ ॥ जै सबद देवन उचारिओ ॥६०॥२१६॥ नभ मद्धि बाजन बाजहीं ॥ अविलोक देव सु गाजहीं ॥ लखि देव बारम्‍ बारहीं ॥ जै सबद सरब पुकारहीं ॥६१॥२१७॥ रण कोप कालि करालियं ॥ खट अग पाणि उछालियं ॥ सिर सुंभ हथ दुछम्डियं ॥ इक चोट दुसट बिहम्डियं ॥६२॥२१८॥

दोहरा ॥

जिम सुंभासुर को हना अधिक कोप कै काल ॥ तयों साधन के सत्रु सभ चाबत जाहि कराल ॥६३॥२१९॥ इति स्री बचित्र नाटके चम्डी चरित्रे सुंभ

बधह खसटमो धिआइ सम्पूरणम्
मसतु सुभ मसतु ॥५॥ अफजू ॥
अथ जैकार सबद कथनम् ॥
बेली बिद्रुम छम्द ॥

जै सबद देव पुकारहीं ॥ सभ फूल फूलन डारहीं ॥ घन सार कुंकम लिआइ कै ॥ टीका दियो हरखाइ कै ॥१॥२२०॥

चौपई ॥

उसतति सबहूं करी अपारा ॥ ब्रहम कवच को जाप उचारा ॥ सम्त सम्बूह प्रफुल्लित भए ॥ दुसट अरिसट नास हुऐ गए ॥२॥२२१॥ साधन को सुख बढे अनेका ॥ दानव दुसट न बाचा एका ॥ सम्त सहाइ सदा जग माई ॥ जह तह साधन होइ सहाई ॥३॥२२२॥

देवी जू की उसतति ॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

नमो जोग ज्वालम धरीअं जुआलम ॥ नमो सुंभ हम्ती नमो क्रूर कालम ॥ नमो स्रोण बीरजारदनी धूम्र हम्ती ॥ नमो काल का रूप ज्वाला जयंती ॥४॥२२३॥ नमो अंबिका जम्बहा जोति रूपा ॥ नमो चम्ड मुंडारदनी भूपि भूपा ॥ नमो चामरम चीरणी चित्र रूपं ॥ नमो परम प्रगया बिराजै अनूपं ॥५॥२२४॥ नमो परम रूपा नमो क्रूर करमा ॥ नमो राजसा सातका परम बरमा ॥ नमो महिख दईत को अंत करणी ॥ नमो तोखणी सोखणी सरब इरणी ॥६॥२२५॥ बिड़ालाछ हम्ती क्रूराछ घाया ॥ दिजगि दयारदनीअं नमो जोग माया ॥ नमो

भैरवी भारगवीअं भवानी ॥ नमो जोग ज्वालम धरी सरब मानी ॥७॥२२६॥ अधी उरधवी आप रूपा अपारी ॥ रमा रासटरी काम रूपा कुमारी ॥ भवी भावनी भइरवी भीम रूपा ॥ नमो हिंगुला पिंगुलायं अनूपा ॥८॥२२७॥ नमो जुद्धनी क्रुद्धनी कर करमा ॥ महाँ बुद्धिनी सिद्धिनी सुद्ध धरमा ॥ परी पदमनी पारबती परम रूपा ॥ सिवी बासवी ब्राहमी रिद्धि कूपा ॥६॥२२८॥ म्रिड़ा मारजनी सूरतवी मोह करता ॥ परा पउसटणी पारबती दुसट हरता ॥ नमो हिंगुला पिंगुला तोतलायं ॥ नमो कारतिकयानी सिवा सीतलायं ॥१०॥२२६॥ भवी भारगवीअं नमो ससत्र पाणम ॥ नमो असत्र धरता नमो तेज माणम ॥ जया

आजया चरमणी चावडायं ॥ क्रिपा काल कायं नयं निति निआयं ॥११॥२३०॥ नमो चापणी चरमणी खड़गपाणम ॥ गदा पाणिणी चक्क्रणी चित्र माणम ॥ नमो सूलणी सैहथी पाणि माता ॥ नमो गिआन बिगिआन की गिआन गिआता ॥१२॥२३१॥ नमो पोखणी सोखणीअं म्रिड़ाली ॥ नमो दुसट दोखारदनी रूप काली ॥ नमो जोग जुआला नमो कारतिकिआनी ॥ नमो अंबिका तोतला स्री भवानी ॥१३॥२३२॥ नमो दोख दाही नमो दुखय हरता ॥ नमो ससत्रणी असत्रणी करम करता ॥ नमो रिसटणी पुसटणी परम जुआला ॥ नमो तारुणीअं नमो ब्रिध बाला ॥१४॥२३३॥ नमो सिंघ बाही नमो दाढ़ गाढ़ं ॥ नमो खह्ग

दह्हगं झमा झम बाढ़ं ॥ नमो रूढ़ गूढ़ं नमो सरब बिआपी ॥ नमो न्रित नारायणी दुसट खापी ॥१५॥२३४॥ नमो रिद्धि रूपं नमो सिद्धि करणी ॥ नमो पोखणी सोखणी सरब भरणी ॥ नमो आरजनी मारजनी कालरात्री ॥ नमो जोग ज्वालम्‍ धरी सरब दात्री ॥१६॥२३५॥ नमो परम परमेस्वरी धरम करणी ॥ नमो नित्त नाराइणी दुसट दरणी ॥ छला आछला ई सुरी जोग जुआली ॥ नमो बरमणी चरमणी क्रूर काली ॥१७॥२३६॥ नमो रेचका पूरका प्रात सम्धिआ ॥ जिनै मोह कै चउदहूं लोक बम्धिआ ॥ नमो अंजनी गंजनी सरब असत्रा ॥ नमो धारणी बारणी सरब ससत्रा ॥१८॥२३७॥ नमो अंजनी गंजनी दुसट गरबा ॥ नमो

तोखनी सोखनी सम्त सरबा ॥ नमो सकतणी सूलणी खड़ग पाणी ॥ नमो तारणी कारणीअं क्रिपाणी ॥१९॥२३८॥ नमो रूप काली कपाली अनम्दी ॥ नमो चम्द्रणी भानवीअं गुबिम्दी ॥ नमो छैल रूपा नमो दुसट दरणी ॥ नमो कारणी तारणी स्रिसटि भरणी ॥२०॥२३९॥ नमो हरखणी बरखणी ससत्र धारा ॥ नमो तारणी कारणीअं अपारा ॥ नमो जोगणी भोगणी प्रम प्रगिआ ॥ नमो देव्‍ दइतिआइणी देवि दुरगिआ ॥२१॥२४०॥ नमो घोर रूपा नमो चारु नैणा ॥ नमो सूलणी सैथणी बक्क्र बैणा ॥ नमो ब्रिधि बुद्धं करी जोग जुआला ॥ नमो चम्ड मुंडी म्रिड़ा क्रूर काला ॥२२॥२४१॥ नमो दुसट

पुसटारदनी छेम करणी ॥ नमो दाढ़
गाड़ा धरी दुखय हरणी ॥ नमो सासत्र
बेता नमो ससत्र गामी ॥ नमो जच्छ
बिदिआधरी पूरन कामी ॥२३॥२४२॥
रिपं तापणी जापणी सरब लोगा ॥
थपे थापणी खापणी सरब सोगा ॥
नमो लम्कुड़ेसी नमो सकति पाणी ॥
नमो कालिका खड़ग पाणी क्रिपाणी
॥२४॥२४३॥ नमो लम्कुड़ेसा नमो
नागर कोटी ॥ नमो काम रूपा
कमच्छिआ करोटी ॥ नमो काल रात्री
कपरदी कलिआणी ॥ महाँ रिद्धणी
सिद्धि दाती क्रिपाणी ॥२५॥२४४॥
नमो चतुर बाही नमो असटबाहा ॥
नमो पोखणी सरब आलम पनाहा ॥
नमो अंबिका जम्बहा कारतिकिआनी
॥ म्रिड़ाली कपरदी नमो स्री भवानी

॥२६॥२४५॥ नमो देव अरदयारदनी दुसट हम्ती ॥ सिता आसिता राजक्राँती अनम्ती ॥ जुआला जयंती अलासी अनम्दी ॥ नमो पारब्रहमी हरी सी मुकम्दी ॥२७॥२४६॥ जयंती नमो मंगला काल कायं ॥ कपाली नमो भद्द्रकाली सिवायं॒ ॥ दूरगायं छिमायं नमो धात्रीएयं ॥ सुआहा सुद्धायं नमो सीतलेयं ॥२८॥२४७॥ नमो चरबणी सरब धरमं धुजायं ॥ नमो हिंगुला पिंगुला अंबकायं ॥ नमो दीरघ दाढ़ा नमो सिआम बरणी ॥ नमो अंजनी गंजनी दैत दरणी ॥२९॥२४८॥ नमो अरध चम्द्राइणी चम्द चूड़ं॒ ॥ नमो इंदु उरधा नमो दाढ़ गूढ़ं ॥ ससम्र सेखरी चम्दभाला भवानी॒ ॥ भवी भैहरी भूतराटी

क्रिपानी ॥३०॥२४९॥ कली कारणी करम करता कमच्छिआ ॥ परी पदमनी पूरणी सरब इच्छिआ ॥ जया जोगनी जह्नग करता जयंती ॥ सुभा सुआमिणी स्रिसटजा सत्रु हम्ती ॥३१॥२५०॥ पवित्री पुनीता पुराणी परेयं ॥ प्रभी पूरणी पार ब्रहमी अजेयं ॥ अरूपं अनूपं अनामं अठामं ॥ अभीतम्‍ अजीतम्‍ महा धरम धामं ॥३२॥२५१॥ अछेदम्‍ अभेदम्‍ अकरमं सु धरमं ॥ नमो बाण पाणी धरे चरम बरमं ॥ अजेयं अभेयं निरम्कार नित्तयं ॥ निरूपं निरबाणम्‍ नमित्तयं अकित्तयं ॥३३॥२५२॥ गुरी गउरजा कामगामी गुपाली ॥ बली बीरणी बावना जह्नगया जुआली ॥ नमो सत्रु चरबाइणी गरब हरणी ॥ नमो तोखणी

सोखणी सरब भरणी ॥३४॥२५३॥
पिलम्गी पवम्गी नमो चर चितम्गी ॥
नमो भावनी भूत हम्ता भड़िंगी ॥
नमो भीमि रूपा नोम लोक माता ॥
भवी भावनी भविखयाता बिधाता
॥३५॥२५४॥ प्रभी पूरणी परम रूपं
पवित्री ॥ परी पोखणी पारब्रहमी
गाइत्री ॥ जटी जुआल परचम्ड मुंडी
चमुंडी ॥ बरम्‍ दाइणी दुसट खंडी
अखंडी ॥३६॥२५५॥ सबै सम्तुबारी
बरम्‍ बयूह दाता ॥ नमो तारणी
कारणी लोक माता ॥ नमसतयं
नमसतयं नमसतयं भवानी ॥ सदा
राख लै मो क्रिपा कै क्रिपानी
॥३७॥२५६॥

इति स्री बचित्र नाटके चम्डी चरित्रे
देबी जू

की उसतति बरननम सपतमो धिआइ सम्पूरणम मसतु सुभ मसतु ॥७॥

अफजू ॥

अथ चम्डी चरित्र उसतति बरननम ॥

भुजम्ग प्रयात छम्द ॥

भरे जोगणी पत्र चउसठ चारम ॥ चली ठाम ठामं डकारम डकारम ॥ भरे नेह गेहम गए कम्क बम्कम ॥ रुले सूर बीरम अहाड़ं न्रिसम्कम ॥१॥२५७॥

चले नारदऊ हाथ बीना सुहाए ॥ बने बारदी डंक डउरु बजाए ॥ गिरे बाजि गाजी गज्जी बीर खेतम ॥ रुले तच्छ मुच्छम नच्चे भूत प्रेतम ॥२॥२५८॥

नच्चे बीर बैताल अद्धं कम्धं ॥ बधे बद्ध गोपाँगुलित्राण बद्धं ॥ भए साधु सम्बूह भीतम अभीते ॥ नमो लोक माता भले सत्रु जीते ॥३॥२५६॥

पढ़े मूढ़ या को धनम्म धाम बाढे ॥ सुनै सूम सोफी लरै जुद्‍ध गाढे ॥ जगै रैणि जोगी जपै जाप या को ॥ धरै परम जोगं लहै सिद्‍धिता को ॥४॥२६०॥ पड़ै याहि बिद्‍दयारथी बिद्‍य हेतम्म ॥ लहै सरब सासत्रान को मद्‍धय चेतम्म ॥ जपै जोग सम्नयास बैराग कोई ॥ तिसै सरब पुंनयान को पुंन होई ॥५॥२६१॥

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को नित्त उठि धिऐहैं सम्त ॥ अंत लहैंगे मुकति फलु पावहिंगे भगवम्त ॥६॥२६२॥

इति स्री बचित्र नाटके चम्डी चरित्रे उसतति बरनम्म असटमो धिआइ सम्पूरन मसतु सुभ मसतु ॥८॥

॥ अफजू ॥

ੴ वाहिगुरू जी की फते ॥ स्री भगउती जी सहाइ ॥ वार स्री भगउती जी की पातशाही १० ॥

पउड़ी ॥

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआइ ॥ फिरि अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होइ सहाई ॥ अरजुन हरि गोबिंद नू सिमरौ स्री हरि राइ ॥ स्री हरि क्रिसन धिआईऐ जिसु डिठे सभ दुखु जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीऐ घरि नउनिधि आवै धाइ ॥ सभ थाईं होइ सहाइ ॥१॥

पउड़ी ॥

खंडा प्रिथमै साजि कै जिनि सभ सैसारु उपाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेस साजि कुदरती दा खेलु रचाइ बणाइआ ॥ सिंधु परबत मेदनी बिनु

थंम्हा गगनु रहाइआ ॥ सिरजे दानो देवते तिन अंदरि बादु रचाइआ ॥ तै ही दुरगा साजि कै दैता दा नासु कराइआ ॥ तैथो ही बलु राम लै नालि बाणा दहसिरु घाइआ ॥ तैथो ही बलु क्रिसन लै कम्सु केसी पकड़ि गिराइआ ॥ बडे बडे मुनि देवते कइ जुग तिनी तनु ताइआ ॥ किनी तेरा अंतु न पाइआ ॥२॥

पउड़ी ॥

साधू सतिजुगु बीतिआ अध सीली त्रेता आइआ ॥ नच्ची कल सरोसरी कल नारद डउरू वाइआ ॥ अभिमानु उतारन देवतिआँ महिखासुर सुंड उपाइआ ॥ जीत लए तिन देवते तिह लोकी राजु कमाइआ ॥ वड्डा बीरु अखाइकै सिर उपरि छत्रु फिराइआ ॥

दिता इंद्र निकाल कै तिन गिर कैलासु तकाइआ ॥ डरि कै ह्थों दानवी दिल अंदरि त्रास वधाइआ ॥ पास दुरगा दे इंदर आइआ ॥३॥

पउड़ी ॥

इकि दिहाड़े नावण आइ दुरगशाहि ॥ इंद ब्रिथा सुणाई अपणे हाल दी ॥ छीन लई ठकुराइ साते दानवी ॥ लोकी तिही फिराई दोही आपणी ॥ बैठे वाइ वधाई ते अमरावती ॥ दिते देव भजाई सभना राकसाँ ॥ किनै न जित्ता जाई महिखे दैत नूं ॥ तेरी साम तकाई देवी दुरगशाह ॥४॥

पउड़ी ॥

दुरगा बैण सुणंदी हस्सी हड़हड़ाइ ॥ ओही सीहु मंगाइआ राकस भख्खणा ॥ चिंता करहु न काई देवाँ नू

आखिआ ॥ रोह होइ मह माइ ੰ ੰ
राकस मारणे ॥५॥ दोहरा ॥ राकस
आइ रोहले खेत भिड़न के चाइ ॥
लसकन तेगाँ बरछीआँ सूरजु नदरि न
पाइ ॥६॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुह जुड़े ढोल सम्ख
नगारे वज्जे ॥ राकस आए रोहले
तरवारी बखतर सज्जे ॥ जुटे सउहें
जुद्ध नूं इकि जात न जाणन भज्जे ॥
खेत अंदरि जोधे गज्जे ॥७॥

पउड़ी ॥

जम्ग मुसाफा बज्जिआ रण घुरे नगारे
चावले ॥ झूलन नेजे बैरकाँ नीसाण
लसणि लसावले ॥ ढोल नगारे पउण
दे उघण जाणु जटावले ॥ दुरगा दानो
डहे रण नाद वज्जन खेत भीहावले ॥

बीर परोते बरछीएं जणु डाल चमुट्टे आवले ॥ इकि वड्ढे तेगीं तड़फन मद पीते लोटनि बावले ॥ इकि चुणि चुणि झाड़उ कढीअन रेत विच्चों सुइना डावले ॥ गदा त्रिसूलाँ बरछीआँ तीर वगन खरे उतावले ॥ जणु डसे भुजम्गम सावले ॥ मर जावन बीर रुहावले ॥८॥

पउड़ी ॥

देखन चम्ड प्रचम्ड नूं रण घुरे नगारे ॥ धाए राकस रोहले चउगिरदों भारे ॥ ह्थीं तेगाँ पकड़ि कै रण भिड़े करारे ॥ कदे न नट्ठे जुद्ध ते जोधे जुज्झारे ॥ दिल विचि रोह बढाइकै मार मार पुकारे ॥ मारे चम्ड प्रचम्ड नै बीर खेत उतारे ॥ मारे जापन बिजुली सिर भार मुनारे ॥९॥

पउड़ी ॥

चोट दमामे पाइ दलाँ मुकाबला ॥
देवी दसत नचाइ सीहण सार दी ॥
पेट मलम्दे लाइ महिखे दैत नूं ॥
गुरदे आँदाँ खाई नाले रुकड़े ॥ जेही
दिल विचि आइ कही सुणाइ कै ॥
चोटी जाणु दिखाइ तारे धूमकेतु
॥१०॥

पउड़ी ॥

चोटाँ पान नगारी अणीआँ जुट्टीआँ ॥
धूह लईआँ तरवारी देवाँ दानवी ॥
वाहन वारो वारी सूरे सम्घरे ॥ वगै रतु
झलारी जिउं गेरू बाबुत्रा ॥ देखन बैठ
अटारी नारी राकसाँ ॥ पाई धुम
सवारी दुरगा दानवी ॥११॥

पउड़ी ॥

लख नगारे वज्जण आह्लहो साह्लहणे ॥

राकस रणो न भज्जण रोहे रोहले ॥ सीहाँ वाँगूं गज्जण सद्धभे सूरमे ॥ तणि तणि कैबर छड्डण दुरगा साह्लहणे ॥१२ ॥ पउड़ी ॥ घुरे नगारे दोहरे रण सम्गलीआले ॥ धूड़ि लपेटे धूहरे सिरदार जटाले ॥ उॅखलीआँ नासाँ जिना मुह जापन आले ॥ धाए देवी साह्लहणे बीर मुच्छलीआले ॥ सुरपति जेहे लड़ हटे बीर टले न टाले ॥ गज्जे दुरगा घेरि कै जणु घणीअर काले ॥१३॥

पउड़ी ॥

चोट पई खरचामी दलाँ मुकाबला ॥ घेर लई वरिआमी दुरगा आइकै ॥ राकस वडे अलामी भज्ज न जाणदे ॥ अंत होए सुरगामी मारे देवताँ ॥१४॥

पउड़ी ॥

अगणित घुरे नगारे दलाँ भिड़ंदिआँ ॥
पाए महिखल भारे देवाँ दानवाँ ॥
वाहन फट्ट्ट करारे राकस रोहले ॥
जापन तेगीं आरे मिआनो धूहीआँ ॥
जोधे वडे मुनारे जापन खेत विचि ॥
देवी आप सवारे पूबाँ जवेहणे ॥ कदे न आखन हारे धावन साह्लहणे ॥
दुरगा सभ सम्घारे राकस खड़ग लै ॥१५॥

पउड़ी ॥

उमल ल्लथे जोधे मारू बज्जिआ ॥
बद्दल जिउं महिखासुर रण विचि गज्जिआ ॥ इंदर जेहा जोधा मैथउ भज्जिआ ॥ कउणु विचारी दुरगा जिन रण सज्जिआ ॥१६॥

पउड़ी ॥

बज्जे ढोल नगारे दलाँ मुकाबला ॥

तीर फिरैं रैबारे आह्लहो साह्लहणे ॥ अगणित बीर सम्घारे लगदी कैबरीं ॥ डिह्गे जाणु मुनारे मारे बिज्जु दे ॥ खुल्ली वालीं दैत अहाड़े सद्धभे सूरमे ॥ सुत्ते जाणु जटाले भंगाँ खाइकै ॥१७॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुहि जुड़े नालि धउसाँ भारी ॥ कड़क उठिआ फौज ते वडा अहम्कारी ॥ लै के चल्लिआ सूरमे नालि वडे हजारी ॥ मिआनो खंडा धूहिआ महिखासुर भारी ॥ उमल ल्लथे सूरमे मार मच्ची करारी ॥ जापे चले रत्तु दे सलले जटधारी ॥१८॥

पउड़ी ॥

स्टट पइ जमधाणी दलाँ मुकाबला ॥ धूहि लई क्रिपाणी दुरगा मिआन ते ॥

चम्डी राकस खाणी वाही दैत नू ॥ कोपर चूर चवाणी लथी करग लै ॥ पाखर तुरा पलाणी रड़की धरत जाइ ॥ लैंदी अघा सिधाणी सिंगाँ धउल दिआँ ॥ कूरम सिर लहलाणी दुसमन मार कै ॥ वढे गन्न तखाणी मूए खेत विचि ॥ रण विचि घती घाणी लोहू मिज्ज दी ॥ चारे जुग कहाणी चल्लगु तेग दी ॥ बिद्धण खेत विहाणी महिखे दैत नू ॥१६॥

पउड़ी ॥

इति महिखासुर दैत मारे दुरगा आइआ ॥ चउदह लोकाँ राणी सिंघ नचाइआ ॥ मारे वीर जटाणी दल विचि अह्गले ॥ मंगण नाही पाणी दलीं हकार कै ॥ जणु करी समाइ पठाणी सुणि कै राग नू ॥ ऱ्तू दे

हड़वाणी चल्ले वीर खेत ॥ पीता फुल्ल इआणी घुमन सूरमे ॥२०॥

पउड़ी ॥

होई अलोप भवानी देवाँ नूं राजु दे ॥ ईसर दी बरदानी होई ज़्रित दिन ॥ सुंभ निसुंभ गुमानी जनमे सूरमे ॥ इंद्र दी रजधानी तक्की ज़्रितणी ॥२१॥

पउड़ी ॥

इंद्र पुरी ते धावणा वड जोधीं मता पकाइआ ॥ सम्ज पटेला पाखरा भेड़ सम्दा साजु बणाइआ ॥ जुंमे कटक अछूहणी असमानु गरदी छाइआ ॥ रोहि सुंभ निसुंभ सिधाइआ ॥२२॥

पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ अलाइआ वड जोधीं सम्घर वाए ॥ रोह दिखाली दित्तीआ वरिआमी तुरे नचाए ॥ घुरे दमामे

दोहरे जम बाहण जिउ अरड़ाए ॥ देउ दानो लुज्झण आए ॥२३॥

पउड़ी ॥

दानो देउ अनागी सम्घरु रचिआ ॥ फुल्ल खिड़े जणु बागीं बाणे जोधिआँ ॥ भूताँ इल्लाँ कागीं गोसतु भख्खिआ ॥ हुमड़ धुमड़ जागी घ्रती सूरिआँ ॥२४॥

पउड़ी ॥

सट्ट नगारे पाई दलाँ मुकाबला ॥ द्रिते देउ भगाई मिल कै राकसीं ॥ लोकीं तिही फिराई दोही आपणी ॥ दुरगा दी साम तकाइी देवाँ डरदिआँ ॥ आँदी चम्ड चड़ाई उते राकसाँ ॥२५॥

पउड़ी ॥

आइ फेर भवानी खबरी पाईं आँ ॥

दैत वडे अभिमानी होए एकठे ॥
लोचन धूम गुमानी राइ बुलाइआ ॥
जग विचि वडा दानो आप कहाइआ
॥ सट्ट पई खरचामी दुरगा
लिआवणी ॥२६ ॥

पउड़ी ॥

कड़क उठी रण चम्डी फउजाँ देखिकै
॥ धूहि मिआनो खंडा होई सामणे ॥
सद्धभे बीर सम्घारे धूमरनैण दे ॥ जणु
लै कट्टे आरे दरखत बाढीआँ ॥२७॥

पउड़ी ॥

चोबी धउस बजाई दलाँ मुकाबला ॥
रोह भवानी आई उॅतै राकसाँ ॥ खब्बै
दसत नचाइ सीहण सार दी ॥
बहुतिआँ दे तन लाइ कीती रम्गुली
॥ भाइआँ मारर्न भाइ दुरगा जाणि कै
॥ रोह होइ चलाई राकस राइ नूं ॥

जमपुर दीआ पठाई लोचन धूम नूं ॥
जापे दिती साई मारन सुंभ दी
॥२८॥

पउड़ी ॥

भंने दैत पुकारे राजे सुंभ थै ॥ लोचन
धूम सम्घारे सणै सिपाहीआँ ॥ चुणि
चुणि जोधे मारे अंदरि खेत दै ॥
जापन अंबरि तारे डिह्गन सूरमे ॥
गिरे परबत भारे मारे बिज्जु दे ॥ दैताँ
दे दल हारे दहशत खाइ कै ॥ बचे
सुमारे मारे रहिदे राइ थै ॥२६॥

पउड़ी ॥

रोह होइ बुलाए राकसि राइ ने ॥ बैठे
मता पकाए दुरगा लिआवणी ॥ चम्ड
अरु मुंड पठाए बहुता कटकु दै ॥
जापे छङपर छाए बणीआ केजमा ॥
जेते राइ बुलाइ चले जुज्झ नो ॥ जणु

जमपुर पकड़ चलाए सद्धभे मारने ॥३०॥

पउड़ी ॥

ढोल नगारे वाए दलाँ मुकाबला ॥ रोहि रुहेले आए उँते राकसाँ ॥ सभनी तुरे नचाए बरछे पकड़ि कै ॥ बहुते मारि गिराए अंदरि खेत दै ॥ तीरीं छहबर लाए बुट्ठी देवताँ ॥३१॥

पउड़ी ॥

भेरी सम्ख बजाए सम्घर रचिआ ॥ तणि तणि तीर चलाए दुरगा धनुख लै ॥ जिनी दसत उठाए रहे न जीवदे ॥ चम्ड अरु मुंड खपाए दोनो देवताँ ॥३२॥

पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ रिसाए मारे दैत सुणि ॥ जोधे सभ बुलाए अपणे मजलसी ॥

जिनी देउ भजाए इंद्र जेहवे ॥ तेई मार गिराए पल विचि देवताँ ॥ ओनी दसती दसति वजाए तिन्हाँ चि्लत करि ॥ फिर स्रणवत बीज चलाए बीड़े राइ दे ॥ सम्ज पटेला पाए चिलकत टोपीआँ ॥ लुज्झण नो अरड़ाए राकस रोहले ॥ कदे न किनै हटाए जुज्झ मचाइ कै ॥ मिलि तेई दानो आए हुण सम्घर देखणा ॥३३॥

पउड़ी ॥

दैतीं डंड उभारी नेड़े आइ कै ॥ सिंघ करी असवारी दुरगा शोर सुणि ॥ खुबै दसत उभारी गदा फिराइ कै ॥ सैना सभ सम्घारी स्रणवत बीज दी ॥ जणु मद खाइ मदारी घूमन सूरमे ॥ अगणित पाउ पसारी रुले अहाड़ विचि ॥ जापै खेड खिडारी सुते फाग नूं

॥३४॥

पउड़ी ॥

स्रणवत बीज हकारे रहदे सूरमे ॥ जोधे जेडु मुनारे दिस्सन खेत विचि ॥ सभनी दसत उभारे तेगाँ धूहि कै ॥ मारे मार पुकारे आए साह्लहणे ॥ सम्जाँ ते ठणकारे तेगीं उॅभरे ॥ घाड़ घड़नि ठठिआरे जाणु बणाइ कै ॥३५॥

पउड़ी ॥

सट्ट पइ जमधाणी दलाँ मुकाबला ॥ घूमर बरगसताणी दल विचि घतीओ ॥ सणे तुरा पलाणी डिगन सूरमे ॥ उठि उठि मंगनि पाणी घाइल घूमदे ॥ एवडु मार विहाणी उपर राकसाँ ॥ बिज्जुल जिउं झरलाणी उॅठी देवताँ ॥३६॥

पउड़ी ॥

चोबी धउस उभारी दलाँ मुकाबला ॥ सद्धभो सैना मारी पल विच दानवी ॥ दुरगा दानो मारे रोह बढाइ कै ॥ सिर विच तेग वगाइ स्रणवत बीज ँ दे ॥३७॥

पउड़ी ॥

अगणित दानो भारे होए लोहूआँ ॥ जोधे जेडु मुनारे अंदरि खेत दै ॥ दुरगा नो ललकारे आवन साह्मणे ॥ दुरगा सभ सम्घारे राकस आँवदे ॥ रत्तु दे परनाले तिन ते भुइ पए ॥ उॅठे कारणिआरे राकस हड़हड़ाइ ॥३८॥

पउड़ी ॥

धह्गाँ सम्गलीआलीं सम्घर वाइआ ॥ बरछी बंबलिआली सूरे सम्घरे ॥ भेड़ मचिआ बीराली दुरगा दानवीं ॥ मार मची मुहराली अंदरि खेत दै ॥ जणु

नट ल्लथे छालीं ढोल बजाइ कै ॥ लोहू फाथी जाली लोथीं जमधड़ी ॥ घण विचि जिउ छम्छाली तेगाँ हस्सीआँ ॥ घूमरआरि सिआली बणीआँ केजमाँ ॥३६॥

पउड़ी ॥

धह्गगाँ सूल बजाइआँ दलाँ मुकाबला ॥ धूहि मिआनो लईआँ जुआनी सूरमीं ॥ स्रणवत बीज वधाईआँ अगणित सूरताँ ॥ दुरगा सउहे आईआँ रोह बढाइकै ॥ सभनी आणि वगाईआँ तेगाँ धूहि कै ॥ दुरगा सभ बचाईआँ ढाल सम्भाल कै ॥ देवी आप चलाईआँ तकि तकि दानवीं ॥ लोहू नालि डुबाइआँ तेगाँ नंगीआँ ॥ सारसुती जणु नहाइआँ मिलिकै देवीआँ ॥ सद्धभे मारि गिराईआँ

अंदरि खेत दै ॥ तिदूं फेरि सवाइआँ होईं आँ सूरताँ ॥४०॥

पउड़ी ॥

सूरीं सम्घर रचिआ ढोल सम्ख नगारे वाइ कै ॥ चम्डि चितारी कालिका मन बहला रोस बढाइ कै ॥ निकली म्लथा फोड़ि कै जणु फते नीसाण बजाइ कै ॥ जाग सु जम्मी जुद्ध नूं जरवाणा जणु मिरड़ाइ कै ॥ दल विचि घेरा घत्तिआ जणु सींह तुरिआ गणणाइ कै ॥ आप विसूला होइआ तिहु लोकाँ ते खुणसाइ कै ॥ रोह सिधाईआ चक्रपाणि कर नंदा खड़ग उठाइ कै ॥ अगे राकस बैठे रोहले तीरीं तेगीं छहबर लाइ कै ॥ पकड़ पछाड़े राकसाँ दल दैताँ अंदरि जाइ कै ॥ बहु केसीं पकड़ पछाड़िअनि तिन अंदरि धूम

रचाइ कै ॥ बडे बडे चुणि सूरमे गहि कोटी दए चलाइ कै ॥ रणि काली गुस्सा खाइ कै ॥४१ ॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुहि जुड़े अणीआँ ऱचोईआँ ॥ धूहि क्रिपाणा तिख्खीआँ नाल लोहू धोइआँ ॥ हूराँ स्रणवत बीज नूं घति घेरि खलोईआँ ॥ लाड़ा देखन लाड़ आँ चउगिरदै होईआँ ॥४२॥

पउड़ी ॥

चोबी धउसाँ पाईआँ दलाँ मुकाबला ॥ दसती धूहि नचाइआँ तेगाँ नंगीआँ ॥ सूरिआँ दे तन लाइआँ गोशत गिद्धीआँ ॥ बिद्धण राती आईआँ मरदाँ घोड़िआँ ॥ जोगणीआँ मिलि धाइआँ लोहू भख्खणा ॥ फउजाँ

मारि हटाई आँ देवाँ दानवाँ ॥ भजदीं कथा सुणाई आँ राजे सुंभ थै ॥ भुईं न पउणै पाइआँ बूंदाँ रकत दीआँ ॥ काली खेति खपाईआँ सद्धभे सूरताँ ॥ बहुतीं सिरीं बिहाइआँ घड़ीआँ काल कीआँ ॥ जाणु न जाए माई आँ झूझे सूरमे ॥४३॥

पउड़ी ॥

सुंभ सुणी करहाली स्रणवतबीज दी ॥ रण विचि किनै न झाली दुरगा आँवदी ॥ बहुते बीर जटाली उँठे आखि कै ॥ चोटाँ पान तबाली जासाँ जुद्ध नूं ॥ थरि थरि प्रिथमी चाली दलाँ चड़ंदिआँ ॥ नाउ जिवे है हाली सह दरीआउ विचि ॥ धूड़ि उताहाँ घाली छड़ीं तुरम्गमाँ ॥ जाणु पुकारु चाली धरती इंद थै ॥४४॥

पउड़ी ॥

आहर मिलिआ आहरीआँ सैण सूरिआँ साजी ॥ चले सउहे ं दुरगसाह जणु काबै हाजी ॥ तीरीं तेगीं जमधड़ीं रणि वम्डी भाजी ॥ इकि घाइल घूमन सूरमे जणु मकतब काजी ॥ इकि बीर परोते बरछीइे ं जिउ झुक पउन निवाजी ॥ इकि दुरगा सउहे खुनस कै खुनसाइन ताजी ॥ इकि धावन दुरगा सामणे जिउ भुखिआए पाजी ॥ कदे न रज्जे जुज्झ ते रजि होए राजी ॥४५॥

पउड़ी ॥

बज्जे सम्गलीआले सम्घर डोहरे ॥ डहे जु खेत जटाले हाठाँ जोड़िकै ॥ नेजे बंबलीआले दिस्सन ओरड़े ॥ चल्ले जाणु जटाले नावण गम्ग नू ॥४६॥

पउड़ी ॥

दुरगा अतै दानवीं सूल होईआँ कम्गाँ ॥ वाछड़ घ्नती सूरिआँ विच खेत खतंगाँ ॥ धूहि क्रिपाणा तिख्खीआँ बढ लाहनि अंगाँ ॥ पहिलाँ दलाँ मिलम्दिआँ भेड़ पइआ निहम्गाँ ॥४७॥

पउड़ी ॥

ओरड़ि फउजाँ आइआँ बीर चढ़े ˆ कम्धारी ॥ सड़कि मिआनो कढीआँ तिखीआँ तरवारी ॥ कड़कि उठे रण मच्चिआ वड्डे हम्कारी ॥ सिर धड़ बाहाँ गम्नले फुल जेहे बारी ॥ जापे कट्टे बाढीआँ रुख चम्दन आरी ॥४८॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुहि जुड़े जाँ सट पई

खरवार कउ ॥ तणि तणि कैबर दुरगशाह तकि मारे भले जुझार कउ ॥ पैदल मारे हाथीआँ सम्गि रथ गिरे असवार कउ ॥ सोहन सम्जाँ बागड़ाँ जणु लहगे फुल्ल अनार कउ ॥ गुस्से आई कालिका हथ सजे लै तलवार कउ ॥ एदू पारउ ओत पार हणि राकसि कई हजार कउ ॥ जिण इक्का रही कम्धार कउ ॥ सद रहमत तेरे वार कउ ॥४६ ॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुहि जुड़े सट्ट पई जमधाण कउ ॥ तद खिंग निसुंभ नचाइआ डालि उॅपरि बरगसताण कउ ॥ फड़ी बिलम्द मगाइसु फुरमाइस करि मुलतान कउ ॥ गुस्से आई सामणे रणि अंदरि घ्लतण घाण कउ ॥

अगै तेग वगाई दुरगशाह बढि बही निसुंभ पलाण कउ ॥ रड़की जाइ कै धरत कउ बढि पाखर बढि किकाण कउ ॥ बीर पलाणो डिह्गिआ करि सिजदा सुंभ सुजाण कउ ॥ शाबाश सलोणे खान कउ ॥ सदा शाबाश तेरे ताण कउ ॥ तारीफाँ पान चबान कउ ॥ सद रहमत कैफाँ खान कउ ॥ सद रहमत तुरे नचाण कउ ॥५०॥

पउड़ी ॥

दुरगा अतै दानवी गह सम्घरि क्ल्थे ॥ ओरड़ उॅठे सूरमे आ डाहे म्ल्थे ॥ कट्ट तुफंगीं कैबरीं द्लु गाहि निक्ल्थे ॥ देखन जम्ग फरेसते असमानो ल्ल्थे ॥५१॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुह जुड़े दल घुरे नगारे

॥ ओरड़ि आए सूरमे सरदार रणिआरे ॥ लै के तेगाँ बरछीआँ हथिआर उभारे ॥ टोप पटेला पाखराँ गलि सम्ज सवारे ॥ लै के बरछी दुरगशाह बहु दानव मारे ॥ चड़े रथीं गज घोड़िइं मारि भुइं ते डारे ॥ जाणु हलवाई सीख नाल विंन्हि वड़े उतारे ॥५२॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कम्धाराँ मुहि जुड़े नालि धउसाँ भारी ॥ लई भगउती दुरगशाह वरजागन भारी ॥ लाइ राजे सुंभ नो रतु पीऐ पिआरी ॥ सुंभ पलाणो डिगिआ उपमा बीचारी ॥ डुब रत्तु नालहु निक्कली बरछी दो धारी ॥ जाणु रजादी उतरी पैन्हि सूही सारी ॥५३॥

पउड़ी ॥

दुरगा अतै दानवी भेड़ पइआ सबाहीं ॥ ससत्र पजूते दुरगशाह गह सभनी बाहीं ॥ सुंभ निसुंभ सम्घारिआ बत जेहे शाही ं ॥ फउजाँ राकसिआरीआँ देख रोवनि धाही ं ॥ मुहि कड़चे घाह ू दे छडि घोड़े राही ं ॥ भजदे होए मारीअनि मुड़ि झाकन नाही ं ॥५४॥

पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ पठाइआ जम दे धाम नो ॥ इंद्र सद्द बुलाइआ राज अभिखेक नो ॥ सिर परि छत्र फिराइआ राजे इंद्र दै ॥ चउदह लोकाँ छाइआ जसु जग मात दा ॥ दुरगा पाठ बणाइआ सभे पउड़ीआँ ॥ फेरि न जूनी आइआ जिनि इहु गाइआ ॥५५॥

उग्रदन्ती

੧ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

स्री मुखवाक पातशाही १० ॥

भगउती जी का छन्द छक्का पहिला ॥ नमो उग्रदंती अनंती सवैया ॥ नमो जोग जोगेस्वरी जोग मैया ॥ नमो केहरी बाहनी सत्रु हन्ती ॥ नमो सारदा ब्रहम विदिआ पढ़ंती ॥ नमो रिद्धि दा सिद्धि दा बुधि दैनी ॥ नमो काल के काल कउ काल छैनी ॥ नमो काल अजाल है हेर तेरो ॥ नमो तीन हू लोक कीनो अहेरो ॥ नमो जोति ज्वाला तुमै बेद गावै ॥ सुरासुर रिखीसर नहीं भेद पावै ॥ तुही जोग जोगतण तुही खड़ग धारे ॥ तुही जै करन्ती असुर गहि पछारे ॥ तुही

जोगणी खड्पर भरणी अदोखं ॥ रकत बीज के प्रान कौ पकड़ि सोखं ॥ तुही जल थले परबते गिरि निवासी ॥ तुही सभ घटन मो निरालम प्रकासी ॥ तुही दुसट दाहिन तुही सरब पाली ॥ तुही ब्रिछ पुहिपा तुही आप माली ॥ तुही विस भरणी तुही जग प्रकासी ॥ तुही अलख बरणी तुही भू अकासी ॥ नमो जालपा देवि दुरगे भवानी ॥ तिहू लोक नवखंड मे तुम प्रधानी ॥ अटल छत्र धरणी तुही आदि देवम् ॥ सकल मुनि जनाँ तोहि निसि दिन सरेवम् ॥ तुही काल अकाल की जोति छाजै ॥ सदा जै सदा जै सदा जै बिराजै ॥ यही दास माँगै क्रिपा सिंधु कीजै ॥ स्वयं ब्रहम की भगत सरब्बत्र दीजै ॥ तुही जागती जोति ज्वाला

सरूपम ॥ तुही जग सकल महि रमंती अनूपं ॥ महाँ मूड़ हउं दास दासन तिहारा ॥ पकड़ बाँह भउजल करहु बेग पारा ॥ फतहि डंक बाजै क्रिपा यौ करीजै ॥ यही बारता दास की नित सुणीजै ॥ करहु हुकम अपना सभै दुसट घाऊं ॥ तुरक हिंद का सकल झगरा मिटाऊं ॥ अगम सूर बीरे उठहि सिंघ जोधा ॥ पकड़ तुरक गन कउ करैं वै निरोधा ॥ सकल जगत मो खालसा पंथ गाजै ॥ जगै धरम हिंदुक तुरक दुंद भाजै ॥ जपउ जाप एकै हरे हरि अकालम ॥ ह्वै तब दुनीआँ सभ छिनिक मै निहालम ॥ सुणहु तुम भवानी हमन की पुकारे ॥ करहु दास पर मिहर अपरम अपारे ॥

दोहरा ॥

दार तुमारे ठाढ हउं इक बरु दीजै मोहि ॥ पंथ चलै तब जगत मै दुसट खपावउं तोहि ॥

भगवती छम्द दूजा ॥२॥

नमो कालिका काल रूपी क्रिपानी ॥ नमो सुंभ निसुंभ नासनि भवानी ॥ नमो चम्ड अर मुंड सम्घारकारी ॥ नमो रकतबीजान के प्राणहारी ॥ नमो वेद विद्या नमो जगय रूपा ॥ नमो अंजनी पूरनी भूप भूपा ॥ नमो जै अनंती भद्र काली अबाहम्‍ ॥ नमो भगवती तेजवम्ती अढाहम्‍ ॥ नमो सकति रूपण अगंमण अडोला ॥ नमो खड़ग धारण अछेदण अतोला ॥ नमो गरब गंजन सिरी जोग माया ॥ सभै थक रहे मरम किनहूं न पाया ॥ तुही जल अगनि पवन तूम्‍ हूर नूरा ॥ तुही

जोति उडगन तुही चम्द सूरा ॥ तुही
खे चरा भू चरा जोध बीरे ॥ तुही
रच्छनी स्रिसटि रूपनि गहीरे ॥ तुही
जगत जननी अनंती अकालम ॥ तुही
अंन दैनी सभन को समालम ॥ तुही
खंड ब्रहमंड भूमं सरूपी ॥ तुही
बिशन सिव ब्रहम इंद्रा अनूपी ॥ तुही
सीतला तोतला बाक बानी ॥ नमो
चमडिका मंगला स्री भवानी ॥ नही
तुम बिना कोइ रच्छक हमारा ॥ तुही
आदि कुआरि देवी अपारा ॥ तुही
देवकी क्रिसन माता कहायं ॥ तुही
नैणा देवी अलख जग सहायं ॥ तही
थंभ सिउ निकस नरसिंघ होई ॥ उदर
हरनाखस का नखहु कर परोइ ॥ तुही
कच्छ हुइ दैत मधु कीर्ट जारे ॥ तुही
होइ बैराह हिरनाछय मारे ॥ तुही

होइ बावन महाँ छल दिखायो ॥ पकड़ राजे बल को पतालै पठायो ॥ तुही होइ परसराम जग महि प्रकासी ॥ सकल छत्रीअन कउ करै छै बिनासी ॥ तुही फिर भई रामचन्द्रं अपारा ॥ पकड़ लम्क सउ दैत रावन पछारा ॥ तुही मुकति दाइणि सदा सुभ करम्ती ॥ तुही सूर बलबीर दुसटण दहम्ती ॥ तुही राधिका रुकमणी तूम्‍ कुसल्लिआ ॥ तुही अंजनी रेणुका तूम्‍ अहल्लिआ ॥ तुही भरण पोखण सभन पर क्रिपाली ॥ करहु मोहि मुकता कटहु भरम जाली ॥ नमो दुख हरम्ती अनंदत सरूपा ॥ अपन दास पर मिहर कीजै अनूपा ॥

दोहरा ॥

दास जान कर आपना किरपा कीजै

मोहि ॥ इहै बेनती दास की सुणहु भवानी तोहि ॥

भगवती छम्द् तीजा ॥३॥

तुही कलप ब्रिछण तुही काम धैना ॥
तुही असट सिधण तुही नूर नैना ॥
तुही सुरग पाताल बैकुंठ धरणी ॥
तुही पाप खंडन उदर जगत भरणी ॥
तुही ब्रहमणी बेद पाठणि सवित्री ॥
तुही धरमणी करण कारण पवित्री ॥
तुही गौरजा पारबती जोग धरणं ॥
तुही लच्छमी अलख रूपी अवरणं ॥
तुही सभ जगत कउ उपावै छकावै ॥
तुही बहुड़ आपे छिनिक मउ खपावै ॥ तुही भगत करतार की सकति राणी ॥ तुही हरि सिमर कर भइ जोग धयार्णी ॥ अगम खेल तुमरा कहा को बखानै ॥ तुही भेद अपना अपुन आप

जानै ॥ सगल ढूंढि थाके लखयो किछ न भेदा ॥ तुही इसुरी दुख बिनासन॥ करहु मिहर अपुनी चरन धूरि पावउं ॥ तुमन दार पर सीस अपना घसावउं ॥ यही दान माँगउं करहु जै हमारी ॥ सभै दुसट दैता खपै छिन मझारी ॥ तुही डाकणी साकणी सूर बीरे ॥ तुही रूप नाराइणी हरि सरीरे ॥ तुही अलख दुरगा जगत करन हारी ॥ सकल छोड कर ओट पकड़ी तिहारी ॥ तुही मच्छ हुइ सिंधु भीतरि खिलम्ती ॥ तुही दैत सम्खासुरै कउ दलम्ती ॥ तुही क्रिसन होइ कम्स केसी खपायो ॥ तुमन मल्ल चम्डूर गहि कर उडायो ॥ जगन नाथ हुइ दैत गयासुर बिडारे ॥ तुही निहकलम्की भई खड़ग धारे ॥ तुही

दैत किलकासुरे कउ सम्घरणी ॥ तुही सभ जुगण बीच अवतार धरणी ॥ जुगो जुग सकल खेल तुमही रचायो ॥ तुमन खेल का भेद किनहूं ˘ न पायो ॥ तुही असट दुरगे भवानी अकालं ˘ ॥ तुही सकल ब्रहमंड ऊपर दयालम ॥ तुमन कुदरती खेल कीनो अपारा ॥ तुमन तेज सउ कोट रवि ससि उजारा ॥ तुही निज वजीरण प्रभू दर सुहम्ती ॥ तुही निसि दिना जाप हरि हरि जपंती ॥ निरम्जन पुरख शाह शाहन अपारे ॥ तुही सकति ह्वै निकट वरती मुरारे ॥ सुणहु दास की बेनती हरि भवानी ॥ दइआ धारि मुहि लाज राखहु निदानी ॥

दोहरा ॥

दानो मारे रोहिले देव बचाए तोहि ॥

सिंघ तुमारो रण गजै हाँक न झालसि कोइ ॥

भगवती छम्द चौथा ॥४॥

तुही जोति ज्वालामुखी होइ दिखानी ॥ परबत फोड़ लाटाँ अगनि जग मगानी ॥ तुही हरण भरणी तुही जगत माए ॥ तुही सरब ठौरन रही आप छाए ॥ तुही उतभुजा सेतजा सुख निधानी ॥ तुही अंडजा जेरजा चतुर बानी ॥ तुही तीर तरवार काती कटारी ॥ तुही सम्ख पदमण गदा चक्र धारी ॥ तुही तोप बंदूक गोला चलम्ती ॥ तुही कोट गढ़ कउ धमक सिउ उडंती ॥ तुही बड अजीतण सकल दोख हरणी ॥ तुही हरि अडोलण अगम खेल करणी ॥ तुही अति बलिसटण चतरभुज भवानी ॥ तुमन सरब दुसटा

कीए मार फानी ॥ तुही गुपत परगट सभन मो खिलम्ती ॥ तुही सुंभ महिखासुरै कउ दलम्ती ॥ तुही जगतमंडण दइआवम्त भारी ॥ सकल सिध मुनि जन लए तै उबारी ॥ लखै नाहि कोऊ अजब खेल तेरा ॥ तुही धरणि धर कै करहि फिर निबेरा ॥ तुही बिजुल होइ गगन चढ़ झिलमिलानी ॥ तुमन चरन पर सुरति हमरी लगानी ॥ तुही अलख करतारणी शिव सरूपा ॥ तुही घट घटे देवि दुरगे अनूपा ॥ तुही है सभन बीच सभ सौ निराली ॥ तुही सभ जगत की करहि प्रतिपाली ॥ तुही खास भगतण हरे हरि जपंती ॥ तुही हरि चरण पर अपुन सिर धरम्ती ॥ तुही हरि क्रिपा सिउ अगम रूप

होंई ॥ सभै पच मुए पार पावत न कोंई ॥ तुही सूर बलवम्तणी गुण गहीरे ॥ तुमन दार घुर॒ है ं अनाहद नफीरे ॥ निरम्जन सरूपा तुही आदि राणी ॥ तुही जोग बिद्या तुही ब्रहम बाणी ॥ निरम्जन प्रभू नाथ कादर मुरारे ॥ तहाँ तू खड़ी कुदरती रूप धारे ॥ तुही अंभके शकति दुरगे भवानी ॥ तुमन कुदरती जोति घटि घटि समानी ॥ धरनि पवन आकाश कुदरति सरूपा ॥ तुही कुदरती अलख देवी अनूपा ॥ नही भाख साकउ महिमा तुहारी ॥ लखयो नाहि किनहूं तुमन अंतु पारी ॥ यही दास तुमरा चरन धूरि पावै ॥ तुमन द्वार ठाढा सदा धुनि लगावै ॥

दोहरा ॥

मुख पसारे कालिका दैत चबावै दाँत ॥ पंथ चलावै जगत मै जुध करहि तब शाँति ॥

भगवती छम्द पंजवाँ ॥५॥

नमो देविसा कुंभरी हिंगुलाजा ॥ तुही सभ जगत के करहि सिध काजा ॥ तुही अलख जाला कमच्छिआ परधानी ॥ तुमन जस सकल जगत कर है बखानी ॥ तुही हरि निरम्कार ठाकुर जपंती ॥ तुही राछसन कउ पकड़ कर दहम्ती ॥ हमन बैरीअन कउ पकड़ि घात कीजै ॥ तबै दास गोबिंद का मन पतीजै ॥ तुही आस पूरन जगत गुर भवानी ॥ छत्र छीन मुगलन करहु बेग फानी ॥ सकल हिंदु सिउ तुरक दुसटा बिदारहु ॥ धरम की धुजा कउ जगत मै झुलारहु ॥ दुहूं पंथ मै

कपट विद्‌या चलानी ॥ बहुड़ तीसरा पंथ कीजै परधानी ॥ जो उपजै मरै ताहि सिमरन न कीजै ॥ अटल पुरख अकाल का नाम लीजै ॥ मड़ी गोर देवल मसीताँ गिरायं ॥ तुही एक अकाल हरि हरि जपायं ॥ मिटहि बेद सासत्र अठारहि पुराना ॥ मिटै बाँग सलवात सुंनति कुराना ॥ सकल स्रिसटि इक बरन हुइ कर भुलानी ॥ धरम नेम की जुगति किनहूं न जानी ॥ कठिन दुंद वरतै जगत महि गुबारा ॥ दया धार कर मोहि लीजै उबारा ॥ तुही कुदरते सकति दुरगे भवानी ॥ तुही जगत माता सकल बिधि निधानी ॥ तुही बिआस गोरख अगसतं कबीरे ॥ तुही रिखि मुनीसर तुही गौंस पीरे ॥ निरम्जन पुरख कउ सदा तू धिआवै

॥ प्रभू द्वार ठाढी वजीरन कहावै ॥
नही तुम बिना कोइ दूसरं हजूरे ॥
तुही अलखणी होइ रही जगत पूरे ॥
अपुन जान कर मोहि लीजै बचाईं ॥
असुर पापीअन मार देवहु उडाईं ॥
सकल जगत कउ सुख बसावहु अनंदा
॥ तुही दरद मेटनि स्री हरि मुकम्दा
॥ यही देह आगिआ तुरकन गहि
खपाऊं ॥ गऊ घात का दोख जग
सिउं मिटाऊं ॥ छत्र तखत मुगलन
करहुं मार दूरे ॥ घुरहि तब जगत महि
फतह धरम तूरे ॥ तुमन दर खड़ा दास
कर है पुकारा ॥ तुरकन मेट कीजै
जगत महि उजारा ॥ तबहि गीत
मंगल फतहि के सुनाऊं ॥ तुमन कउ
सिमर दूख सगले मिटाऊं ॥

दोहरा ॥

किरपा कीजै दास पर कुंट निवाऊं चार ॥ नाम तिहारो जो जपै भए सिंधु भव पार ॥

भगवती छम्द छीवाँ ॥६॥

नमो कसट हरणी दुरगा सकति माए ॥ सभै दुसट दानो पकड़ तै खपाए ॥ तुमन भवन त्रै लोक पुरि महि बिराजै ॥ तहाँ नूर तुमरा अगम रूप छाजै ॥ तुही धौल गिरि कोट काँगड़ बसम्ती ॥ तुही अछल अनाथ देवन अनंती ॥ रटौं निस दिना जाप तुमरा भवानी ॥ तुमन चरन मो प्रीति हमरी लगानी ॥ करहु हरि भवानी जगत की सम्भारे ॥ हमन दुसट दोखी सभन होहिं छारे ॥ सदा सरबदा चरण तुमरे धिआऊं ॥ तुमन मिहर सिउं दुसट सगले खपाऊं ॥ यही आस पूरन करहु तुम हमारी ॥

मिटै कसट गऊअन छुटै खेद् भारी ॥ फतह सतिगुरू की जगत सिउं बुलाऊं ॥ सभन कउ सबद् वाहि वाहि दि्ड़ाऊं ॥ करहु खालसा पंथ तीसर प्रवेसा ॥ जगहि सिंघ जोधे धरहि नील भेसा ॥ सकल राछसन कउ पकड़ वै खपावै ॥ सभै जगत सिउ धुनि फ़तहि की बुलावै ॥ तुही सारदा बेद् गायण सुरसती ॥ तुही देवि दुरगे निरम्जन परसती ॥ यही बेनती खास हमरी सुणीजै ॥ असुर मार कर रच्छ गऊअन करीजै ॥ तुही सिधि नवनिधि कउ भरणहारी ॥ तुही अंन दायण सकल जग भिखारी ॥ तुही रिखि बसिसटे तुही है दुबासा ॥ तुही जमदगनि सम्त गोतम प्रकासा ॥ तुही कालके असुर सम्घार करणी ॥ तुही

सेवकन पर सदा मिहर धरणी ॥ कहाँ लौ बखानों तुमन गति अपारे ॥ तुही जालपा अलख रूपण मुरारे ॥ तुही हरि हरे हरि हरे हरि भवानी ॥ निरम्जन पुरख पर भइ तूर्म कुरबानी ॥ यही देहि बर मोहि सतिगुर धिआऊं ॥ असुर जीत कर धरम नउबत बजाऊं ॥ मिटहि सभ जग सिउं तुरकन दुंद सोरा ॥ बचहि सम्त सेवक खपहि दुसट चोरा ॥ सभै स्रिसटि परजा सुखी होइ बिराजै ॥ मिटै दूख सम्ताप आनंद गाजै ॥ न छाडउं कहूम्‍ दुसट असुरन निसानी ॥ चलै सभ जगत महि धरम की कहानी ॥ छत्र धारीअन कउ करहु बेग नासा ॥ अपन दास का देखीअहु तब तमासा ॥

दोहरा ॥

तब खड़ग तमासा देखीऐ हरि दुरगे अबिनास ॥ पकड़ तेग दुसटन हतूम्‍ करहु धरम प्रकास ॥१॥ हरि भगत भगौती तिसै की जो रण धीर धरेइ ॥ तिहि अंग सम्‍ग तुम लाग रहु जो पाछै पग न धरेइ ॥२॥

चौपई ॥

खट छम्‍द भगवती महाँ पुनीते ॥ तिस पठवत उपजत परतीते ॥ इउं निसि बासुर दुरगे गुन गायं ॥ तहि सहिजे अटल अमर पद पायं ॥ यहि खसटक छम्‍द सम्‍पूरन भयो ॥ तिस उचरत सगला भ्रम गयो ॥ हरि अलख इसरी भई ि क्रिपालम्‍ ॥ तिन दास आपना कीओ निहालम्‍ ॥ दुख रोग सोग भै मिटे कलेसा ॥ बहु सुख उपजे अनद

प्रवेसा ॥ इत बिधि दुरगे किरपा धारी ॥ तिह अपन दास कउ लीआ उबारी ॥

इति स्री गोबिंद सिंघ विरचिते
स्री भगवती छम्द खशटकम समापतं
मसतु सुभ मसतु ॥

बारह माहा माँझ महला ५ घरु ४

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुम्ट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कम्तु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तम्बोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कम्त विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेन्नतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी सम्गि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥ चेति गोविम्दु अराधीऐ होवै

अन्नदु घणा ॥ सम्त जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिन्ना भागु मणा ॥ हरि दरसन कम्उ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥ वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न सम्गि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धम्धै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम

बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ द्यु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइि ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइि ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइि ॥ वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा सम्तु भेटै हरि सोइि ॥ ३॥ हरि जेठि जुड़म्दा लोड़ीअै जिसु अगै सभि निवम्नि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बम्नि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही सम्नि ॥ रम्ग सभे नाराइिणै जेते मनि भावम्नि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करम्नि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धम्नि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवम्नि ॥ साधू सम्गु परापते नानक रम्ग माणम्नि ॥ हरि जेठु

रम्गीला तिसु धणी जिस कै भागु मथम्नि ॥४॥ आसाड़ु तपम्दा तिसु लगै हरि नाहु न जिन्ना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस सम्दी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइि खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइि पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुह्मदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥ सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रम्गि इिको नामु अधारु ॥

बिखिआ रम्ग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अम्मटत बूम्द सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ सम्गि मउलिआ सम्म्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ ह्मउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥ भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥

हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा सम्दड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइि नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥ असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइि ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइि ॥ सम्त सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइि ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइि ॥ जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से तटपति रहे आघाइि ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइि ॥ जो हरि कम्ति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइि ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइि ॥ असू सुखी

वसम्दीआ जिना मड़िआ हरि राड़ि ॥८॥ कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइिआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि सम्जोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै ताँ उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बम्दी मोच ॥ कतिक होवै साधसम्गु बिनसहि सभे सोच ॥९॥ मम्घिरि माहि सोह्मदीआ हरि पिर सम्गि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ सम्गि

साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कम्ठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मम्घिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ पोखि तुखारु न विआपई कम्ठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिम्द दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविम्द गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि

बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥ माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचे से काँढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु

॥१२॥ फलगुणि अन्नद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइि ॥ सम्त सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइि ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइि ॥ इिछ पुनी वडभागणी वरु पाइिआ हरि राइि ॥ मिलि सहीआ मम्गलु गावही गीत गोविम्द अलाइि ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइि ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइि ॥ सम्सार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइि ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइि ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइि ॥१३॥ जिनि जिनि नामु धिआइिआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे

॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अम्दरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मम्गै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥

शसत्र नाममाला

ੴ वाहिगुरू जी की फतह ॥

अथ स्री ससत्र नाम माला पुराण

लिखयते स्री भगउती जी सहाइ ॥

पातसाही १०

दोहरा ॥

साँग सरोही सैफ असि तीर तुपक तरवार ॥ सत्रांतक कवचाँतकर करीऐ रच्छ हमार ॥१॥

असि क्रिपान धारा धरी सैफ सूल जमदाढ ॥ कवचाँतक सत्राँतकर तेग तीर धरबाढ ॥२॥

असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अरु तीर ॥ सैफ सरोही सैहथी यहै हमारै पीर ॥३॥

तीर तुही सैथी तुही तुही तबर तरवार ॥ नाम तिहारो जो जपै भए सिंधु भव

पार ॥४॥

काल तुही काली तुही तुही तेग अरु तीर ॥ तुही निसानी जीत की आजु तुही जगबीर ॥५॥

तुही सूल सैथी तबर तूं निखंग अरु बान ॥ तुही कटारी सेल सभ तुमही करद क्रिपान ॥६॥

ससत्र असत्र तुमही सिपर तुमही कवच निखंग ॥ कवचाँतक तुम ही बने तुम बिआपक सरबंग ॥७॥

स्री तूं सभ कारन तुही तूं बिद्या को सार ॥ तुम सभ को उपराजही तुम ही लेहु उबार ॥८॥

तुम ही दिन रजनी तुही तुम ही जीअन उपाइ ॥ कउतक हेरन के नमित तिन मो बाद बढाइ ॥९॥

असि क्रिपान खंडो खड़ग सैफ तेग

तरवार ॥ रच्छ करो हमरी सदा कवचाँतक करवार ॥१०॥

तुही कटारी दाढ़ जम तूम्ह बिछूओ अरु बान ॥ तो पति पद जे लीजीऐ रच्छ दास मुहि जान ॥११॥

बाँक बज्ज्र बिछूओ तुही तुही तबर तरवार ॥ तुही कटारी सैहथी करीऐ रच्छ हमारि ॥१२॥

तुम ही गुरज तुम ही गदा तुम ही तीर तुफंग ॥ दास जान मोरी सदा रच्छ करो सरबंग ॥१३॥

छुरी कलम रिपु करद भन खंजर बुगदा नाइ ॥ अरध रिजक सभ जगत को मुहि तुम लेहु बचाइ ॥१४॥

प्रिथम उपावहु जगत तुम तुम ही पन्थ बनाइ ॥ आप तुम ही झगरा करो तुम ही करो सहाइ ॥१५॥

मच्छ कच्छ बाराह तुम तुम बावन अवतार ॥ नार सिंघ बऊधा तुही तुही जगत को सार ॥१६॥

तुही राम स्री क्रिशन तुम तुही बिसन को रूप ॥ तुही प्रजा सभ जगत की तुही आप ही भूप ॥१७॥

तुही बिप्र छत्री तुही तुही रम्क अरु राउ ॥ साम दाम अरु डंड तूम्‍ तुम ही भेद् उपाउ ॥१८॥

सीस तुही काया तुही तै ं प्रानी के प्रान ॥ तै ं बिद्या जग बकत्र हुइ करे बेद् बखयान ॥१६॥

बिसिख बान धनुखाग्र भन सर कैबर जिह नाम ॥ तीर खतंग ततारचो सदा करो मम काम ॥२०॥

तैणीरालै सत्रु अरि म्रिगअंतक ससि बान ॥ तुम बैरिन प्रथमै हनौ बहुरो

बजै क्रिपान ॥२१॥
तुम पाटस पासी परस परम सिंधु की खान ॥ ते जग के राजा भए दीअ तव जिह बरदान ॥२२॥
सीस सत्रु अरियारि असि खंडो खड़ग क्रिपान ॥ सत्रु सुरेसर तुम कियो भगत आपुनो जान ॥२३॥
जमधर जमदाड़ा जबर जोधाँतक जिह नाइ ॥ लूट कूट लीजत तिनै जे बिन बाँधे जाइ ॥२४॥
बाँक बज्ज्र बिछूओ बिसिखि बिरह बान सभ रूप ॥ जिन को तुम किरपा करी भए जगत के भूप ॥२५॥
ससत्रेसर समराँतकर सिङपरा अरु समसेर ॥ मुकत जाल जम के भए जिनै कहयो इक बेर ॥२६॥
सैफ सरोही सत्रु अरि सारम्गारि जिह

नाम ॥ सदा हमारे चित बसो सदा करो मम काम ॥२७॥

इति स्री नाम माला पुराणे स्री
भगउती
उसतति प्रिथम धिआइ समापत
मसतु सुभ मसतु ॥१॥

स्वैये कलिकी अवतार

सवैया छम्द पाप सम्बूह बिनासन कउ कलिकी अवतार कहावहगे ॥ तुरकच्छि तुरम्ग सपच्छ बडो कर काढि क्रिपाण कपावहगे ॥ निकसे जिम केहरि परबत ते तस सोभ दिवालय पावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१॥

रूप अनूप सरूप महा लखि देव अदेव लजावहगे ॥ अरि मार सुधार कै टार घने बहुरौ कलि धरम चलावहगे ॥ सभ साध उबार लैहैं कर दै दुख आँच न लागन पावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥२॥

दानव मार अपार बडे रण जीति

निसान बजावहगे ॥ खल टार हजार करोर किते कलिकी कलि क्रित बढावहगे ॥ प्रगटे जित ही तित धरम दिसा लख पापन पुंज परावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥३॥

छीन महा दिज दीन सदा लखि दीन दिआल रिसावहगे ॥ खग काढ अभंग निसम्ग हठी रण रम्ग तुरम्ग नचावहगे ॥ रिपु जीत अजीत अभीत बडे अवनी पै सबै जसु गावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे॥४॥

सेस सुरेस महेस गनेस निसेस भले जसु गावहगे ॥ गण भूत परेत पिसाच परी जय सद्द निनद्द सुनावहगे ॥ नर नारद तुंबर किंनर जच्छ सु बीन

प्रबीन बजावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥५॥

ताल म्रिदंग मुचम्ग उपंग सुरम्ग से नाद सुनावहगे ॥ डफ बार तरम्ग रबाब तुरी रणि सम्ख असम्ख बजावहगे ॥ गण दुंदभि ढोलन घोर घनी सुनि सत्रु सभै मुरछावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥६॥

तीर तुफंग कमान सुरम्ग दुरम्ग निखंग सुहावहगे ॥ बरछी अरु बैरख बाण धुजा पट बात लगे फहरावहगे ॥ गण जच्छ भुजम्ग सु किंनर सिद्ध प्रसिद्ध सबै जसु गावहगे ॥ भल भाग भया इह स्न सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥७॥

कउच क्रिपान कटारि कमान सुरम्ग निखंग छकावहगे ॥ बरछी अरु ढाल गदा परसो कर सूल त्रिसूल भ्रमावहगे ॥ अति क्रुद्धत ह्वै रण मूरधन मो सर ओघ प्रओघ चलावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥८॥

तेज प्रचम्ड अखंड महाँ छबि दुजन देखि परावहगे ॥ जिम पउन प्रचम्ड बहै पतूआ सब आपन ही उड जावहगे ॥ बढि है जित ही तित धरम दिसा कहूं पाप न ढूढत पावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥९॥

छूटत बान कमाननि के रण छाडि भटवा भहरावहगे ॥ गण बीर बिताल कराल प्रभा रण मूरधन मधि सुहावहगे

॥ गण सिध प्रसिध सम्रिधि सनै करि उचाइ कै क्रित सुनावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१०॥

रूप अनूप सरूप महाँ अंग देखि अनंग लजावहगे ॥ भव भूत भविख भवान सदा सभ ठउर सभै ठहरावहगे ॥ भव भार अपार निवारन कौ कलिकी अवतार कहावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥११॥

भूमि को भार उतार बडे बड आछ बडी छब पावहगे ॥ खल टार जुझार बरिआर हठी घन घोखन जिउ घहरावहगे ॥ कल नारद भूत पिसाच परी जै पत्र धरत्र सुनावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि

मंदिर आवहगे ॥१२॥
झार क्रिपान जुझार बडे रण मध महा छबि पावहगे ॥ धरि लुथ पलुथ बिथार घणी घन की घट जिउ घहरावहगे ॥ चतुरानन रुद्र चराचर जे जय सद्द निनद्द सुनावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१३॥
तार प्रमान उचान धुजा लख देव अदेव त्रसावहगे ॥ कलगी गज गाह गदा बरछी गहि पाण क्रिपाण भ्रमावहगे ॥ जग पाप सम्बह बिनासन कउ कलिकी कलि ध्रम चलावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१४॥
पान क्रिपान अजानु भुजा रणि रूप

महान दिखावहगे ॥ प्रितिमान सुजान अप्रमान प्रभा लख बिओम बिवान लजावहगे ॥ गण भूत पिसाच परेत परी मिलि जीत कै गीत गवावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१५॥

बाजत डम्क अतम्क समै रण रम्ग तुरम्ग नचावहगे ॥ कसि बान कमान गदा बरछी कर सूल त्रिसूल भ्रमावहगे ॥ गण देव अदेव पिसाच परी रण देख सबै रहसावहगे ॥ भल भाग भया इह सम्भल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१६॥

सूही महला ४ ॥
हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम डटड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु डटड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ धरमु डटड़हु हरि नामु धिआवहु सिमटति नामु डटड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अन्नदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानकु लाव पहिली आरम्भु काजु रचाइआ ॥१॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि

आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अम्तरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मम्गल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइिआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ सम्त जना हरि मेलु हरि पाइिआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइिआ हरि गुण गाइिआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ सम्त जना वडभागी पाइिआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइिआ हरि पाइिआ बलि

राम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइि हरि मनि तनि मीठा लाइिआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइिआ मेरे प्रभ भाइिआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिम्दिआ फलु पाइिआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइिआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइिआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥

रामकली की वार राइि बलवम्डि तथा सतै डूमि आखी ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारम्गति दानु पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइिआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अम्मटतु पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइि जीअ दै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥ लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइि सहि काइिआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरम्जनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि

जि गुर फुरमाइिआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसम्म दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति खसम्म दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइिआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कन्न् मुरटीऐ ॥ दिलि खोटै आकी फिरनि् बमनि् भारु उचाइिनि् छटीऐ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥२॥ जिनि कीती सो मन्नणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइि है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा

करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अम्गद दी दोही फिरी सचु करतै बम्धि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइि जम्गाली ॥ दरि दरवेसु खसम्म दै नाइि सचै बाणी लाली ॥ बलवम्ड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वम्डीऐै रसु अम्मटतु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसम्म नालि जाँ घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइि जिनि गोइि उठाली ॥३॥ होरिंओ गम्ग वहाईऐै दुनिआई आखै कि किओनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ माधाणा

परबतु करि नेतट बासकु सबदि
रिड़किओनु ॥ चउदह रतन
निकालिअनु करि आवा गउणु
चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि
वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड
ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रु
सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै
सेती मिकिओनु ॥ सिखाँ पुत्राँ घोखि
कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥
जाँ सुधोसु ताँ लहणा टिकिओनु ॥४॥
फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि
खाडूरु ॥ जपु तपु सम्जमु नालि तुधु
होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा
जिउ पाणी बूरु ॥ वर्हिऐ दरगह गुरू
की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथ न
लभई तूम्‍ ओहु ठरूरु ॥ नउ निधि

नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥
निम्दा तेरी जो करे सो वम्ञै चूरु ॥
नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥
फेरि वसाइिआ फेरुआणि सतिगुरि
खाडूरु ॥५॥ सो टिका सो बैहणा सोई
दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता
परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ
करि नेही ताणु ॥ जिनि समुम्दु
विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह
रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥
घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ
पलाणु ॥ धणखु चड़ाइिओ सत दा
जस ह्मदा बाणु ॥ कलि विचि धू
अम्धारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ सतहु
खेतु जमाइिओ सतहु छावाणु ॥ नित
रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे
कुम्डाँ सुझीओसु मन महि सबदु

परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जाँ तू सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक ह्मदा छत्रभ सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥ धन्नु धन्नु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ सिखी अतै सम्गती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अम्तु न पारावारिआ ॥ जिन्ी तूम्‍ सेविआ

भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥
लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे
तुधु सपरवारिआ ॥ धन्नु सु तेरा थानु
है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू
लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥
गुरु डिठा ताँ मनु साधारिआ ॥७॥
चारे जागे चहु जुगी पम्चाइणु आपे
होआ ॥ आपीनै् आपु साजिओनु आपे
ही थम्मि् खलोआ ॥ आपे पटी कलम
आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ
उमति आवण जावणी आपे ही नवा
निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरू
सतिगुर का खिवै चम्दोआ ॥
उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी
कीअनु लोआ ॥ जिनी गुरू न सेविओ
मनमुखा पइिआ मोआ ॥ दूणी चउणी
करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे

जागे चहु जुगी पम्चाइिणु आपे होआ ॥८॥१॥

रामकली सदु ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
जगि दाता सोइि भगति वछलु तिहु लोइि जीउ ॥ गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइि जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अम्गद परम पदवी पावहे ॥ आइिआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइिआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइिआ ॥१॥
हरि भाणा गुर भाइिआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरम्जनो ॥ अम्ति चलदिआ होइि बेली जमदूत कालु निखम्जनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई

हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥२॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आन्नद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज

भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत
भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ सतिगुरू
परतखि होदै बहि राजु आपि
टिकाइआ ॥ सभि सिख बम्धप पुत
भाई रामदास पैरी पाइआ ॥४॥ अम्ते
सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु
करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो
गोपाल पम्डित सदिअहु हरि हरि
कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा
पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि
रम्गु गुर भावए ॥ पिम्डु पतलि
किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥
हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि
मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥
रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु
सचु नीसाणु जीउ ॥५॥ सतिगुरु पुरखु
जि बोलिआ गुरसिखा मम्नि लई

रजाइि जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइिआ रामदासै पैरी पाइि जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइिआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइि जीउ ॥ कहै सुम्दरु सुणहु सम्तहु सभु जगतु पैरी पाइि जीउ ॥६॥१॥

बसम्त की वार महलु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखम्तै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तटणु तटभवणु मउलिआ अम्मटत फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥ पम्जे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जम्त सभि खसम के कउणु कीमति

पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित
से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु
साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै
गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै
॥३॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ९ ॥

गुन गोबिन्द गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥ बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥ धनु दारा सम्पति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु सम्गी नही नानक साची जानि ॥५॥ पतित उधारन भै हरन हरि

अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीअै सदा बसतु तुम साथि ॥६॥ तनु धनु जिह तो कउ दीओ ताँ सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥ तनु धनु सम्पै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइि ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइि ॥९॥ जिह सिमरत गति पाईअै तिह भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥ पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥ घट घट मै हरि जू बसै सम्तन कहिओ पुकारि ॥

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥ उसतति निम्दिआ नाहि जिहि कम्चन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥ हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥ जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥

कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१६॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥ जिहबा गुन गोबिम्द भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥ निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै

नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ जैसे जल ते बुद्बुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥ प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अम्धु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फम्ध ॥२६॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अम्तरु नही नानक साची मानु ॥२९॥ मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिम्द नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि

भजन जीवन कउने काम ॥३०॥ प्रानी
रामु न चेतई मदि माइआ कै अम्धु ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि
जम फम्ध ॥३१॥ सुख मै बहु सम्गी
भए दुख मै समगि न कोइ ॥ कहु
नानक हरि भजु मना अमति सहाई
होइ ॥३२॥ जनम जनम भरमत
फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥
कहु नानक हरि भजु मना निरभै
पावहि बासु ॥३३॥ जतन बहुतु मै
करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु
॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि
लेहु भगवान ॥३४॥ बाल जुआनी अरु
बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा
सभ ही मानु ॥३५॥ करणो हुतो सु ना
कीओ परिओ लोभ कै फम्ध ॥ नानक

समिओ रमि गइिओ अब किउ रोवत अम्ध ॥३६॥ मनु माइिआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइि ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइि ॥३९॥ जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ इिन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ

नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अन्तरु नही नानक साची मानु ॥४३॥ एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥ सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुन्चर इसनानु ॥४६॥ सिरु कम्पिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥ निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक

थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥ जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥ रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ सम्सारु ॥५०॥ चिम्ता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ इहु मारगु सम्सार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥ जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जम्जाल ॥५२॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बम्धन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥ बलु होआ बम्धन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ नानक सभु किछु

तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइि ॥५४॥ सम्ग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ कहु नानक इिह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिम्दु ॥ कहु नानक इिह जगत मै किन जपिओ गुर मम्तु ॥५६॥ राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइि ॥ जिह सिमरत सम्कट मिटै दरसु तुहारो होइि ॥५७॥१॥

मुम्दावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिम्नि वसतू पईओ सतु सम्तोखु वीचारो ॥ अम्मटत नामु ठाकुर का पइिओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुम्चै तिस का होइि उधारो ॥ एह वसतु

तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम सम्सारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि

राग माला ॥

राग एक सम्गि पम्च बरम्गन ॥ सम्गि अलापहि आठउ न्नदन ॥ प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ पम्च रागनी सम्गि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुम्निआकी गावहि बम्गली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पम्चम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बम्गालम मधु माधव गावहि ॥१॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भाँति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइिन पात्र ॥१॥ दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ सम्गि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोंडकरी अरु देवगम्धारी ॥ गम्धारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी ए पाचउ

गाई ॥ माल राग कउसक सम्गि लाई ॥ मारू मसतअम्ग मेवारा ॥ प्रबलचम्ड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाए ॥ असट मालकउसक सम्गि लाए ॥१॥ पुनि आइिअउ ह्मिडोलु पम्च नारि सम्गि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइिन तार मिलावही ॥१॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसम्ती सम्दूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥ सम्गि लाई पाँचउ आरजा ॥ सुरमान्नद भासकर आए ॥ चम्द्रबिम्ब मम्गलन सुहाए ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसम्त कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥१॥ कछेली पटमम्जरी टोडी कही अलापि ॥

कामोदी अउ गूजरी सम्गि दीपक के थापि ॥१॥ कालङ्का कुम्तल अउ रामा ॥ कमलकुसम चम्पक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के जाना ॥१॥ सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पाँचउ सम्गि बरम्गन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिम्धवी अलापी ॥ सिरीराग सिउ पाँचउ थापी ॥१॥ सालू सारग सागरा अउर गोंड गम्भीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुम्ड कुम्भ हमीर ॥१॥ खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पाँचउ सम्गि बरम्गन लावहि ॥ सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पाँचउ चीनी ॥१॥

बैराधर गजधर केदारा ॥ जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि सम्कर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥१॥ खसट राग उनि गाए सम्गि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागन्न के अठारह दस बीस ॥१॥१॥

हिकायत बाहरवीं

੧ੴ वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

रज़ा बख़्श बज़्शिंदए बे शुमार ॥
रिहाइ दिहो पाक परवरदगार ॥१॥
रहीमो करीमो मकीनो मकाँ ॥ अज़ीमो फ़हीमो ज़मीनो ज़माँ ॥२॥ शुनीदम सुख़न कोह कैबर अज़ीम ॥ कि अफगाँ यके ब ूद ओ जा रहीम ॥३॥ यके बानूए बूद ओ हम चु माह ॥ कुनद दीदनश रिशत ग़रदन ज़ि शाह ॥४॥ दो अबरू चु अबरे बहाराँ कुनद ॥ ब मियगाँ चु अज़ तीर बाराँ कुनद ॥५॥ रुख़े चूं ख़लासी दिहद माह राँ ॥ बहारे गुलिसताँ दिहद शाह राँ ॥६॥ ब अबरू कमाने शुदा नाज़नीं ॥ ब चशमश ज़नद कैबरै कहर गीं ॥७॥ ब मसती दिहद हम चुनी रूइ मसत

॥ गुलिसताँ कुनद् बूम शोरीद् दसत ॥८॥ ख़शे ख़ु ु ुश जमालो कमालो हुसन ॥ ब सूरत जवानसत फ़िकरे कुहन ॥९॥ यके हसन ख़ाँ बद् ए जा फ़गाँ ू ॥ ब दानश हमी बूद् अकलश जवाँ ॥१०॥ कुनद् दोसती बा हमह यक दिगर ॥ कि लैली व मजनूं ख़िज़ल गशत सर ॥११॥ चु बा यक दिगर हम चुनी गशत मसत ॥ चु पा अज़ रकाबो इना रफ़त दसत ॥१२॥ तलब करद् ओ ख़ानए ख़िलवते ॥ मियाँ आमदश जो बदन शहवते ॥१३॥ हमीं जुफ़त खुरदंद दु से चार माह ॥ ख़बर करद् जो दुशमने निज़द शाह ॥१४॥ ब हैरत दराँमद् फ़गाने रहीम ॥ कशीदन यके तेग़ गरराँ अज़ीम ॥१५॥ चु खबरश रसीदे कि

आमद शौहर ॥ हुमाँ यार ख़ुद रा बिज़द् तेग़ सर ॥१६॥ हमहि गोशतो देग़ अंदर निहाद ॥ मसालय बिअंदाख़्त आतश बिदाद ॥१७॥ शौहर रा खुरानीद बाकी बिमाँद ॥ हमह नौकराँ रा ज़िआफ़्त कुनाद ॥१८॥ चु खुश ग़शत शौहर न दीदश चु नर ॥ ब कुशताँ कसे रा कि दादश ख़बर ॥१६॥ बिदिह साकीया सागरे सबज़ गूं ॥ कि मारा बकारसत जम्ग अंदरूं ॥२०॥ लबा लब बकुन दम बदम नोश कुन ॥ ग़मे हर दु आलम फ़रामोश कुन ॥२१॥१२॥

अरदास

१ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

पातशाही १२ ॥

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआइ ॥ फिरि अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होइ सहाई ॥ अरजुन हरि गोबिंद नू सिमरौ स्री हरि राइ ॥ स्री हरि क्रिसन धिआईऐ जिसु डिठे सभ दुखु जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीऐ घरि नउनिधि आवै धाइ सभ थाईं होइ सहाइ ॥ दसम पातशाह स्री गुरू गोबिंद सिंघ जी सभ थाईं होइ सहाइ ॥ स्री सतिगुरू बालक सिंघ जी सिमरीऐ जिन मारग दीआ बताइ ॥ अकाल पुरख अंतरजामी स्री सतिगुरू राम सिंघ जी जिन जम ते लीआ

छडाइ ॥ जोति का जामा स्री सतिगुरू हरी सिंघ जी सिमरीऐ जिन टुट्टी लई मिलाइ ॥ अटुल प्रतापी स्री सतिगुरू प्रताप सिंघ जी सिमरीऐ जिनाम्‍ कलिजुग विच सुच सोध नाम बाणी दा प्रवाह दि्ता चलाइ ॥ सरब कला समरथ स्री सतिगुरू जगजीत सिंघ जी सिमरीऐ जनम मरन दुख जाए ॥ स्री सतिगुरू जी सभ थाईं होहु सहाइ ॥ गुरू जी के चार साहिबज़ादे पंज पिआरे चाली मुकते बेअन्त शहीदाँ दी कमाई वल धिआन धर के आप जी दा पवि्तर नाम चित आवै ॥ सतिगुरू जी पातशाह ! असीं सदा भुलणहार हाँ, आप सदा बखशिंद हो, दरों घरों सिक्खी सिदक बखशो, बेमुख हो के ना मरीइे ॥ धरती ते धरम वरताओ

महाँ मलेछ दा नास करो, सम्त खालसे दा प्रकाश करो ॥ गऊ गरीब दे कशट नूं दूर करो, कुल स्रिशटी आप जी दा नाम जपे कोई दुखीआ रहे ना ॥ जो तै गुरू रूप धार के हुकमु दित्ता है ग्रंथ साहिब मै, सो तू आपणा हुकम सदा ई मनाईं ॥ स्री सतिगुरू राम सिंघ सच्चे पातशाह जी आप जी दे चरनाँ विच प्रारथना है साडा धरम बणिआ रहे। दीनाबंधू सतिगुरू सच्चे पातशाह आप जी दी क्रिपा नाल आप दीआँ पिआरीआँ सम्गताँ ने इकत्र हो के पवित्र नाम दा सिमरन कीता है आप जी दे दरशन नमित्त, दर परवान होवे ॥ दरशनाँ दी दात बखशणी--* न विसरीं न विसारीं, रक्ख लै बखश लै

देह करके देहु दीदार स्री सतिगुरू राम सिंघ जी नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला ॥ जो बोले सो निहाल सति स्री अकाल ॥

* अरदास जिस मनोरथ वासते होवे उस बारे शबद इथे आखे जाण ।